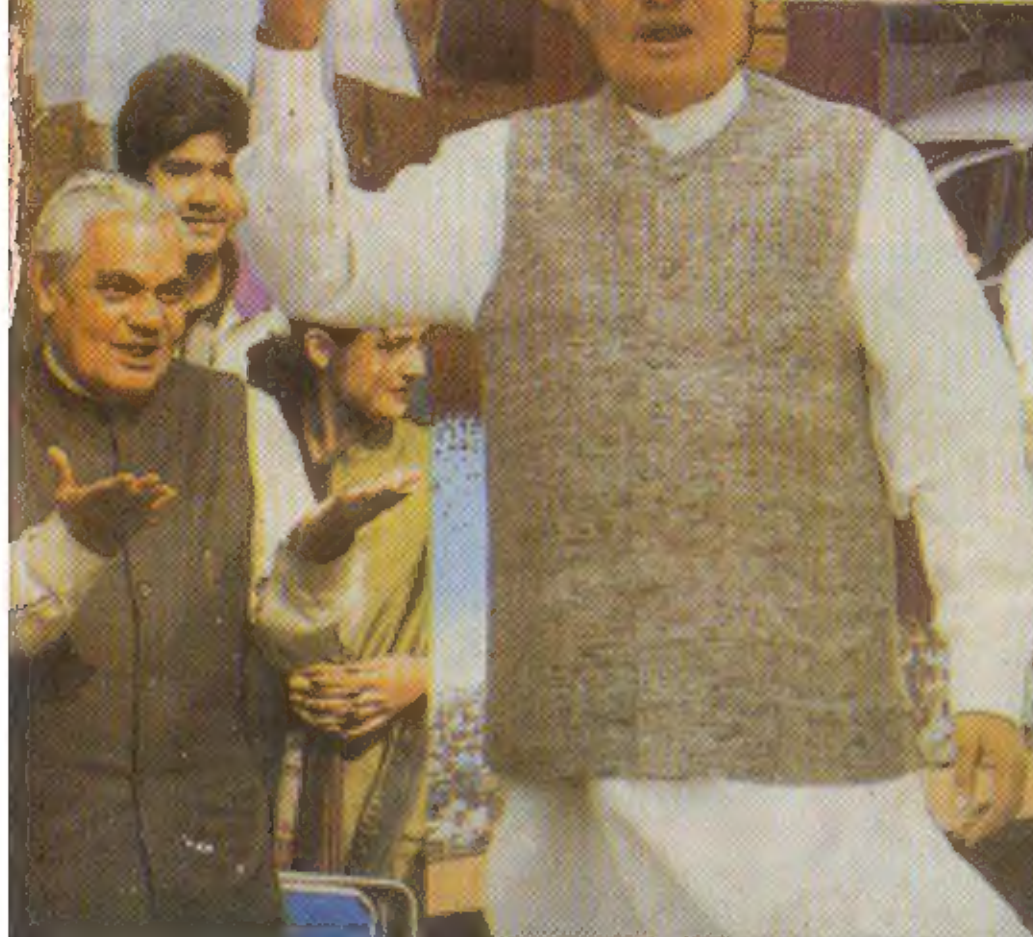
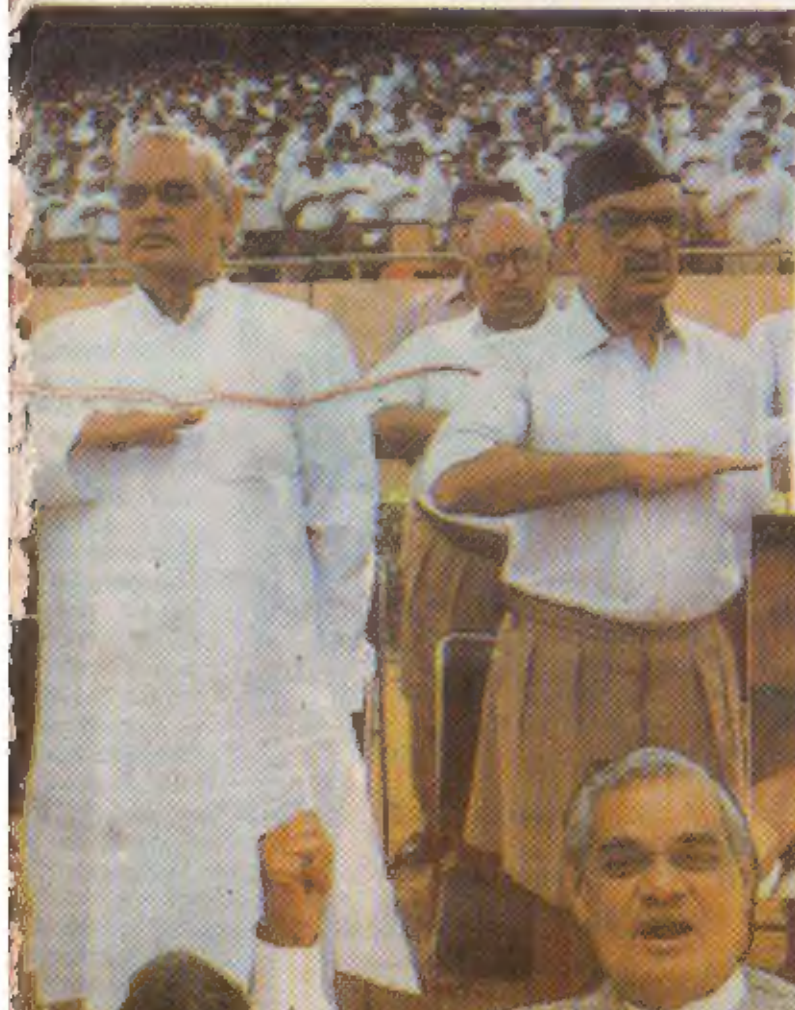


आत्म जी

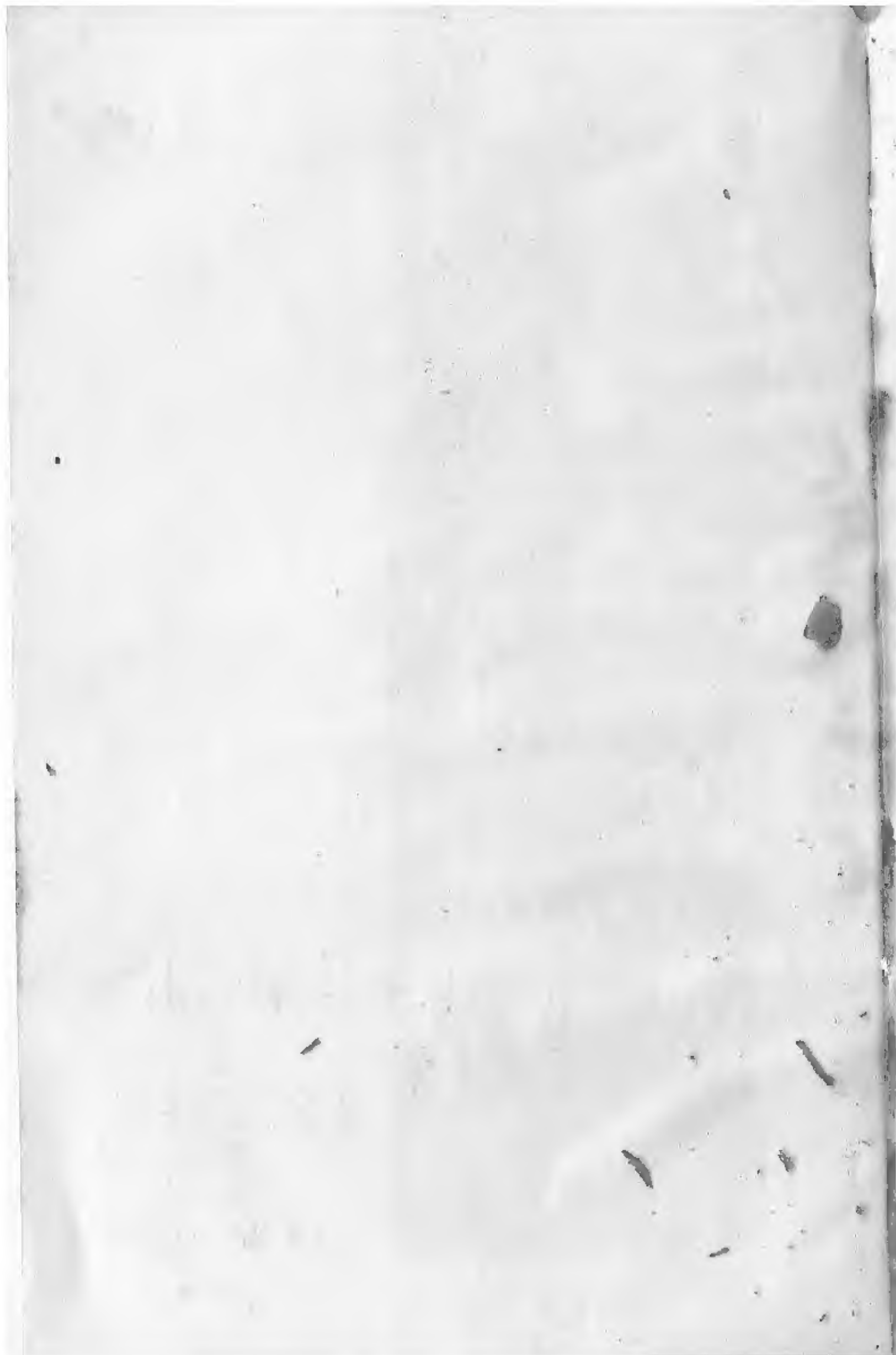


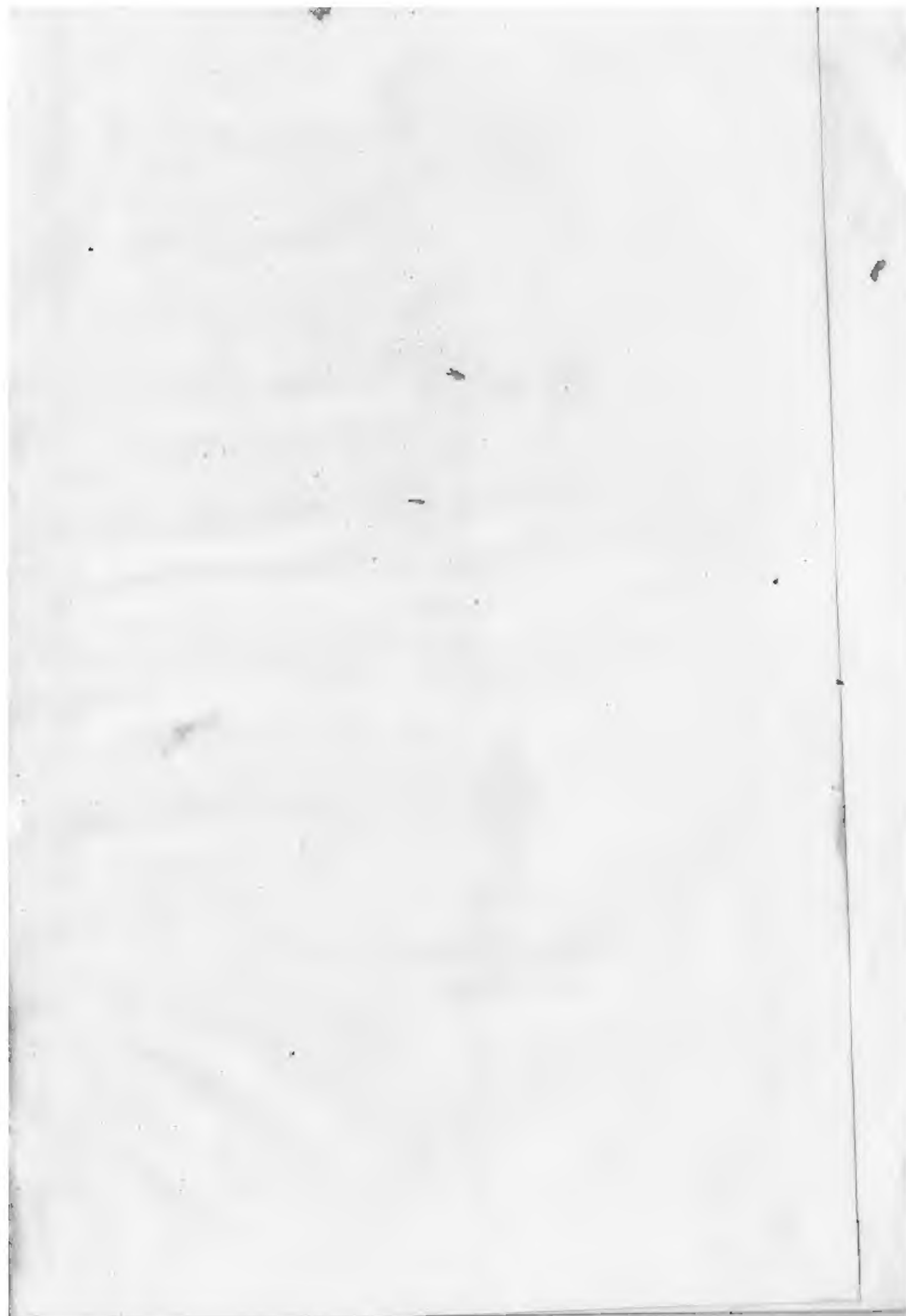


With Best Compliments
from—

Sunil K. Sinha
ghy-21

1st May 2007







আমাৰ
অটল জী



ৰাজলক্ষী প্ৰকাশন
গুৱাহাটী : অসম

"Amar Atalji", a life sketch of Shri Atal Bihari Bajpayee written in Assamese by Shri Sunil Kumar Sinha, Guwahati and Published by Mrs. Smritimoyee Sinha, c/o Adworld, Bamunimaidan, Guwahati- 781 021

Printed at : saraighat offset press, Industrial Area, Guwahati-21

Price : Rs. 55.00 (Rupees Fifty Five only)

© গ্ৰন্থকাৰ

প্ৰথম প্ৰকাশ :

২৫ ডিচেম্বৰ, ১৯৯৯ চন

আৱৰণ :

সুনীল কুমাৰ সিনহা

মূল্য :

থলে ৫৫.০০ টকা

মুদ্ৰক :

শৰাইঘাট অফসেট প্ৰেছ, গুৱাহাটী



सत्यमेव जयते

Ashok Saikia
Joint Secretary to
P.M.
Tel. : 3016996

प्रधान मंत्री कार्यालय
नई दिल्ली-110 011
PRIME MINISTER'S OFFICE
NEW DELHI- 110011

February 3, 2000

Dear Shri Sinha,

The Prime Minister has asked me to convey his thanks to you for presenting him with your book "Amar Atalji".

2. A copy of the book autographed by him is enclosed.

With regards,

Yours sincerely,

Shri Sunil Kumar Sinha,
Adworld,
Bamunimaldan,
Guwahati- 781 021
Assam

श्री सुनील कुमार सिन्हा

को

शुभ कामना-सहित

आर.ल.वि.स. काजपेथी

28/1





ভাৰতৰ বৰ্তমান প্ৰধানমন্ত্ৰী শ্ৰীঅটল বিহাৰী বাজপেয়ী কেবল এজন বিখ্যাত ৰাজনীতিবিদেই নহয়, তেওঁ এগৰাকী উন্নত মানৰ কবিও তেওঁৰ জীৱন, কৃতি আৰু সাধনা ভাৰতবাসীৰ বাবে পৰম গৌৰৱৰ বিষয়। অসমীয়া ভাষাত তেওঁৰ জীৱনকাহিনী বিস্তৃতভাৱে এতিয়ালৈকে প্ৰকাশ পোৱা নাছিল।।

শ্ৰীসুনীল কুমাৰ সিনহাই শ্ৰীবাজপেয়ীৰ এখন জীৱনী লিখি আমাক আনন্দিত কৰিছে। তেওঁ এগৰাকী সাৰ্থক বাণিজ্যিক শিল্পী। শিল্পীৰ দৃষ্টিৰে তেওঁ ভাৰতৰ প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ জীৱনক লক্ষ্য কৰিছে।।

এই কিতাপখন সহৃদয় লোকে সাদৰেৰে গ্ৰহণ কৰিলে লিখক কৃতাত্ম হ'ব

চন্দ্ৰদুৰ্জয় মহন্ত

গুৱাহাটী

২৮.১২.৯৯

লেখকৰ দু-আধাৰ

জনপ্ৰিয় ৰাজনৈতা, কবি শ্ৰী অটল বিহাৰী বাজপেয়ী ক ভালদৰে জানিবৰ বাবে মই সদায় আগ্ৰহী। বিভিন্ন পত্ৰ পত্ৰিকা, কিতাপ আদিত শ্ৰী বাজপেয়ীৰ ব্যক্তিগত জীৱনৰ নানান বিষয়ে যি চমু গুণান আহৰণ কৰিব পাৰিলো সেই যিনিকেই সৰ্ব সম্ভাৱণৰ জ্ঞা তাৰ্থে প্ৰকাশ কৰাৰ মানসেৰে এয়া মোৰ ক্ষুদ্ৰ প্ৰচেষ্টা। বাণিজ্যিক শিল্পী হিচাপে কাম কৰিলেও কিতাপৰ প্ৰতি মোৰ দুৰ্বলতা সদায়। কিতাপ পঢ়াৰ উপৰিও নিজে কিতাপ এখন লেখি প্ৰকাশ কৰাৰ ইচ্ছা মোৰ বহুদিনৰ। কিন্তু কি ধৰণৰ কিতাপ লেখিম ঠিক কৰিব পৰা নাছিলোঁ।

মোৰ অনুভৱ, ভাল কিতাপ এখন উলিয়াওঁতে অধ্যৱসায় আৰু ধৈৰ্য্যৰ বিশেষ প্ৰয়োজন। তদুপৰি সুনাম থকা এজন খ্যাতিমন্ত মনুহৰ জীৱনী লিখিবলৈ ওলালে, সেয়া মোৰ বাবে মাথো এক দুসোহস। কিন্তু বিভিন্ন বন্ধু বান্ধবৰ প্ৰেৰণা আৰু পৰামৰ্শই মোক বাকৈ উৎসাহিত কৰিলে।

লক্ষ্ণৌৰ প্ৰখ্যাত লেখক শ্ৰীচন্দ্ৰিকা প্ৰসাদ শৰ্মাৰ কিতাপ 'কবি ৰাজনৈতা অটল বিহাৰী বাজপেয়ী' কিতাপখনে মোক বহুত সহায় কৰিলে। তেখেতৰ সেই কিতাপৰ সহায় লৈ মই লেখাত আগবাঢ়িলোঁ। তদুপৰি তেজপুৰ, অসমৰ মাননীয় শ্ৰীনৰেন্দ্ৰদেৱ শাস্ত্ৰীৰ অনুজ্ঞা ক্ৰমে তেখেতৰ অনুদিত অটলজীৰ 'মোৰ একাৰমটি কবিতা' কিতাপৰ পৰাও কিছু অংশ সন্নিৱিষ্ট কৰিলোঁ।

অসম সাহিত্য সভাৰ বৰ্তমান সভাপতি খ্যাতিনামা লেখক শ্ৰীযুত চন্দ্ৰপ্ৰকাশ শইকীয়া দেৱে বহু ব্যস্ততাৰ মাজতেও পাতনিখন লিখি দি কিতাপখনৰ শ্ৰীৰুদ্ধি কৰাৰ লগতে মোক উৎসাহিত কৰিলে। আৰু লেখক তথা অধ্যাপক ড° ভৃগুমোহন গোস্বামী দেৱৰ সহযোগ আৱিহানে মোৰ বাবে কামটো সম্ভৱ নহলহেঁতেন। তেখেত সকলক মোৰ অন্তৰিক শ্ৰদ্ধা আৰু কৃতজ্ঞতা জনাইছো। লগতে শৰাইঘাট অফসেট প্ৰেছৰ সত্ত্বাধিকাৰী মিত্ৰ শ্ৰীমদেৱ শৰ্মাৰ প্ৰেৰণা আৰু সহযোগত কিতাপখন ওলাবলৈ সম্ভৱ হল।

নৱীন লেখক হিচাপে কিবা ভুল আশ্ৰিত থাকিলে পাঠকসৰে নিজগুনে ক্ষমা কৰে যেন আৰু আঙুলিয়াই দিলে নথি কৃতগৰ্হ হ'ম। মোৰ উদ্দেশ্য অটলজীক ব্যক্তি হিচাপে জনাব বাবেহে কোনো ৰাজনৈতিক প্ৰচাৰৰ বাবে নহয়।

শেষত সমূহ ৰাইজৰ সমাদৰ পোৱাৰ বিন্দু আশাৰে

সুনীল কুমাৰ সিনহা

গুৱাহাটী

২৫/১২/৯৯ ইং

উত্তৰ প্ৰদেশৰ আগ্ৰা জিলাৰ 'তহসিল এটাৰ নাম ব'হ এই তহসিলৰ যমুনা নদীৰ পাৰত অৱস্থিত বটেশ্বৰ গাঁও ইয়াতে এটা প্ৰাচীন মহাদেৱৰ মন্দিৰ আছে। মন্দিৰৰ নামটো হ'ল বটেশ্বৰ মহাদেৱ মন্দিৰ এই মন্দিৰৰ প্ৰাচীনতা আৰু লোকমান্যতাৰ বাবে শ্ৰী শ্ৰী বছৰৰ পৰা ভক্তৰ শ্ৰদ্ধা আৰু আস্থাৰ কেন্দ্ৰ হৈ আছে।

যি বিলাক পুৰণি ৰাজমহল আছে প্ৰায় বিলাক যমুনা নদীৰ পাৰতেই আজিও মহল বিলাকৰ অস্তিত্ব বৰ্তমান।

এই বটেশ্বৰ গাঁওখনেই অটলজীৰ পূৰ্বপুৰুষৰ বাসস্থান। ল'ৰা কালত অটলজী ইয়ালৈ অহা যোৱা কৰিছিল। এই ঠাইতেই প্ৰথমবাৰৰ বাবে ১৯৪২ চনত 'স্বতন্ত্ৰতা সংগ্ৰাম'ত যোগদানৰ বাবে কিশোৰ অটলক গ্ৰেপ্তাৰ কৰা হৈছিল। ন'বালক আছিল বাবে আগ্ৰা বচ্চা বেৰেকত চৌবিশ দিন বন্দী কৰি থৈ এৰি দিছিল।

অটলজীৰ ককাদেউতাক পণ্ডিত শ্যামলাল ৰাজপেয়ী এগৰাকী দূৰদৃষ্টি সম্পন্ন ব্যক্তি আছিল। তেখেতৰ পুত্ৰক কৃষ্ণ বিহাৰীক অস্থায়ী সংস্থানৰ বাবে গোৱালিয়ৰত গৈ থিতাপি ল'বৰ বাবে উৎসাহ দিছিল কিয়নো বটেশ্বৰত জীৱিক উপাৰ্জনৰ তেনে কোনো ভাল প্ৰতিষ্ঠান নাছিল। গত ভাল চাকৰি পোৱাৰ সুযোগ নাছিল। আনহাতে ভবিষ্যত বংশধৰ সকলক উচ্চ শিক্ষা দিবলৈ তাত সুযোগ নাছিল। সেইবাবে দেউতাক জীয়াই থকা কালতেই পণ্ডিত কৃষ্ণ বিহাৰী ৰাজপেয়ীয়ে গোৱালিয়ৰত গৈ থিতাপি লৈছিল।

গোৱালিয়ৰৰ 'সিন্ধে কী ছাওনী'ৰ কমলসিংহ ৰাণৰ ওচৰত পণ্ডিত কৃষ্ণ বিহাৰী ৰাজপেয়ীৰ নিজা আবাস অটলজীৰ দেউতাক কৃষ্ণ বিহাৰী ৰাজপেয়ী গোৱালিয়ৰৰ গোৱালী বিদ্যালয়ৰ যথাক্ৰমে অধ্যাপক, প্ৰধান অধ্যাপকৰ পৰা গৈ অধ্যক্ষ হৈছিল। 'পছত গৈ জিলা বিদ্যালয়ৰ নিৰীক্ষকৰ সম্মানিত পদত উন্নীত হৈছিল।

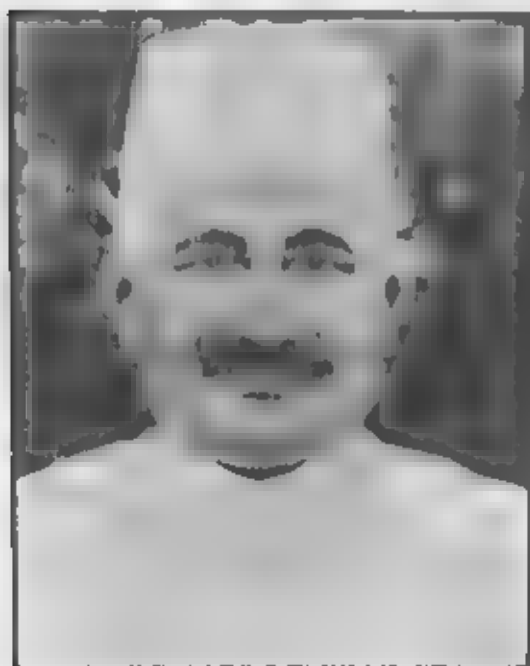
পণ্ডিত কৃষ্ণ বিহাৰীয়ে যেতিয়া অধ্যাপনা আৰম্ভ কৰিছিল, তেতিয়া অকল হাইস্কুল পাঠ আছিল। 'কিন্তু তেখেতৰ হিন্দী জ্ঞান ইমান বেছি আছিল যে হাইস্কুলৰ বিদ্যাৰ্থীক হিন্দী পাঠ পঢ়াবলৈ সমৰ্থ হৈছিল। এবাৰ জিলা বিদ্যালয় নিৰীক্ষক কাৰ্যালয়ৰ পৰা আপত্তি অহাত তেখেতে প্ৰাইভেট কৰি ইণ্টাৰ, বি এ আৰু হিন্দীত এম এ পৰীক্ষা দি কৃতকাৰ্য লাভ কৰিলে। তেখেত সংস্কৃত, হিন্দী আৰু ইংৰাজী, এই তিনিটা ভাষাৰ ভাল বক্তা আছিল। সংস্কৃতৰ অনেক শ্লোক আৰু তিন্দী কবী সকলৰ অনেক শ্লোক তেওঁৰ কণ্ঠস্থ আছিল। কবি সন্মিলন বিলাকত তেওঁক সম্মান সহকাৰে আমন্ত্ৰিত কৰা হৈছিল। তেখেতৰ বাঁচত 'ঈশ্ব পাৰ্থনা' গোৱালিয়ৰ ৰাজাৰ স্কুল বিলাকত নিতৌ পঢ়োৱা হৈছিল।

অটলজীৰ মাতৃ কৃষ্ণা দেৱী দুদু ভাষী আৰু কোমল স্বভাৱৰ এগৰাকী নাৰী আছিল।

ভালদরে বুজাইছিল।

(2)

চাকৰি কৰিব পাৰিব।

[illegible]

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84



[Illegible handwritten notes]

ডাঙৰ তিনিজন ককায়েক অৰথ বিহাৰী, সদা বিহাৰী আৰু প্ৰেম বিহাৰী সকলোৰে ইচ্ছা মৰমৰ সৰু ভাই অটলক কোলাত লৈ খুৱাবলৈ। সেইবাবে মাকে সকলোকে সময় বান্ধি দিছিল। স্নেহময়ী মাক ইচ্ছা আছিল তেওঁৰ লৰা তেখেতৰ নাম উজ্জ্বল কৰিব। মাক অভিলাষ পূৰণ হল তেওঁৰ লৰা ভাৰতৰ প্ৰধানমন্ত্ৰী হল। যিদিনা তেখেতে ভাৰতৰ প্ৰধানমন্ত্ৰী হল স্বৰ্গবাসী ম' তাত থাকি নিশ্চয় পুত্ৰৰ গৌৰৱ অনুভৱ কৰিছিল।

বালকৰ নাম ৰখা হৈছিল অটল বিহাৰী। 'অটল' যাক টলাব নোৱাৰি, 'বিহাৰী' মানে বিচৰণ কৰে। সেইবাবে নিঃসন্দেহে ৰাজনীতি ক্ষেত্ৰত তেওঁ অটল আৰু সাহিত্য ক্ষেত্ৰত তেওঁ বিচৰণ কৰি থাকে। নিজৰ নামৰ দুটা শব্দৰ বাবে তেওঁ আজি সৰ্ব্বোচ্চ ৰাজনেতা আৰু ভাল কৰি।

চাঁওতে চাঁওতে বিদ্যাৰম্ভৰ দিন আহি পালে। উপস্থিত গুৰুয়ে 'ওঁ' লিখি বালক অটলক কলে ওৰ ওপৰত খড়ি ফুৰাবলৈ। নিৰ্ভয়ে বালক অটলে এবাৰৰ ঠ'হত পাঁচবাৰ খড়ি ফুৰায় দিলে। বালকৰ আত্মবিশ্বাস দেখি গুৰুৱে দেউতাকক কলে- ৰাজপয়ী জী আপোনাৰ এইটো লৰা বিদ্যাৰ দেৱী সৰস্বতীৰ উপাসক হ'ব। সেই মূহুৰ্ত্তত পণ্ডিত কৃষ্ণবিহাৰী আনন্দত বিভোৰ হৈ উঠিছিল। তেখেতে সকলো লৰা-ছোৱালীৰ মনত ভাল অনুশাসনৰ ভবনা উৎপন্ন কৰিব বিছাৰিছিল, আৰু এই ক্ষেত্ৰত তেখেতে পূৰ্ণ সফলতা লাভ কৰিবলৈ সক্ষম হৈছিল।

বালক অটলে গোৱালী বিদ্যালয়ৰ পৰা মিডিল পৰীক্ষা পাচ কৰিছিল। তাৰ পিছত তেওঁক ভিক্টোৰিয়া কলিজিয়েট হাইস্কুলত (বৰ্তমানৰ হৰিদৰ্শন উচ্চতৰ মাধ্যমিক বিদ্যালয়) ভৰ্ত্তি কৰি দিয়া হৈছিল। তাৰ পৰা ইণ্টাৰ পৰীক্ষাত সুখ্যাতিৰে উত্তীৰ্ণ হোৱাৰ পাচত ভিক্টোৰিয়া কলেজ গোৱালিয়ৰৰ পৰা (বৰ্তমানৰ ৰাণী লক্ষ্মীবাই মহাবিদ্যালয়) উচ্চ শ্ৰেণীত হিন্দী সাহিত্য, সংস্কৃত সাহিত্য, ৰাজনীতি শাস্ত্ৰ আৰু সামান্য ইংৰাজী বিষয়লৈ বি. এ. পৰীক্ষাত সৰ্ব্বাধিক নম্বৰ পাই উত্তীৰ্ণ হৈছিল।

গোৱালিয়ৰৰ সিন্ধু কী ছাত্ৰনীত তেওঁৰ বালসখা, সহপাঠী আৰু সংঘমিত শ্ৰী বাবা চাহাব ভা. ল. খানবালকৰ আছিল। অটলজীৰ বিষয়ে তেওঁ কয় অটলজী মোৰ সৰু কালৰ মিত্ৰ। আমি দুজনে একেলগে অধ্যয়ন কৰিছিলোঁ। অটলজী কলা বিভাগত আৰু মই বিজ্ঞান বিভাগত।

১৯৩৯ চনৰ পৰা মই অটলক জানো, ৰাষ্ট্ৰীয় স্বয়ং সেৱক সংঘত যোৱাৰ আৰম্ভণি অটল আৰু মই আৰ্যকুমাৰ সভাত গৈছিলোঁ। দেওবৰীয়া কাৰ্য কৰ্ম ভালদৰে হৈছিল। আলীগড়ৰ শ্ৰীভূদেৱ শাস্ত্ৰী আৰ্যসভাৰ প্ৰচাৰক আছিল। শ্ৰী নাৰায়ণ প্ৰসাদ ভগৱণ্ড আৰ্য সমাজত আছিল। এদিন তেওঁ অটলজীক কলে- তুমিও পিছবেলাৰ শাখাত আহিব। কোৱাৰ পিছৰ পৰা বগা কম্বীজ, খকী হাফপেণ্ট, বেল, কলা টুপি এটা পিন্ধি শাখাত যাবলৈ ধৰিলে। প্ৰথম দিন মোৰ লগতে গৈছিল।

তোমা শ্রীনাথায় বা। এবটি শাখাৰ প্ৰাচ্যনক অৰ্জুনা প্ৰেচৰ্গাইলত প্ৰাচ্যনক এস এস ব
অৰ্জুনা প্ৰেচৰ্গাইলত কৰিছিল আনকি যি অৰ্জুনা প্ৰেচৰ্গাইলত কৰিছিল আনকি যি
প্ৰতি বহুত আদৰ ভাব হয়।

পূৰ্ণ কালজত থকা কৰ্মৰ অৰ্জুনা বাদ বিবাদ প্ৰতিযোগিতাৰ সময় প্ৰথম পুৰস্কাৰ
প্ৰতিযোগিতা এনেকুণা এটা প্ৰতিযোগিতাৰ প্ৰমাণকৰ কাৰ্হিনা তেওঁৰ মনত বিন্ধি আছিল এনেকুণা
বিশ্ববিদ্যালয়ত এবাৰ বাস্তৱ প্ৰতিযোগিতাৰ আয়োজন কৰিছিল। তেওঁৰ লগত লগত
বাৰে তেওঁৰ বাৰে কৰিছিল প্ৰতিযোগিতাৰ এটা প্ৰতিযোগিতাৰ প্ৰমাণকৰ কাৰ্হিনা
লগত লগত লগত লগত লগত লগত লগত লগত লগত লগত লগত লগত লগত
প্ৰতিযোগিতাৰ সময় প্ৰতিযোগিতাৰ সময় প্ৰতিযোগিতাৰ সময় প্ৰতিযোগিতাৰ সময়
সময় প্ৰতিযোগিতাৰ সময় প্ৰতিযোগিতাৰ সময় প্ৰতিযোগিতাৰ সময় প্ৰতিযোগিতাৰ সময়
সেই মুহূৰ্ত্তত পূৰ্ণ প্ৰতিযোগিতাৰ সময় প্ৰতিযোগিতাৰ সময় প্ৰতিযোগিতাৰ সময়
তেওঁলোক ফৈ পলম হ'ব বাৰ বাৰ সময়ত তেওঁলোক হ'ব নোৱাৰিলে। তেওঁলোক
ফৈ প্ৰতিযোগিতাৰ সময় লগত লগত লগত লগত লগত লগত লগত লগত লগত
হল তেওঁলোক দিলে। অটল নাজান তেওঁৰ পূৰ্ববৰ্ত্তী বৰ্ত্তাই কি কৰি গৈছে অৰ্জুনা
অনুমতি



এনে কৰ্মৰ প্ৰমাণকৰ কাৰ্হিনা প্ৰতিযোগিতাৰ সময়

পাই তেওঁ তৰ্ক আবস্ত কৰিলে তেওঁৰ তৰ্কত কিবা যাদু আছিল হবলা সেয়ে সকলো শ্ৰোতায় মন্তমুগ্ধ হৈ শুনিবলৈ ধৰিলে। নিৰ্ণায়ক মণ্ডলীয়েও আচৰিত হৈ তেওঁৰ তৰ্ক শুনিবলৈ তৰ্কৰ শেষত শ্ৰোতাৰ কৰতালিত সভাঘৰ মুখৰিত হল। পৰিণাম এয়ে হল, তেওঁকেই সৰ্বপ্ৰথম বক্তা হোৱাৰ পুৰস্কাৰ প্ৰদান কৰা হল। এই নিৰ্ণায়ক মণ্ডলীত হিন্দী সাহিত্যৰ খ্যাতি কবি 'মধুশালা' ৰচনাকাৰ ড॰ হৰিবংশ ৰায় বচন সদস্য এজন আছিল।

এই পুৰস্কাৰ আৰু ঘটনাৰ খবৰ যেতিয়া প্ৰিন্সিপাল পিয়ৰ্স চাহাবে শুনিলে অটলৰ হিয়া ভৰা আশীৰ্বাদ দিলে

বিন্যাৰ্থী জীৱনত তৰ্ক কৰি অটলে বহুত পুৰস্কাৰ পাইছিল। তেওঁৰ তৰ্কবুদ্ধি আৰু বক্তৃতা - কলা সঁচাকৈ প্ৰশংসাৰ যোগ্য। সুদীৰ্ঘ চল্লিশ বছৰৰ অধিককাল তেওঁৰ সম্মোহক ভাষণৰ বাবে সংসদত সকলোৰে অভিনন্দনীয় হৈ আছে। নেহেৰুজীৰ সময়ৰ পৰা আজিলৈকে সংসদত থকা অটলজীৰ ভাষণ কলা কোনোৱে চেন পেলাব পৰা নাই। তেওঁৰ ভাষণ কলা ঈশ্বৰ প্ৰদত্ত, সৰস্বতীৰ দান হৈ।

(৩)

পণ্ডিত কৃষ্ণ বিহাৰী ব'জপেয়ীৰ চাৰিটা পুতেক-অবধ বিহাৰী, সদা বিহাৰী, প্ৰেম বিহাৰী, অটল বিহাৰী আৰু তিনিজনী ছোৱালী বিমলা, কমলা আৰু উমিলা। তেওঁ সকলো লৰা-ছোৱালীক সুশিক্ষিত কৰিছিল আৰু উপযুক্ত সময় হলে সকলোকে বিয়া দিয়াইছিল কিন্তু কনিষ্ঠ পুত্ৰ অটলক বিয়াৰ বাবে মান্তি কৰিব পৰা নাছিল। যেতিয়া যেতিয়া মাক দেউতাকে বিয়াৰ কথা কৈছিল, শ্ৰীমানে (অটলে) সেই প্ৰস্তাৱ অগ্ৰহণ কৰিছিল।

অটলৰ বৌয়েকে ও অটলক বিয়া কৰিবলৈ বুজাইছিল কিন্তু তেওঁ কাৰো কথা মানিবলৈ মান্তি নহল। তেওঁ স্পষ্ট কৈছিল-“মই মোৰ জীৱন ভাবতমাত্ৰৰ সেৱাৰ বাবে অৰ্পিত কৰিছোঁ”। এতিয়া আৰু কিবা ভাবিবলৈ প্ৰস্তুত নুঠে।

যেতিয়া পণ্ডিত দীনদয়াল উপাধ্যায়ক হত্যা কৰা হল, তাৰ পিছত অটলজীকো ধৰ্মক দি চিঠি পঠাবলৈ আৰম্ভ কৰা হল বৌয়েকে এদিন চকুৰ পানী টুকি কলে “অটল, তুমি ৰাজনীতি এৰি দিয়া” তেতিয়া তেওঁ মিচিকাই হাঁহি কলে “সেই কাৰণেই মই বিয়া কৰোঁৱা নাই তেওঁৰ ধাৰণা বৌয়েকেই ইমান কান্দিব পৰে, নিজৰ পত্নী হলে আৰু কিমান কান্দিব।”

তদন্থেক বিমলাই কয় তাৰ বিয়াৰ কথা চিন্তা কৰি মাই কান্দি কান্দি দুখতে মৰি গল। সি কিন্তু বিয়া নকৰালে বিয়াৰ কথা উঠিলেই মাক কিবা-কিবি কথাকৈ কথোটো এৰাই যায় আৰু য'ত তাৰ বিয়াৰ চৰ্চা হয় তাৰ পৰা দূৰত বিদূৰ হয়।

অটলজীৰ বস্ত্ৰৰ প্ৰতি মৰম খুউব লৈছি। এবাৰ ডাঙৰ ককাদেৱৰ পৰিবাৰ লৰা ছোৱালীলৈ বিন্যাসপুৰৰ পৰা দিল্লীত অটলজীৰ গাত আহিছিল গৰমৰ দিন, ট্ৰেইন যাওঁতে

পালীৰ যাতে অসুবিধা নহয় ত'ৰ বাবে পানীৰ কলহ এটা বিনা হৈছিল। অলপো তেতিয়া ৩০, বাজেন্দ্ৰপ্ৰসাদ বে'ড, নতুন দিল্লীত আছিল। পৰিয়ালৰ মানুহক আনিবৰ বাবে গাৰ্ভিণ মেটেশ্বৰত গৈছিল। বস্ত্ৰ বাহানি উঠে'ৰ'ৰ পিছত ককায়েকে অটলজীক কলে পানীৰ কলহটো ইয়াত এৰি যাও নহলে ভাঙি দিয়া। ত'ত লৈ গলে ম'নু'হে দেখিলে হাঁহিব। তেতিয়া অটলজীয়ে কলে কলহটো কিয় ভাঙিব লাগে, তাত গলেও কামত আহিব নহলে আমি কত ঠাণ্ডাপানী পাম। এই বুলি কলহটো যতনহি গাড়ীত উঠালে। তেওঁলোক দুটা সপ্তাহমান তাত আছিল। সেই কেইদিন এই কলহৰে ঠাণ্ডাপানী তেওঁলোকে খালে।

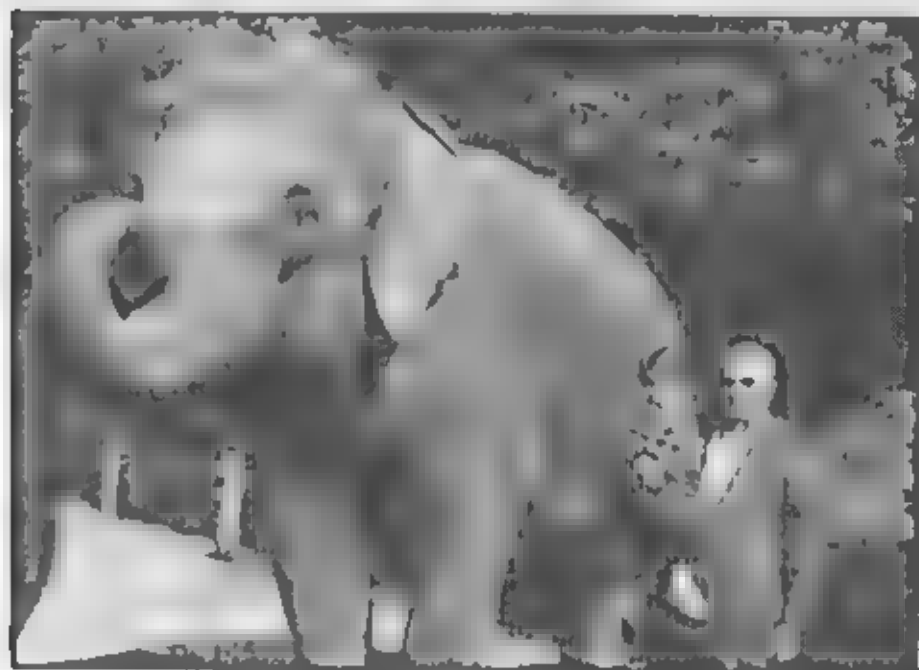
এবাৰ অটলজীৰ ভতিজী শ্ৰীমতী বীতামা দেউতাৰ লগত হঠাতে বদলি হৈ সবলগড় আহি পালে। তাই তেতিয়া বি.এ.ৰ ছাত্ৰী। ত'ত পঢ়িবলৈ কলেজ নাই। বীতাই দেউতাকক কলে, খুড়াক চিঠি লিখি তুমি পুনঃ ভাল ঠাইত বদলি লোৱা। মই অকলে থাকি পঢ়িব নোৱাৰিম। যথা সম্ভৱত চিঠিৰ উত্তৰ অটলজীৰ পৰা আহিল। প্ৰথম কথা মই বদলিৰ বাবে কাকো নকম তুমি সবল গড়ত থাকি সবল হোৱা। তুমি যেতিয়া থাকা বিশ্ববিদ্যালয়ত নিশ্চয় পঢ়িব লাগিব পঢ়াৰ বাবে যত যাব লাগে যাবা, সবল হৈ যাবা, কমজোৰ হৈ নাযাবা।

বীতাই আৰু কৈছিল - খুড়াৰ এটা বিশেষ অভ্যাস আছিল, ঘৰত যেতিয়া পৰিয়ালৰ মানুহৰ লগত থাকে তেতিয়া পাৰ্টিৰ বা বাহিৰা মানুহৰ লগত আৰু যেতিয়া বাহিৰত পাৰ্টিৰ কামত থাকে তেতিয়া ঘৰৰ মানুহৰ লগত নিৰ্মিলাছিল। ১৯৭৭ চনৰ ৪ মে, খুড়া তেতিয়া ভাৰতৰ বিদেশমন্ত্ৰী। সেইদিনা ডাঙৰ খুড়াৰ ছোৱালী মালাৰ বিয়াৰ দিন আছিল। পাৰ্টিৰ পৰা এখন সাধাৰণ সভাৰ আয়োজন কৰা হৈছিল। মই আৰু মোৰ পেহাঁৰ ছোৱালী অলকা আমি দুয়োৰে ভাষণ শুনিবলৈ গৈছিলোঁ। খুড়াৰ ভাষণ দিয়াৰ পাছত শ্ৰোতায় যেনে হাত চাপৰি বজাইছিল। আমি দুয়োৰে খুব প্ৰসন্ন হৈছিলোঁ। খুড়াক স্বাগত জনোৱা হৈছিল। ভাষণ যোঁতয়া শেষ হ'ল আমি খুড়াৰ ওচৰত গৈ শুধিছিলোঁ - আপুনি নিশ্চয় ঘৰত গৈ আছে? তেখেতে 'হ্যাঁ' কলে। তেতিয়া আমি কলে - আমিও ঘৰত যাম। তেতিয়া তেখেতে 'না' কলে। এইখন বিদেশমন্ত্ৰীৰ গাড়ী, তোমালোকৰ খুড়া অটল বিহাৰীৰ নহয়। আমি কলো - আমাৰ লগত পইচা নাই। তেখেতে কলে - কিয় পইচা লৈ আহা নাই? যেনেকৈ আহিছা তেনেকৈ গুচি যোৱা। এই বুলি কৈ তেখেত গাড়ীত বহি গুচি গল।

আমি দুয়োৰে দুখ অপমানত খোজকাৰি খোজকাৰি আহি ঘৰ পালোঁ। চকুৰ পানী পৰো পৰো অবস্থা। ঘৰত আহি চাও খুড়া বাহিৰত বহি আছে। আমি খং কৰি খুড়াক শুধিলোঁ - আপুনি কিয় আমাক এৰি আহিলে? এই বুলি আমি কান্দিয়ে পেলালোঁ। তেতিয়া তেওঁ আমাক মৰমৰে সাৰটি ধৰি কলে - "চোৱা মই যেনে পাৰ্টি বা চৰকাৰী কামত থাকোঁ ঘৰৰ লগত সম্পৰ্ক নাৰাখোঁ আৰু যেতিয়া ঘৰত লগত থাকোঁ পাৰ্টি বা চৰকাৰী কামত লগত কোনো লেঠা নাৰাখোঁ।" এই বুলি কৈ তেখেতে কথাটো পাওলহি দিলে।

[illegible]

আমরা যদি আমাদের দেশকে ভাল করে চিনি, তবে আমরাই আমাদের দেশকে ভাল করে পরিচালনা করতে পারি। আমাদের দেশের মানুষেরা আমাদের দেশকে ভাল করে চিনি, তাই আমরা আমাদের দেশকে ভাল করে পরিচালনা করতে পারি না। আমাদের দেশের মানুষেরা আমাদের দেশকে ভাল করে চিনি, তাই আমরা আমাদের দেশকে ভাল করে পরিচালনা করতে পারি না। আমাদের দেশের মানুষেরা আমাদের দেশকে ভাল করে চিনি, তাই আমরা আমাদের দেশকে ভাল করে পরিচালনা করতে পারি না।



(continued)

এতিয়ালৈকে
 ষটলজীৰ পৰিয়ালত
 মোটামুটী দেবশ'ৰো
 অধিক লোক হ'ব। কিবা
 সন্ধ্যাম হ'লে সকলোৰে
 গোট খায়। আগ্ৰাত থকা
 ভনী কমলাও গোটেই
 পৰিয়াল লৈ আহে।
 ষটলজী সেই সময়ত
 কোনো বহিৰা মানুহক লগ
 নধৰে। ঘৰতেই থাকে।
 এজন এজনকৈ সকলোৰে

খা খবৰ শপি থাকে। সৰু সৰু সৰা ছোৱালী বোৰৰ লগত খুব কথা পতি থাকে। আনুমানিক
 ত্ৰিশ জনমান নাতি নাতিয়া নামেৰে তেখেতৰ মনত নাথাকে। নাতি পুনীতে কৈ থাকে - ককাৰ
 ব্যবহাৰ পাতি আমি খুব ভাল পাওঁ। আমাক নালাগে তেখেত যে ইমান ডাঙৰ এজন নেতা
 আমি তেখেতৰ লগত ঘূৰিবলৈ যাওঁ। আমি কিবা বস্তু ভাল পায় বিছাৰিলে, লগে লগে কৈ
 দিয়ে। কক'ৰ লগত মেলাওঁ গৈ কুন' কুলি কৰি খুব ভাল লাগে। মজা পাওঁ। নাতিয়া নিধিয়ে কৈ
 থাকে - মই তেখেতক "দিঙীবালা বৰা" বুলি কওঁ তেখেত এবাৰ মোক কৈছিল মইতো
 গোলালিয়বন, দিঙীৰ নহয় নহয়। তেতিয়া মই ওপৰাই কৈছিলো "তেনেহলে আপুনি
 গোলালিয়বতে থাকক।" তেতিয়া তেওঁ খুব হাঁহি মোক মৰম কৰিছিল।

বাপুৱত অটলজীৰ সহজতা আৰু সৱলতা আমি যিমান অনুভৱ কৰোঁ তেওঁ কৈ
 তেওঁ ৫২ ওপৰত লৰাৰ মাগত সেমালে সয়ং লৰা হৈ যায়।

অটলজী খোৱাত বৰ কচি থকা
 মানুহ। খোৱাৰ বস্তুৰ মাজত ঘি, গাখীৰ আৰু
 আম তেখেতৰ বৰ প্ৰিয়। কেতিয়াবা আহাৰ
 মনোমত নহলে পোনে পোনে কৈ দিয়ে -
 মাৰ হাতৰ বন্ধা আহাৰৰ কথাই বেলেগ
 আছিল।

অটলজী যেনেকুৱা নিজৰ
 পৰিয়ালক ভাল পাই তেনেকুৱা ভাল পাই
 নিজৰ দেশখনক। সংঘৰ গভীৰ প্ৰভাৱ
 তেওঁৰ ওপৰত। তেওঁ পৰিয়ালৰ মানুহক
 সদায় কৈ - মিলা প্ৰীতিৰে থাকিবৰ বাবে
 যদিও ৰাক্ষসিশাল বেলেগ বেলেগ হয় মন
 কিন্তু এক হৈ থাকিব লাগে।

নমিতা অটলজীৰ ধৰ্মীয় পুত্ৰী।
 বিন্দু, সৰল স্বভাৱা শান্তানন্দ লেখাপঢ়াত
 কচি থকা সচাকৈ অটলজীৰ পুত্ৰী হোৱাৰ
 যোগ্য। কিন্তু তেওঁৰ ৰাজনীতিৰ প্ৰতি কচি
 নাই। আৰু তেওঁৰ এটা আভিযোগ হল
 বাপজীয়ে (অটলজীয়ে) তেওঁলোকক বেছি
 সময় দিব নোৱাৰে। কেতিয়াবা নমিতাই



চাহেবী পোশাকত নাতিয়া মৰমৰ নেহাৰ লগত

অভিমান কৰি সুধিলে অটলজীয়ে বয় “আগতে এপইণ্টমেন্ট লোৱা” এই বুজিকে হাঁহি থাকে
 নামতায় বাপজীৰ সকলো সুখ সুবিধাৰ প্ৰতি ধ্যান থয়। তেওঁৰ গিৰিয়েক শ্ৰী বজ্জন
 চাকৰিৰ অবসৰৰ সময়খিনি অটলজীৰ বাগজ - পৰা বিলাক গোছাই খোবাত ব্যস্ত থাকে। তেওঁৰও
 কিন্তু ৰাজনীতিৰ প্ৰতি ৰুচি নাই।

নামতাৰ পুত্ৰী নেহা নানাজীৰ (ককাৰ) অতি মৰমৰ গুটি নিজে কিবা ড্ৰইং কৰি
 নানাজীক দেখুৱাই খুব গৰ্ব অনুভৱ কৰে আৰু নানাজীও মনৰি ড্ৰইং বিলাক চাই থাকে। ড্ৰইং
 চোৱাৰ পিছত যদি প্ৰশংসা নকৰে তেতিয়া হাতৰ পৰা ক’টিলে দুৰত থিয় হৈ কৈ থাকে “ফ’ক,
 আপোনাক নেদেখাও নানাই তেতিয়া পৰাজয়ৰ ভঙ্গীত কৈ থাকে। চাও দেখুৱাচোন, কিমান
 দুৰ্নীয বং হৈছে। তেতিয়া নেহাই নানাক সাৰটি ধৰি মনযোগদি আকৌ দেখুৱাই থাকে।

অটলজীয়ে নেহাৰ মন্তব্যত মৰম কৰে। তেওঁ শ্ৰেষ্ঠতৰ কণাপ “মেৰী ইকসাবন কবিতায়”
 (তৃতীয় সংস্কৰণ) মৰমৰ নাতিনী নেহাক উপহাস দিছিল।

ৰাতি শোৱাৰ আগতে তেওঁ কেতিয়াবা সাধুকথা শুনাই থাকে আৰু কেতিয়াবা নানাক
 সাধুকথা শুনাবলৈ কৈ থাকে। তদুপৰি ওচৰত শুই পিঠি দি খজুৱাই দিবলৈ কয়। বাধা হৈ নানাই
 পিঠি খজুৱাবলৈ মান্তি হয়।

ভাৰিলে আচৰিত যেন লাগে। বাপৰ ৰাজনীতি চলোৱা এজন মহান নেতাই নিজৰ
 নাতিনীৰ লগতো কেঁনেকুৱা খেল খেলি থাকে।

(৪)

গোৱালিয়ৰৰ অটলজী আজি গোটেই ভাৰতৰ অটলজী হৈ পৰিল। তেওঁৰ জন্ম আৰু
 শিক্ষা এই গোৱালিয়ৰতেই। স্বয়ং সেৱকৰ ৰূপত আৰম্ভনি এই গোৱালিয়ৰতেই। ৰাজনীতি
 বাদে তেওঁৰ চিনাকী তেওঁৰ কবিতাৰ দ্বাৰে হৈছিল। মঞ্চত কবিতা শুনা আৰু ভাষণ দিয়াৰ
 অভ্যাস ক’চ নাইনৰ পৰাই আছিল। সেইবাবে তেওঁ কেতিয়াও মঞ্চক ভয় নকৰে। তেওঁৰ প্ৰথম
 কবিতা ‘তাজমহল’ কিন্তু কবিতাটো আজি ভালকৈ তেওঁৰ মনত নাই আৰু আনেক কবিতাটো
 সংৰক্ষন কৰা নাই। তাজমহল কবিতাত তেওঁ সৌন্দৰ্যৰ চিত্ৰণ কৰি, তাজমহল নিৰ্মাণ কালত
 প্ৰজাৰ ওপৰত যি শোহন হৈছিল তাৰ কল্পনায়ে অধিক আছিল।

কলেজ অধ্যয়নকালত ১৯৪২ চনত তেওঁক ডিবেটিং চেম্বেটাৰী নিৰ্বাচিত কৰা হৈছিল।
 ১৯৪৩ চনত পুনঃ ইণ্ডিয়ান চেম্বেটাৰী আৰু ১৯৪৪ চনত ইণ্ডিয়ানৰ উপাধ্যক্ষ নিৰ্বাচিত হৈছিল।
 তেতিয়াৰ দিনত ভিক্টোৰিয়া কলেজত ইণ্ডিয়ানৰ অধ্যক্ষ কোনবা অধ্যাপক হৈ হব পাৰিছিল।

যোতং তেওঁ ইণ্ডিয়ানৰ উপাধ্যক্ষ আছিল তেতিয়া তেওঁৰ লগত চেম্বেটাৰী আছিল
 শ্ৰী হৰিকৃষ্ণ শৰ্মা কৰ শৰ্মা। ইণ্ডিয়ানৰ উৎসৱ এখনত কিবা কথাত অমিল হোৱা লবে তেওঁ তাৰ
 পৰা প্ৰাণ পত্ৰ দি বেলেগ এখন ইণ্ডিয়ান গঠন কৰি তাতো অটলজী উপাধ্যক্ষ হৈছিল। উৎসৱৰ
 সম্পূৰ্ণ ব্যৱস্থা অটলজীৰ ওপৰত দিয়া হৈছিল। নিৰ্মাণ, অৰ্থাৎ পণ্ডিত ৰাজেন্দ্ৰ সাংস্কৃতিক

উপস্থিতিত উৎসবৰ শ্ৰীবৃদ্ধি হৈছিল। তৰুণ অটলৰ সাহিত্যিক ভাষণ শুনি ৰাছলজী অভিভূত হোৱাৰ লগতে প্রশংসাও কৰিছিল।

অটলজী বিদ্যার্থী কালৰ পৰাই অনুশাসন, সময়ৰ প্ৰতি নিয়মানুবৰ্তিতা আৰু বাকসংযম পালন কৰিছিল। তেওঁক এই সংস্কাৰ তেওঁৰ বাবা (ককাদেউতাক) আৰু দেউতাকৰ পৰাই পাইছিল। এই সংস্কাৰৰ প্ৰভাৱ আজিলৈকে তেওঁৰ ব্যক্তিত্বত প্ৰকাশ পাই আহিছে। তেওঁ কোনো কেতিয়াও কোনো পৰিস্থিতিত কোনো অপশব্দ প্ৰয়োগ নকৰে। যেতিয়া তেওঁ কলেজ ইউনিয়নৰ উপাধ্যক্ষ আছিল এদিন এটা ঘটনা ঘটিছিল। ইউনিয়নৰ তৰফৰ পৰা এখন অখিল ভাৰতীয় কবি সন্মেলনৰ আয়োজন কৰা হৈছিল। তাৰ সংযোজক অটলজীয়েই আছিল। তেতিয়াৰ দিনৰ প্ৰতিষ্ঠিত কবি ড° শিবমঙ্গল সিংহ 'সুমন' ভিক্টোৰিয়া কলেজৰ হিন্দী প্ৰাধ্যাপক আছিল। তেওঁ অটলজীৰ পিতাশ্ৰীৰ শিষ্য আছিল।

কবি সন্মেলনত কবিতা শুনিবৰ বাবে ছাত্ৰ-তথা নগৰৰ সম্ভ্ৰান্ত লোকসকল আহিছিল। চাওঁতে চাওঁতে এক ঘণ্টা উকলি গল। নিমন্ত্ৰিত কবিগণ সুমনজীৰ ঘৰত গৈ খোৱা-বোৱাত ব্যস্ত আছিল। শ্ৰোতা অধৈৰ্য্য হৈ গল। অটলজীও খঙতে থাকিল। তেতিয়া কবিগণ ভুলুসুলু লগায় অহা দেখা গল। অটলজীয়ে হঠাতে মঞ্চত উঠি ঘোষণা কৰি দিলে কিবা কাৰণবশতঃ সেই দিনাৰ সন্মেলনখন বাতিল কৰিব লগা হ'ল। সমূহ ৰাইজ উঠি গল। কবি সকলে কি কৰিব নকৰিব হতবস্ত হৈ চাই ৰ'ল। অটলজীয়ে তেখেত সকলক সময় পালনৰ পাঠ পৰোক্ষ ৰূপত শিকাই দিলে।

১৯৯৫ চনৰ ১৩ অক্টোবৰ, দিল্লীৰ ফিল্মী সভাগাৰ সেই ঘটনা ঘটাব দীৰ্ঘ পঞ্চাচ বছৰৰ পাছত তেওঁৰ কাব্য সংগ্ৰহ 'মেৰী হকযাৱন কবিতাৱ' উন্মোচন কৰা হ'ল। লোকপ্ৰণ উৎসৱৰ মুখ্য অতিথি ড° সুমনজী মঞ্চত বিদ্যমান। অটলজীয়ে তেওঁৰ ভাষণত কলে - "ছাত্ৰ জীৱনত মোৰ কোনবা ভুল হৈছে যদি মোৰ গুৰুৰ ড° সুমনজীৰ ওচৰত আজি এই অনাড়ম্বৰ অনুষ্ঠানত মই সাৰ্বজনিক ভাবে ক্ষমা বিচাৰিছোঁ।" যি ক্ষণত বাক্যখিনি কৈছিল, অত্যধিক ভাৱুক হোৱাৰ বাবে কণ্ঠ ৰুদ্ধ হৈ আহিছিল। সুমনজীয়ে অতীতৰ কথাখিনি মনত কৰি মনটো বিচলিত হৈ অশ্রুসিক্ত কৰিব নোৱাৰিছিল। অৰ্ধশতাব্দীৰ আগত সংঘটিত হৈ যোৱা ঘটনাৰ কথা গুৰু শিষ্য বাদে কোনেও জানিব নুৱাৰিলে।

কেতিয়াবা কেতিয়াবা সাম্যবাদী বিচাৰধাৰাৰ পত্ৰ-পত্ৰিকাত অটলজীৰ ওপৰত লেখা হয় যে তেওঁ বামপন্থী বিচাৰ ধাৰাৰ মানুহ, তেখেত এস-এফ আইৰ লগত সংশ্লিষ্ট হৈছিল। মানে কমিউনিস্ট আছিল।

এই সন্দৰ্ভত অটলজীৰ বালসখা শ্ৰী খানবলকৰজীয়ে কয়- "অটলজী কেতিয়াও কমিউনিস্ট নাছিল। সেইগৈ কমিউনিস্টৰ যোজনাৰূপ প্ৰচাৰ আছিল। যিটো নেকি আজি সত্যৰ আগত বিলীন হৈ গল।

গোৱালিঘৰৰ ভিক্টোৰিয়া কলেজৰ (বৰ্তমান লক্ষ্মীবাই কলেজ) পৰা হিন্দী সংস্কৃত আৰু ইংৰাজীলৈ যোগ্যতাৰে বি. এ পাচ কৰাৰ পাছত ৰাজনীতি বিজ্ঞানত এম. এ আৰু আইন পঢ়িবলৈ মনত ইচ্ছা উপজাইছিল। ভিক্টোৰিয়া কলেজত এম. এ. পাচৰ ব্যৱস্থা নাছিল সেই বাবে কানপুৰলৈ গৈ অধ্যয়ন কৰাৰ কথা স্থিৰ কৰিছিল। তেওঁৰ পিতাক বিদ্যানুৰাগী আছিল, সেইবাবে সহজে অনুমতি দিছিল।

ৰাজ্য চৰকাৰৰ পৰা বাহিৰত পঢ়িবৰ বাবে তেওঁৰ জলপানী মঞ্জুৰ কৰা হৈছিল। কিয়নো বি. এ. ত প্ৰথম হোৱা বিলাকক জলপানী দিয়া হৈছিল। কিন্তু এটা চৰ্তত, পঢ়া শেষ হোৱাৰ পাছত কেইবছৰমান কিন্তু ৰাজ্য চৰকাৰৰ চাকৰি কৰিব লাগিব। কিন্তু অটলজীৰ ক্ষেত্ৰত এই চৰ্তটো আৰোপ কৰা ন'হল। কানপুৰতগৈ পঢ়িবলৈ আৰু একো বাধা নাথাকিল। অটলজীয়ে এম. এ. আৰু আইনৰ শিক্ষা একে লগে কৰিব মন কৰিলে। তেতিয়াৰ দিনত আগ্ৰা বিশ্ববিদ্যালয়ত এম. এ. আৰু এল. এল. কি একেলগতে পঢ়িবলৈ অনুমতি দিয়া হৈছিল। কিন্তু দুটাৰ ফাইনেল পৰীক্ষা একেলগে দিয়া হোৱা নাছিল।

যেতিয়া অটলজী পঢ়িবৰ বাবে কানপুৰলৈ যাবলৈ সাজু হল তেতিয়া এক আশ্চৰ্য ঘটনা ঘটিছিল। তেওঁৰ দেউতা কৃষ্ণ বিহাৰী তেতিয়া অবসৰপ্ৰাপ্ত কিবা মন গল তেওঁ ল'ৰাৰ লগত আইন পঢ়িবলৈ মন মেৰিলে, যেনে ইচ্ছা তেনে সাজু। দেউতা ল'ৰা একে লগে সহপাঠী হৈ হোস্টেলত থাকিবৰ বাবে কানপুৰত আহি গল। বেছি বয়সীয়া বিদ্যার্থী হৈ শ্ৰেণীত বহিবলৈ নিশ্চয় কৃষ্ণ বিহাৰীৰ মনত সন্কোচ ভাব হৈছিল, কিন্তু বিদ্যা লাভৰ উৎকট ইচ্ছায় সন্কোচ ভাব আঁতৰাই নিলে।

তেতিয়াৰ দিনত ড° এ. বী. কলেজৰ বিশেষ খ্যাতি আছিল। ল'ৰা দেউতা একেলগত যেতিয়া প্ৰাচাৰ্যৰ ওচৰত ভৰ্তিৰ বাবে গৈছিল তেতিয়া প্ৰাচাৰ্যৰ আশ্চৰ্যৰ সীমা নাছিল। তেওঁ দুজনকেই ভৰ্তিৰ বাবে অনুমতি দিছিল। ল'ৰা-দেউতা একেই শাখাত আৰু হোস্টেলৰ একেই কোঠাতে আছিল। তেওঁলোকক চোৱাৰ বাবে ছত্ৰবিলাক আহিছিল। দুজনে একেই শাখাত হোৱাৰ বাবে বহুত অসুবিধাৰ সন্মুখীন হ'ব লগা হৈছিল। সেইবাবে পিছত শাখা সলনি কৰিব লগা হল। দ্বিতীয় বৰ্ষ পোৱাৰ লগে লগে অটলজী প্ৰাক্তন এম. এ.ৰ সম্পাদনৰ কাম পাই লক্ষ্ণৌলৈ যাব লগা হল।

তেতিয়াৰ দিনত আগ্ৰা বিশ্ববিদ্যালয়ত ডী. এ. বী. কলেজ শ্ৰেষ্ঠ কলেজ হিচাবে গণ্য কৰা হৈছিল। তাৰ অধ্যাপকসকল ভালৈই আছিল। তেওঁলোকৰ খ্যাতি আছিল। সেইবাবে বহুদূৰৰ পৰা আৰু অনা প্ৰদেশৰ পৰাও ছাত্ৰবিলাক ইয়াত পঢ়িবলৈ আহিছিল। আচল কথা পঢ়া শুনাৰ পৰিবেশ খুব ভাল আছিল। সেই সময়ত ৰাজনীতি বিজ্ঞান পঢ়াবলৈ তিনিজন প্ৰফেচৰ আছিল- তেওঁলোক হল সৰ্ৱশ্ৰী এস. এল. বৰ্মা, মন মোহন পাণ্ডে আৰু কে. কে. প্ৰদান। অটলজীৰ এম.

এ. শ্ৰেণীৰ প্ৰথম আৰু দ্বিতীয় বৰ্ষৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰী মিলাই আনুমানিক বিশ'জনমান আছিল।

অটলজী কেতিয়াবা কেতিয়াবা ক্লাচত অনুপস্থিত আছিল। এদিন প্ৰফেচৰ পাণ্ডেজী ক্লাচলৈ আহিল। পাণ্ডেজী, পঢ়াৰ মাজত বোৰ্ডত কিবা লেখি দিয়া চাই দেখে যে অটল ক্লাচত নাই। তেওঁ তেওঁৰ সহপাঠী ৰামমোহন সিংক শুধিলে অটল কলে গ'ল। তাৰ পিছত নিজে নিজেই কলে কিবা সংঘৰ কামত ওলাই গ'ল নেকি?

বাস্তৱতে অটলজী সংঘৰ প্ৰতি ইমান অনুৰাগ আছিল, যে সেই কামক বেছি প্ৰাধান্য দিছিল, কিন্তু পঢ়াৰ প্ৰতি ও সदा জাগৰুক আছিল। সেইবাবে ৰাতি ৰাতি সজাগ থাকি ভালদৰে পঢ়াশুনা কৰিছিল আৰু ক্লাচত পঢ়োৱাৰ আগত পাঠ্যকৰ্মখিনি প্ৰফেচৰৰ পৰা কিতাপলৈ নতুবা লাইব্ৰেৰীৰ পৰা কিতাপ লৈ আয়ত্ব কৰি লৈছিল।

অটলজী পঢ়াশুনাত আগৰ পৰাই চোকা আছিল। গোটেই বিশ্ববিদ্যালয়ত প্ৰথম চাৰিটা স্থান ভী. এ. বী. কলেজৰ পৰাই আহিছিল। প্ৰথম স্থানত শ্ৰী ব্ৰিলোকী নাথ শ্ৰীবাশ্ৰৱ, দ্বিতীয় স্থানত অটলজী শ্ৰী জী. এস. গহৰানা তৃতীয় আৰু চতুৰ্থস্থানত এজনী ছাত্ৰী আছিল। ব্ৰিলোকী নাথৰ নম্বৰতকৈ অটলজী অকল দুই নম্বৰহে কম পাইছিল।

আজিও অটলজীয়ে তেওঁৰ সহপাঠী সকলক মনত পেলায়। কেতিয়াবা বন্ধুসকলক দিল্লীত লগ পালে তেওঁৰ পদবী পাহৰি গৈ কথা-বতৰা পাতি খুব ভাল পায়। অটলজী আৰম্ভণিৰ পৰাই মিতভাষী, বন্ধু-বান্ধব বনোৱা খুব বিবেচনা কৰি কৰিছিল। এনেকুৱা নহয়, গপ মাৰিবৰ বাবে অনেক বন্ধু-বান্ধবৰ লগত মিত্ৰতা কৰা, কলেজত পঢ়াৰ দিনত তেওঁৰ ভাল মিত্ৰ আছিল ৰামমোহন সিং, জী. এস. গহৰানা আৰু মোহনজী। পিছত মোহনজী সংঘৰ ভাল কাৰ্যকৰ্তাও আছিল।

খেলা-ধুলা তথা অন্য কাৰ্যকলাপত অংশ গ্ৰহণ কৰাৰ বাবে তেওঁৰ সময় নাছিল, কিয়নো তেওঁৰ বেছি সময় সংঘৰ কামতেই অতিবাহিত হৈছিল। কিন্তু সাহিত্য চৰ্চাত আগভাগ লৈছিল। তৰ্ক প্ৰতিযোগিতা যতেই থাকক তেওঁৰ নাম প্ৰথমতেই লোৱা হৈছিল আৰু তেনেকুৱাত প্ৰথম পুৰস্কাৰো পাইছিল।

পঢ়াশুনাৰ উপৰি অটলজী তেওঁৰ বেছি সময় সংঘৰ কামত লগাইছিল। তেওঁ সংঘৰ কামত বহুত সক্ৰিয় আছিল। তেওঁ আন ছাত্ৰকে সংঘৰ কামত নিবলৈ যত্ন কৰিছিল, তেওঁলোকক সংঘৰ ৰাষ্ট্ৰীয় ভাবনাৰ বিষয়ে বুজাইছিল। কেতিয়াবা আলোচনাও হৈছিল। তেওঁৰ মিত্ৰ ৰামমোহনজীয়ে কে থাকে যে তৰ্কত তেওঁক কোনেও চেৰ পেলাব নোৱাৰে। তেনেকুৱা কৰি মানুহৰ মনত সংঘ প্ৰেম জগাই দিয়ে। সংঘৰ কাম কৰিবৰ বাবে তেওঁ পাগল। চহৰত কোনো কাৰ্যক্ৰম হ'লে তেওঁ চাইকেলত নতুবা খোজকাৰি তাত উপস্থিত হয়। সময়ৰ প্ৰতি ধ্যান তেওঁৰ সদায়। কৰ্মক্ৰমত বাস্তৱ থকাৰ বাবে তেওঁ খোৱা-লোৱাও পাৰ্ছৰ যায়। তেওঁৰ এই সংঘ প্ৰেম গাৰ বন্ধে বন্ধে বিৰ্যপি আছিল। যিটো নেকি অৰ্জিও আছে। যেতিয়াই কোনোবা কাৰ্যক্ৰমত

গৈছিল তেওঁ এই কবিতাটো সততে শুনাইছিল “হিন্দু মন-মন, হিন্দু জীবন, বগ বগ হিন্দু মেৰা
পৰিচয় ” অনেক কিশোৰ কিশোৰীয়ে এই কবিতাটো আবৃত্তি কৰিছিল যিটো কবিতা নেকি
আজিও হাজাৰ হাজাৰ প্ৰবীণ স্বয়ং সেৱকৰ কণ্ঠস্থ

এম. এ. অধ্যয়নৰ সময় তেওঁৰ শিক্ষাগুরু আছিল প্ৰফেচৰ মদন মোহন পাণ্ডেজী
এতিয়া তেওঁৰ বয়স আশি বছৰৰ ওপৰত তেওঁ কয় কোনো বিষয়ক ভালদৰে আয়ত্ত কৰাৰ
ক্ষমতা অটলৰ অপৰিসীম বিষয় বিবেচনাত বেলেগ সহপাঠীতকৈ ভিন্ন আছিল। তেওঁৰ চিন্তাধাৰা
তৰ্ক কৰাৰ ক্ষমতা আৰু বিষয়ৰ প্ৰস্তুতিকৰণ আনতকৈ বেলেগ বি এ ত জেনাৰেল ইংৰাজীৰ
উপৰিও অতিৰিক্ত ইংৰাজী লিটাৰেচাৰো পঢ়িছিল সেইবাবে তেওঁৰ কোনো অসুবিধা নাছিল

ছাত্ৰাবস্থাত তেওঁ পাণ্ডেজীৰ ঘৰত গৈছিল। কিবা কৰনে গৈ পাণ্ডেজীক লগ নাপালে
চাৰি এখন পাৰি শ্ৰী মতী পাণ্ডেক কৈ কিবা কিতাপ বিচাৰি পঢ়ি থাকে পাছত পাণ্ডেজী আহিলে
যদি কিবা বিষয়ত বুজিবলৈ অসুবিধা পায় সেইটো বুজি লয়। কিবা কিতাপ লাগিলে সুধি লৈ
যায়।

পাণ্ডেজীয়ে তেওঁৰ ছাত্ৰ অটলক লৈ গৰ্ব অনুভৱ কৰে। তেওঁ কয় এবছৰ আগত আমি
দিল্লীত গৈছিলোঁ। অটলক লগ পাবলৈ মন গল বায়সীনা ৰোডৰ বঙলা নম্বৰ ৬-ত গৈ উপস্থিত
হলোঁ ভিতৰত গৈ পোৱাৰ লগে লগে তেওঁৰ পি এ ক জনালোঁ অটলক আমি অহাৰ খবৰ দিব
লাগে। খবৰ পোৱাৰ লগে লগে তেওঁ লৰি আহি শিষ্যোচিত চণ্ডত ভৰিত ধৰি সেৱা কৰিলে
পাছত বৈঠকত লৈ গৈ চাহ-পানী খুৱাই অতিথিৰ বহু কথাই পঢ়িলে কথা বতৰাত একো
পৰিবৰ্তন হোৱা নাই, আজি পঢ়পন বছৰ আগৰ বিদ্যার্থী হৈ থকাৰ সেই বিনম্ৰ ভাব। তেওঁৰ এই
ব্যৱহাৰ দেখি অজানিতে মোৰ চকুত কোনফালে পানী আহি গল কবই নোৱাৰিলোঁ। অজি ৰাষ্ট্ৰৰ
এজন শীৰ্ষ নেতাই তেওঁৰ গুৰুৰ পতি হৃদয়ৰ পৰা এনেকুৱা শ্ৰদ্ধাভাৱ ব্যক্ত কৰি আছে, সেই
দেখি মনে কয়-‘সচায়, পবিত্ৰ আত্মৰ আৰু কেইজনমান নেতা হলেহেঁতেন’

প্ৰফেচৰ পাণ্ডেৰ ওচৰত অটলজীৰ কেইখনমান চিঠি আছে যি কেইখন তেখেতে খুব
যতনই থৈছে এই কেইখন চিঠিৰ দুই এখনত এনেকুৱা কথা ব্যক্ত কৰিছে -‘আপুনি নিশ্চয় সুস্থ
হৈ জ্ঞানদানত লাগি আছে ময়ো ৰাজনীতিৰ উখল মাখল প্ৰবল স্ৰোতত ঠেকা খাই আছো’

(৬)

কানপুৰৰ পৰা এম এ শিক্ষা শেষ কৰাৰ পাছত অটলজীয়ে আইনৰ অন্তিম বৰ্ষ
সম্পূৰ্ণ কৰিব নোৱাৰিলে পাছত লক্ষ্ণৌত গৈ তাৰ বিশ্ববিদ্যালয়ৰ পৰা পি এইচ ডি কৰাৰ মন
মেলিলে তেতিয়াৰ দিনত প্ৰথম শ্ৰেণীত উত্তীৰ্ণ হোৱা ছাত্ৰবিলাক আটাই এ এস কম্পিউটিশন ন
নাইবা পি এইচ ডি কৰিব পাৰে চিভিল চাৰ্ভিচ আৰু বিশ্ববিদ্যালয়ত প্ৰাধ্যাপক হোৱা দুয়োটাই
সন্মানজনক চাকৰি আছিল অটলজীয়ে চৰকাৰী চাকৰি কৰিব বিচৰা নাছিল কিন্তু অধ্যাপক হব
বিচাৰিছিল। তেওঁ লক্ষ্ণৌলৈ আহিল, কিন্তু পি এইচ ডি কৰিবৰ বাবে নহয় সংঘৰ কিবা

মহত্বপূৰ্ণ কামৰ বাবেহে। তেওঁৰ অধ্যাপক হোৱাৰ সপোন পূৰা নহ'ল। এই সম্বন্ধত ১২ আগষ্ট ১৯৯৫ চনত লক্ষ্ণৌ বিশ্ববিদ্যালয়ৰ মালবীকী হ'লত এক গণ্ড'য়পূৰ্ণ সভাত তেওঁ কৈছিল। এটা সময়ত লক্ষ্ণৌ বিশ্ববিদ্যালয়ৰ নাম দেশত খুব চৰ্চা হৈছিল। ইয়াত শিক্ষা গ্ৰহণৰ বাবে দেশৰ নানা ঠাইৰ পৰা ছাত্ৰ-ছাত্ৰী আহিছিল। ১৯৪৩ চনত ময়ো ইয়াত শিক্ষাৰ বাবে আহিব বিচাৰিছিলোঁ। পাছত কানপুৰৰ ডী এ বী কলেজলৈ গুচি গ'লো। তাৰ পৰা ৰাজনীতি বিজ্ঞানত এম এ কৰাৰ পাছত মন কৰিছিলোঁ লক্ষ্ণৌ বিশ্ববিদ্যালয়ৰ পৰা পি. এইচ. ডি কৰোঁ। তেতিয়াৰ দিনত ৰাজনীতি বিভাগত প্ৰফেচৰ হোৱা সন্মানজনক আছিল।

“পৰন্তু সেই সময়ত ৰাষ্ট্ৰৰ আহ্বান। সেই সংকট মুহূৰ্তত ২৫ ছাত্ৰী ওলাল, যুবক যুৱতী ওলাল, ময়ো ওলালোঁ। পি. এইচ. ডি কৰাৰ মনৰ কথা মনতেই থাকি গ'ল আৰু মই ৰাষ্ট্ৰৰ হকে জীৱন সমৰ্পণ কৰিলোঁ। পিছত মোক তন্ত্ৰেট উপাধি দিলেও মই সেই উপাধি লিখিবলৈ সন্মোচ অনুভৱ কৰোঁ।

১৯৪৬ চনত মুচলিম সম্প্ৰদায়ৰ ওপৰত মিঃ জিন্নাৰ যি পক্ষা বঙ সানিলে, সেইবাবে দেশৰ ঠায়ে ঠায়ে তিংসাৰ জুই জ্বলি উঠিল। দেশত পাৰ্শ্বিক মৰা কটাই স্পষ্ট কৰি দিলে যে, মুচলমানে নিজলৈ স্বাধীন দেশ বিচাৰিছে। এই বিচ্ছেদ হোৱাৰ পাছত আলোচিত হ'ল- মুচলমানৰ ধৰ্ম বেলগ, ভাষা বেলগ আৰু সংস্কৃতিও বেলগ। সেইবাবে তেওঁলোক হিন্দুস্থানত থাকিব নিবিচাৰে। নেহেৰুজীৰ ইচ্ছা সোনকালে প্ৰধানমন্ত্ৰী হ'বলৈ গান্ধীজীয়ে কৈছিল, “দেশ যদি বিভক্ত হয় মোৰ লাচৰ ওপৰতেই হ'ব”। তেওঁ নেহেৰুজীৰ প্ৰতি অত্যধিক প্ৰেমৰ বাবে একো কব নোৱাৰিলে। আৰু ভাৰত মাতাৰ অঙ্গ ভঙ্গ হৈ গ'ল। ভাৰতক দুটা ভাগত বিভক্ত কৰা হ'ল। পাকিস্থান হৈ গ'ল, কিন্তু ভাৰতৰ ‘লাচৰ’ উদাৰবাদী নীতিৰ বাবে ইয়াত থকা কটুৰপন্থা মুচলমান সকলে আকৌ সেই পুৰণা ৰঙ ল'ব ধৰিলে। মুচলিম সম্প্ৰদায়ে আজি দেশৰ আগত বুকু ফুলাই থিয় হৈ আছে। কিয়নো ভোটৰ সদাগৰ তেওঁলোকৰ সকলো কথা মানিবলৈ মান্ত হৈছে। ৰাজনৈতিক সকলে তেখেত সকলক সন্তুষ্ট কৰিবলৈ সদায় তৎপৰ হৈ থাকে।

১৯৪৬ চনত পূজা গুৰুজীয়ে অনুভৱ কৰিলে যে দেশখনক দুই টুকুৰা কৰা হ'ল। কিন্তু সমস্যাৰ সমাধান নহ'ল। গছৰ ডালপাত কাটি দিয়া হ'ল। গুৰি যেনেকুৱা আছিল তেনেকুৱাই থাকি গ'ল। সেইবাবে দেশত নৱজাগৰণ অনাৰ বাবে আৰু সাংস্কৃতিক চেতনা পুনঃ জগাই তোলাৰ বাবে কাল বিলম্ব নকৰিলে। তেওঁ ঠিক কৰিলে লক্ষ্ণৌৰ পৰা এখন মাহেকীয়া পত্ৰিকা প্ৰকাশ কৰিব লাগে।

তেতিয়াৰ দিনত সংঘৰ্ষ মুখ্য কাৰ্যালয় চাৰবাগ স্টেচনৰ ওচৰত ৬ এ পি সেন ৰোডত আছিল। শ্ৰী ভাডৰাৰ দেৱবস প্ৰান্ত প্ৰচাৰক আছিল। তেখেতে কাৰ্যকৰ্তা সকলক জনাইছিল যে পূজা গুৰুজীয়ে লক্ষ্ণৌৰ পৰা এখন মাহেকীয়া পত্ৰিকা উলিয়াবলৈ লিখি ৰিছে। সকলো কামকৰ্ম ইয়াক স্বাগত জনালে।

পশ্চিম দীনদয়াল উপাধ্যায়ক এই কাৰ্য্যভাৰটো দিয়া হ'ল। তেখেতৰ বৃদ্ধৰ স্তান আৰু দুৰদৃষ্টি সকলোবোৰেই জ্ঞাত। চিন্তক, লেখক কঠোৰ পৰিশ্ৰমী সকলোকে লগত লৈ আশ্বৰ্য্যক পৰা সৰল স্বভাৱ অতিমান বহিঃ গৰাকী হ'ল পশ্চিম দীনদয়াল জী। যেতিয়া তেওঁক এই কাৰ্য্যভাৰটো দিয়া হ'ল তেখেতে এই কামটো 'জিদ' হিচাবে ধৰি ল'লে। আৰু ঠিক কৰিলে যে এনেকুৱা পৰিচা উলিয়াব যিখন পঢ়ি পঢ়াকৈ অকল মনোৰঞ্জনই নাপায়, নিজৰ গৌৰৱময় অটোতৰ কথাও জনিব পাৰে। বৰ্তমানৰ শোচনীয় দশাক অনুভৱ কৰি উজ্জ্বল ভৱিষ্যৎ নিৰ্মাণৰ বাবে আগবাঢ়ি যাবলৈ সমৰ্থ হয়।

এতিয়া প্ৰশ্ন আছিল, কাক সম্পাদক পতা হয়? শ্ৰী দেৱবসজী আৰু উপাধ্যায়জীয়ে এই কাৰ্য্যৰ বাবে দুজন সাহিত্য প্ৰেমী যুৱকক মনোনয়ন কৰিলে। তেওঁলোক হ'ল শ্ৰী অটল বিহাৰী বাজপেয়ী আৰু শ্ৰী বাজৰ লেচন অধিহেত্ৰী দুয়োকে যুটীয়া সম্পাদক ৰূপত আমন্ত্ৰণ কৰা হ'ল। দুয়ো লক্ষ্যলৈ আহি ৬ এ পি. সেন ৰোডৰ মুখা কাৰ্যালয়ত উপস্থিত হ'লহি।

মাহেকীয়া পত্ৰিকা উলিয়াবলৈ পুৰা যোজনা তৈয়াৰ হ'ল। অৰৈতনিক সম্পাদক নিযুক্ত হৈ গ'ল। দুয়ো সম্পাদক স্বয়ং সেৱক আছিলে, তেওঁলোকে ঘৰ-পৰিয়াল এৰি সংঘৰ নামত জীবন দান কৰিছিলে। এতিয়া পত্ৰিকাৰ ক' নাম হ'ব এই লৈ বিচাৰ কৰা হ'ল। অনেক নাম ওলাল। কিন্তু ভাউনাৱজী আৰু দীনদয়ালজীৰ পছন্দ নহ'ল। লক্ষ্মী বিশ্ববিদ্যালয়ত অধ্যয়নৰত স্বয়ং সেৱক বিদ্যাসাগৰ, তেখেতে এটা নাম দিলে 'বাস্তৱ্য'। এই নামটো কিন্তু দুয়োজনৰেই পছন্দ হ'ল। বাকী লোক সকলেও এই নামটোত স্বীকৃতি পদান কৰিলে।

এতিয়া নৱপ্ৰকাশিত মাহেকীয়াৰ নাম 'বাস্তৱ্য' হ'ল। প্ৰকাশক হিচাবে লক্ষ্মীৰ সুসংস্কৃত নগৰিক আৰু স্বয়ং সেৱক শ্ৰী বাধেশ্যাম কাপুৰৰ নাম স্বীকৃত কৰা হ'ল। কাপুৰজীয়ে প্ৰসন্নতা পূৰ্বক ইয়াক স্বীকাৰ কৰিলে। বাস্তৱ্যৰ ডিজাইনৰ কাম কলা মহাবিদ্যালয়ত অধ্যয়নৰত স্বয়ং সেৱক শা শান্তিনন্দে তৈয়াৰ কৰি দিছিল। যিটো ডিজাইন উপাধ্যায়জীৰ বহুত পছন্দ হৈছিল।

এতিয়া 'বাস্তৱ্য'ৰ গ্ৰাহক বান্ধিবৰ কাম আৰম্ভ হৈ গ'ল। বাৰ্ষিক বৰঙনি দহ টকা, অৰ্ধ-বাৰ্ষিক ছফটিকা আৰু প্ৰতিখনৰ নাম বাৰ এনা (পচুওৰ পইচা)। লাহে লাহে ভাল গ্ৰাহক হ'ব ধৰিলে। বাস্তৱ্যপত্ৰৰ দ্বাৰা তেওঁ শ্ৰী বজৰগে শৰণ ত্ৰিবাৰীক দিয়া হ'ল।

'বাস্তৱ্য'ৰ বাস্তৱ্য, বাস্তৱ্যৰ বাস্তৱ্য গাঁলিও এটা সৰু কোঠাত খোলা হ'ল। সমস্ত কাম নিজিক সমৰ্পিত কৰা কামকৰ্তা শ্ৰী কৃষ্ণ গণপাল কলহৰায়ে ১৯৬৪ খনৰ ৫-৬-৬৪ত মন্দিৰত লগোৱা এই কোঠাটো নিঃশুল্ক ভাৰে দিছিল। কোঠাৰ ভিতৰোৱা বহুৰ মাজত এখন চ'ফাৰ ওপৰত বহুৱাৰ বাবে এখন কুৰীয়া সৰু চেইল, কৰ্ণাট, দেৱাট, কলম আদি। বাস্তৱ্যৰ মুদ্ৰণ কাৰ্যালয়, আৰম্ভ হৈ গ'ল। প্ৰথম প্ৰকাশিত বাস্তৱ্য পত্ৰ ১৯৬৪ খনৰ ৬-৬-৬৪ত প্ৰকাশিত হৈছিল। ১৯৬৪ খনৰ ৬-৬-৬৪ত প্ৰকাশিত হৈছিল। ১৯৬৪ খনৰ ৬-৬-৬৪ত প্ৰকাশিত হৈছিল। আৰু তাত পইচা জমা হ'ব ধৰিলে।

ঘোষনা পত্ৰৰ বাবে সমসাহি দেখা দিলে এবাৰ প্ৰিণ্টিং শ্ৰবণকাৰীৰ মাজত প্ৰচাৰ কৰা হৈছিল। তেতিয়া কঠোৰে 'বাস্থধৰ্ম' ছপাৰ বাবে বাজী হ'ল। পদ প্ৰকাশক শ্ৰী বাসুদেৱাৰ্মৰ পুত্ৰৰ দেৱেন্দ্ৰ চৌধুৰীয়ে দাবোগাই অহি সোধ পোচ কৰিবলৈ তেতিয়া তেওঁ অলপ চকুবাঁল কৰিছিল। তেওঁৰ পৰিদেও ডাঙৰ, অকল বাপোৰ দোকানখনেৰে ভালদৰে চলাব নোৱাৰে, সেইবাবে ইংৰাজৰ এটা বাবসাহ কৰিবলৈ ওলাইছে। তেখেতৰ কথাও দাবোগা-অম্বুই হৈ গ'ল, তেওঁৰ পৰিচালনা দিলে তেতিয়া হে ঘোষনা-পত্ৰ প্ৰচাৰ কৰা হ'ল।

'বাস্থধৰ্ম'ৰ প্ৰকাশন লেখনিৰ বাবে দেশৰ বিভিন্ন প্ৰান্তৰ বিদ্বান, কবি আৰু প্ৰশাসন প্ৰমুখৰ ওচৰত অটলজীয়ে পত্ৰ লিখিবলৈ ধৰিলে। প্ৰচুৰ মণ্ডিত লেখনি আহিব ধৰিলে তেওঁৰ পৰা ভাল ভাল লেখনিবোৰ চাই চয়ন কৰা হ'ল। দেৱেন্দ্ৰজী আৰু ভাৰতৰ জাৰ কঠোৰ নিৰ্দেশ প্ৰথম পৃষ্ঠাৰ অটলজীৰ 'হিন্দু জন মন, হিন্দু জন কন' কবিতাটো দিয়া হ'ল। সংখ্যাচ স্তম্ভৰ অটলজীয়ে বৰদণ্ড প্ৰথম পৃষ্ঠাত কবিতাটো দিব বিচাৰ নাছিল।

প্ৰেছ কৰ্পোৰেছৰ কাম আৰম্ভ হৈ গ'ল। গুলী পুফ চাহ কেঁচুৱাৰ দিহা পুফ প্ৰয়োজনে তৃতীয় পুফ ওলোৱা হ'ল। পুফ চোৱাত অটলজীয়ে ইমান সাৱধান হৈছিল যে, চকুবাঁদু কমলৈকে ভুল হ'বলৈ দিয়া নাছিল। অটলজীৰ দুটাবিধ 'সৰ' বাবে প্ৰথম সংখ্যাতেই তিনি হাজাৰ কপি ছাপোৱা হ'ল, আৰু মঁচাহ বিভিন্ন স্থানৰ পৰা কপিৰ চাহিদা আহিব ধৰিলে। পাছত উপাধ নাগাই আৰু পাঁচশ কপি ছপাই গ্ৰন্থকৰ হাতত পঠাই দিয়া হ'ল। 'বাস্থধৰ্ম' সাহিত্যিক, সাংস্কৃতিক ক্ষেত্ৰ আৰু ব্যক্তিগীৰ মাজত খুবই চৰ্চিত হ'ল।

সংখ্যাটোৰ পৰম্পৰে আদি জগতগুৰু শঙ্কৰাচাৰ্যৰ বহু গীত আৰু কবিতা এখন দিয়া হৈছিল। তাৰ পাছত অটলজীৰ কবিতাটো। এই কবিতাটোৰ পাছত পূজা গুৰুজীৰ লেখা 'হামাৰা বস্তুবাদ' ছপা হৈছিল। 'মুছলিম ৰাজ্য: বীজ বিকাশ আৰু ফল' শীৰ্ষক অটলজীৰ লিখনি পৃষ্ঠা ১৮ত হৈছিল। ৰাজীৱ গান্ধীৰ উপন্যাস 'শকাৰি বিলম্বিতা' ধাৰাবাহিক ৰূপে ওলাইছিল।

তেওঁলোক বাদে আন গনমান্য লেখক সকল হ'ল সৰ্বদা ৰাজাৰাম দৰিড্ৰ, নাৰায়ণ ৰাৱ তৰটে, আচাৰ্য লক্ষ্মীকান্ত শাস্ত্ৰী, ৰ. গ. বৰ্মা আদি।

'বাস্থধৰ্ম'ৰ আশাত 'ত সফল' কমিউনিষ্ট সকলৰ প্ৰথম ভাৰ্ণা গ'ল।

'বাস্থধৰ্ম'ৰ প্ৰবেশাঙ্ক সম্পৰ্ক পঠকৰ পৰা বহুত প্ৰশংসা পত্ৰ আহিব ধৰিলে। তেওঁৰ উত্তৰ অটলজীয়ে বাঁও বাঁও জাগ দিবলৈ ধৰিলে। চাঁওতে চাঁওতে দিহা অক্ষৰ পৰিচালনা আৰম্ভ হ'ল। প্ৰকাশ কৰিব পৰা লেখনি আগৰ পৰাই প্ৰস্তুত হৈ আছে। এই সংখ্যাটোৰ দুই হাজাৰ কপি ছাপোৱা হ'ল। এটা সৰু/প্ৰচুৰ ২২২ কপি ছপোৱা হৈছিল। অলপ অসুবিধা হৈছিল। ভাৰ্ষিক ২২ অ. প. অসুবিধা অনুভৱ কৰিছিল। সেইবাবে তেওঁলোক অসুবিধা দেখি উপাধ নাগাই নিৰ্দেশ দিলে। নিজস্ব প্ৰেছ এটা বহুৱাৰ বাবে স্থিৰ কৰিলে।

পশ্চিম বঙ্গৰ দাবোগাই পুৰণি প্ৰেছ এটা বিচাৰিব ধৰিলে। সেইবাবে ১৯২২ চনত

প্ৰেছ ২৩ লগা বুলি শাসনৰ ওপৰে পৰা মানা আছিল। লক্ষ্মীৰ বাবুপুত্ৰ মোহনলাল 'ভাৰত প্ৰেছ' কৈ প্ৰেছ ২৩ ওলাল। প্ৰেছৰ মোচন আদি ভালেই আছিল। কিন্তু এই টোডল মোচনটো বৈজ্ঞানিকৰে চলাব পৰা নাছিল। হাতৰেই চকা ঘূৰাব লগা হৈছিল। এনেকুৱা হোৱা সত্ত্বেও সময়তে পত্ৰিকাখন ওলোৱাৰ বাবে সাধাৰণ হাজাৰ টকাত প্ৰেছটো কিনা হ'ল। এতিয়া 'ৰাষ্ট্ৰধৰ্ম'ৰ নিজস্ব বৰীয়াটো প্ৰেছ এটা হ'ল।

'ৰাষ্ট্ৰধৰ্ম'ৰ দ্বিতীয় সংখ্যা অৱশ্যে প্ৰিণ্টিং প্ৰেছতেই ছাপা হ'ল। অটলজীয়ে এই সংখ্যাটোক ধুনীয়া কৰিবৰ বাবে অধিক যত্নশীল হৈছিল। পাছদত সিংহগড়ৰ চিহ্ন দিয়া হৈছিল। বিজয়া দশমী উপলক্ষে ৰাষ্ট্ৰধৰ্মত এখন যোদ্ধা পৃষ্ঠাৰ বিশেষ সংখ্যা ছপাই উলিওৱা হৈছিল। নতুন প্ৰেছ সম্বন্ধে অটল জীয়ে ক'ব দীনদয়াল জীয়ে নিজেই প্ৰেছৰ সকলো কাম শিকিছিল আৰু আমাকো শিকাইছিল। হিন্দী বিকাশৰ বাবে তেওঁ প্ৰেছৰ টেকনিকেল শব্দবিলাকৰ হিন্দী ৰূপান্তৰ কৰিছিল আৰু উপযোগ কৰাইছিল।

'ৰাষ্ট্ৰধৰ্ম'ৰ অপ্ৰকাশিত সফলতাও উৎসাহিত হৈ পণ্ডিত দীনদয়াল জীয়ে 'পাক্‌জনা' নামৰে সাপ্তাহিক এখন প্ৰকাশ কৰিবলৈ হিব কৰিলে। এতিয়া 'ৰাষ্ট্ৰধৰ্ম' সম্পাদনাৰ কাৰ্য শ্ৰী ৰাজীৱ লোচনৰ ওপৰত আৰু 'পাক্‌জনা' সম্পাদনাৰ ভাৰ অটলজীৰ ওপৰত দি দিলে। পৰিণামত সদৰবাৰী 'ভাৰত প্ৰেছ' তেই ছপা হৈছিল।

এই সময়তেই মহাত্মা গান্ধীক হত্যা কৰা হ'ল। কংগ্ৰেছে ৰাষ্ট্ৰীয় সেৱক সংঘৰ 'দিন দুগুনী, ৰাত চৌগুনী' হিচাবে জ্বলি আহিলেই, সেইবাবে সুযোগ চাই সংঘৰ ওপৰত প্ৰতিবন্ধ লগাই দিলে। দেশজুৰি সংঘৰ লোকক বিচাৰি বন্দী কৰা হ'ল। ভাৰত প্ৰেছও চৰকাৰী তলা লগোৱা হ'ল। শ্ৰী দীনদয়ালজী, নানাজী আদিক জেলত ৰখা হ'ল। অটলজী সুযোগ চাই ভূমিগত হ'ল।

অটলজী লাহেকৈ এলাহাবাদ গৈ পালে। আৰু তাত শ্ৰী ৰামৰত্ন সিঙ সয়গলৰ ইংৰাজী সাপ্তাহিক 'এন'ৱ'স'ত কাম কৰিবলৈ ধৰিলে। সয়গলজীয়ে 'কমযোগী' নামেৰে মাহেকীয়া এখনো উলিয়াই আছিল। অটলজী কেইমাহ মান তাৰো সম্পাদক হৈ আছিল।

ৰাষ্ট্ৰীয় স্বয়ং সেৱক সংঘৰ ওপৰত পৰা প্ৰতিবন্ধক আতৰোৱাৰ পাছত দীনদয়াল, নানাজী আদিক জেলৰ পৰা মুক্তি দিলে। অটলজীয়ে এই খবৰ পায় তাৰ পৰা পোনে পোনে আহি ভাৰত প্ৰেছ পালে। ৰাষ্ট্ৰধৰ্ম আৰু পাক্‌জনা পুনৰ প্ৰকাশিত হ'ব ধৰিলে। পাক্‌জনাব মধ্যমেদি অটলজীয়ে ৰাইজৰ মাজত থকা বিশ্ৰান্ত আতৰাবলৈ চেষ্টা কৰিলে। ৰাষ্ট্ৰীয় স্বয়ং সেৱক সংঘৰ ভূমিকাক তৰ্কপূৰ্ণ চিন্তাও প্ৰস্তুত কৰি অটলজীয়ে জনমানসত সঠিক পথ দেখুৱাই দিলে। পৰিণামত ৰাইজে এই কথা গম পালে যে সংঘৰ বিৰুদ্ধত থকা কংগ্ৰেছ চৰকাৰ অকল নিজস্ব ৰাজনৈতিক হিত কৰণে হৈ ইতিমধ্যে সংঘৰ ওপৰত পৰা প্ৰতিবন্ধক আতৰোৱাৰ সম্বন্ধত সম্বন্ধিত 'পাক্‌জনা'ৰ এখন বিশেষ সংখ্যা উলিয়ালে। এই অংকটো প্ৰস্তুত কৰণত অটলজীয়ে দিন ৰাতি এক কৰি

দিলে খোৱাৰ, শোৱাৰ সকলো চিন্তা পাৰি গ'ল। অকল বিশেষ সংখ্যাটো কেনেকৈ ভাল কৰিব পাৰে তাৰে চিন্তাত ব্যস্ত হ'ল।

ভাৰত প্ৰেছৰ পৰা যেতিয়া ৰাষ্ট্ৰধৰ্ম আৰু পাক্ষজন্য ওলাইছিল, তেতিয়া এওঁ এটাই 'হল' আছিল। এই হলটোতেই প্ৰেছ টাইপৰ ৰেক, বাইণ্ডাৰৰ ঠাই আৰু চুক এটাও সম্পাদক বহিবলৈ ঠাই আছিল। তুলনামূলক ভাৱে ঠাই কম আছিল। এইবোৰ অসুবিধা সত্ত্বেও ৰাষ্ট্ৰধৰ্মৰ প্ৰভাৱে সকলোৰে ওপৰত আঁচ পেলাইছিল। সেইবাবে যি কোনো পৰিস্থিতিতেই কাম কৰিবলৈ প্ৰস্তুত হৈ আছিল, অভাৱৰ কাৰণত কেতিয়াবা কেতিয়াবা পণ্ডিত দীনদয়ালজী আৰু অটলজী মাটিতেই পাটি পাৰি মূৰত ইটা লৈ শুইছিল। সেই পুৰণিদিনৰ কথা মনত পৰিলে এতিয়াও চকু পানী ওলায়।

আৰম্ভণিত কংগ্ৰেছৰ সদস্যবিলাকে এনেকুৱা চাল চলাইছিল, যি কোনো উপায়ে ৰাষ্ট্ৰধৰ্মৰ প্ৰকাশন যাতে বন্ধ হয়। কিন্তু ঈশ্বৰ সহায়, পণ্ডিত দীনদয়ালজীৰ সু-চিন্তাই তেওঁলোকৰ কুঅভিসন্ধি বাৰ্থ কৰি দিলে। শ্ৰী কাপুৰজীয়ে কয়- কংগ্ৰেছী সকলে কেবাবাৰো মিছা মোকদ্দমা ওঠাইছিল। কিন্তু তেওঁলোকৰ আত্মবিশ্বাসৰ কাৰণে একো কৰিব নেৱাৰিলে। অতীতৰ সেই সৰু প্ৰকাশনই আজি ৰাজেন্দ্ৰ নগৰৰ বিশাল ভৱনত (ভাৰতী ভৱনত) 'ৰাষ্ট্ৰধৰ্ম' আৰু লগতে এই অনুষ্ঠানে অনেক কিতাপ প্ৰকাশিত কৰি আছে।

বাস্তৱত নলা এটাক বন্ধ কৰিব পাৰি, কিন্তু গতিশীল নদী এটাক বন্ধ কৰি থোৱাৰ ক্ষমতা কাৰোৰ নাই। ৰাষ্ট্ৰীয় স্বয়ং সেৱক সংঘৰ ৰাষ্ট্ৰ নিৰ্মাণ বিচাৰধাৰাত ওতপ্ৰোত এই স্বয়ং সেৱী সকলক এজন নহয় শত শত কংগ্ৰেছে ও বাধা দিব নে'ৱাৰে। আচল ৰাষ্ট্ৰভক্তি তেখেতলোকৰ মাজত, তেওঁলোকৰ তেজৰ এটা এটা ফুটা জন্মভূমিৰ তিলক লগোৱাৰ বাবে সদায় তৎপৰ। তেওঁলোক জীয়াই থাকে ৰাষ্ট্ৰৰ বাবে আৰু তেওঁলোক মৰে ৰাষ্ট্ৰৰ বাবে হে।

১৯৯৬ চন 'পাক্ষজন্য'ৰ স্বৰ্ণ জয়ন্তী বৰ্ষ। এনেকুৱা শুভ অৱসৰত মাননীয় অটলজীয়ে সম্বোধন ভাষণত এনেকৈ কৈছিল - পাক্ষজন্য নিজস্ব প্ৰকাশনত ৪৯ বছৰ পূৰ্ণ কৰি আজি স্বৰ্ণ জয়ন্তী মহোৎসৱত ভৰি দিলে। এহঁটো সকলোৰ বাবে সুখৰ কথা।

সকলো সৌভাগ্যবান মানুহৰ ভিতৰত ময়ো এজন। যিহেতু পাক্ষজন্যৰ প্ৰসৰ পীড়াৰ পৰা আৰম্ভ কৰি ইয়াৰ প্ৰকাশন আৰু তেওঁলোকৰ উত্তৰোত্তৰ উন্নতিৰ সাক্ষী আৰু ভাগীদাৰ হৈ আছোঁ।

আজি মোৰ পাক্ষজন্য প্ৰকাশনৰ প্ৰেৰণাদাতা শ্ৰী ভাউবাৰ দেববৰুৱা, পৰামৰ্শদাতা আৰু মাৰ্গদৰ্শক শ্ৰী দীনদয়াল উপাধ্যায়জীৰ কথা মনত পৰে। যি সকলৰ দ্বাৰা লগেৰে বাঁজ। আজি অন্য মিত্ৰবিলাকৰ সহায়তাই ডাঙৰ গছত পৰিণত হ'ল। যি গছৰ ছাঁই পূৰ্বা ভাৰতীয় প্ৰগতিবিপ্লৱত প্ৰভাৱিত কৰি আছে। মই পাক্ষজন্যৰ সকলো সম্পাদক, প্ৰবন্ধক, কৰ্মচাৰী প্ৰকাশনৰ লগত জড়িত সকলো মিত্ৰক আন্তৰিক শুভেচ্ছা জ্ঞাপন কৰিছোঁ। এই সকলোৰে অশেষ পৰিশ্ৰম, আজি

সাৰ্থক হৈছে।

ৰাষ্ট্ৰধৰ্ম আৰু পাঞ্চজন্যৰ আশাতীত সফলভাৱে দীনদয়ালজীক - নতুন এখন দৈনিক উলিয়াবলৈ প্ৰেৰণা দিলে দৈনিকখনৰ নাম থে'ৱা হ'ল- দৈনিক 'স্বদেশ' অটলজীক তাৰ প্ৰথম সম্পাদক পতা হ'ল। মাহেকীয়াৰ পৰা সাপ্তাহিক, সাপ্তাহিকৰ পৰা দৈনিক। কম বাৰি গৈ থাকিল যিদিনা দৈনিক 'স্বদেশ' পত্ৰিকাৰ উদ্বোধন সমাৰোহ হ'ল, সেইদিনটো লক্ষ্মী নগৰৰ বাবে ঐতিহাসিক দিন এটা আছিল। কিয়নো হিন্দী পত্ৰকাৰিতাৰ ভীষ্ম পিতামহ পণ্ডিত আৰু প্ৰসাদ বাজপেয়ী, ড° ৰাধাকৃষ্ণ মুখাৰ্জী আৰু ড° দীনদয়াল গুপ্ত আদি গুণীজন উপস্থিত আছিল। এই পত্ৰিকাখন দুবছৰ ধৰি খুব ভালেই চলিছিল। সেই সময়ত বহু ধনী ব্যক্তিয়ে অটলজীক তেওঁলোকৰ পত্ৰিকা সম্পাদনৰ বাবে আমন্ত্ৰণ জনাইছিল। কিন্তু আদৰ্শবাদী অটলজীয়ে সকলোৰে আমন্ত্ৰণ প্ৰত্যাখ্যান কৰিছিল।

অটলজী কেইদিনমান কাশীৰ পৰা প্ৰকাশিত 'চেতনা'ৰ সম্পাদক হৈ আছিল, যিখনে পাঠক বৃন্দ বিশেষকৈ বুদ্ধিজীৱী মহলত অনেক সমাদৰ পাইছিল। এইখন ও ৰাইজৰ মাজত ৰাষ্ট্ৰপ্ৰেমৰ লহৰ তুলিছিল।

দিল্লীৰ পৰা প্ৰকাশিত হোৱা মহত্বপূৰ্ণ পত্ৰিকা 'বীৰ অৰ্জুন' (দৈনিক আৰু সাপ্তাহিক) তাতো অটলজী সম্পাদক আছিল। সম্পাদন ক্ষেত্ৰত অনুভৱ পৰিপক্কতা, বিচাৰত পৰিদৰ্শিতা, ভাষাৰ স্বচ্ছতা, প্ৰস্তুতিত নিৰীকতা আৰু ৰাষ্ট্ৰবাদী চিন্তনৰ প্ৰধানতা আদি কাৰণত 'বীৰ অৰ্জুন'ৰ সম্পাদকীয় কলমে পাঠকক আকৃষ্ট কৰাৰ লগতে নতুন আশাৰ সঞ্চাৰ কৰিছিল। সেইবাবে ৰাইজে পত্ৰিকাখন হাতত পৰাৰ লগে লগে আগতে সম্পাদকীয় পঢ়িহে পাছত বেলেগ খবৰ পঢ়িছিল।

১৯৫০ চনত, ৰাজৰ্ষি পুৰোষোত্তমদাস টগুনজীয়ে লক্ষ্মীত হিন্দী সাহিত্য সম্মেলনৰ ৰাষ্ট্ৰীয় অধিবেশনৰ আয়োজন কৰিছিল। সভাপতি পণ্ডিত কমলাপতি ত্ৰিপাঠী, স্বাগতাত্মক শ্ৰী চন্দ্ৰভানু গুপ্ত আৰু অটলজীক উপ স্বাগতাত্মক পদত অধিষ্ঠিত কৰা হৈছিল।

অধিবেশনৰ প্ৰস্তুতি আৰু প্ৰচাৰ কাৰ্য অটলজীৰ হাতত দিয়া হৈছিল। তেখেতে নগৰৰ কোনো কোনো গৈ ডেকাসকলক লগ ধৰি প্ৰচাৰ কাৰ্য চলাইছিল। চাইকেলৰ সমাৰোহ ওলাইছিল, পেম্পপ্লেট বিলাইছিল। লক্ষ্মীৰ অলি গলিত হিন্দী জাগৰণৰ টো উঠিছিল।

অধিবেশনখন কেসৰবাগৰ ঐতিহাসিক বাৰাদৰীত অনুষ্ঠিত হৈছিল। এই অধিবেশনত ভাগ লবৰ বাবে দূৰ দূৰৰ পৰা প্ৰতিনিধি আহিছিল। বেলেগ প্ৰদেশৰ প্ৰতিনিধি থাকিবৰ বাবে ভাল ব্যৱস্থা কৰা হৈছিল। অধিবেশনৰ মুখ্য কৰ্ম ক্ৰমৰ স্বাগত ভাষণ অটলজীয়ে দিছিল। এই ভাষণক ৰাইজে সমাদৰ জনাইছিল।

লক্ষ্মীৰ পৰা ৫০ কিঃ মিঃ দূৰত সফীলৈ খেন ঠাই য'ত অটলজীয়ে সংঘৰ সিন্ধুৰক কপে কেইদিনমান আছিল গৈ। তাৰ ধৰ্মশালাৰ এটা কোঠাত থাকি সংঘৰ কাম কৰিছিল। তাতেই

তেওঁ শীঘ্ৰেই শিৱপাঠীৰ লগত চিনাকি হৈছিল যিজনক পিছত অটলজীয়ে ৰাষ্ট্ৰধৰ্মৰ কামৰ বাবে মাৰ্তিছিল। তাত থাকোঁতেই অটলজীৰ খুব বেয়াকৈ অসুখ হৈছিল।

(৭)

সমগ্ৰ দেশজুৰি ৰাষ্ট্ৰীয় স্বয়ং সেৱক সংঘৰ বিস্তাৰ দিন-প্ৰতিদিন বাঢ়িবলৈ ধৰিলে। কংগ্ৰেছৰ জ্বলন এই সংস্থায় নিজস্ব বিচাৰধাৰাৰ বাবে মানুহৰ মন আকৰ্ষিত কৰিলে। গান্ধীজীৰ হত্যাৰ সময় কংগ্ৰেছৰ ভাল সুযোগ মিলিলে আৰু চৰকাৰে ৰাষ্ট্ৰীয় স্বয়ং সেৱক সংঘৰ উপৰ প্ৰতিৰুদ্ধ লগাই দিলে।

সেই সময়ত ৰাষ্ট্ৰীয় স্বয়ং সেৱকৰ হৈ কথা কবলৈ লোকসভাত কোনো নাছিল। সংঘৰ ৰবিষ্ট স্বয়ং সেৱক সকলে এইটো বিষয়লৈ গভীৰ ভাবে বিচাৰ বিমৰ্শ কৰিলে। পাছত নিশ্চয় হল ৰাষ্ট্ৰীয় স্বয়ং সেৱক সংঘৰ নিজস্ব এটা ৰাজনীতিক দল থিয় কৰাৰ, যিটো দলে নিৰ্বাচনত ভাগ লব পাৰে। অন্ততঃ ডাঃ শ্যামাপ্ৰসাদ মুখাৰ্জীৰ নেতৃত্বত 'ভাৰতীয় জনসংঘ' নামেৰে এটা নতুন দল গঠন কৰা হল অটলজী ভাৰতীয় জনসংঘৰ সংস্থাপক সদস্য।

২১ অক্টোবৰ ১৯৫১ চন, দিল্লীত ভাৰতীয় জনসংঘৰ প্ৰথম অধিবেশন অনুষ্ঠিত হল।

১৯৫২ চনত লোকসভা নিৰ্বাচন হল, তাত ভাৰতীয় জনসংঘৰ প্ৰত্যাশী থিয় হল। ইমান সফলতা নাপালে যদিও এই নিৰ্বাচনৰ পাছত ৰাজনীতিক দল হিচাবে মান্যতা পালে। তেতিয়া তেওঁলোকৰ নিৰ্বাচন চিহ্ন আছিল জ্বলোৱা চাকি (দীপক)।



ভাৰতীয় জনসংঘৰ বুৰা
সংস্থাপক সদস্য (১৯৫০)

অটলজীয়ে এই কথাটো স্পষ্টকৈ কয় আছে জনসংঘত 'হিন্দু ৰাষ্ট্ৰ প্ৰয়োগ' বৰ্জিত নহয় ৰাষ্ট্ৰীয়তা সন্দৰ্ভত আমালোকৰ 'ভাৰতীয়' আৰু 'হিন্দু' পৰ্যায়বাচী শব্দ। আমাৰ মান্যতা ভাৰত এখন প্ৰাচীন ৰাষ্ট্ৰ। আমি কোনবা নতুন ৰাষ্ট্ৰ গঢ়িবলৈ নাযাও, এই প্ৰাচীন ৰাষ্ট্ৰকে সুদৃঢ়, সমৃদ্ধ আৰু আধুনিক ৰূপ দিব লাগে।

অটলজী দেশভক্তিৰ প্ৰতি উদ্যম ভাৱনাত প্ৰেৰিত হৈ আৰু ডাঃ শ্যামাপ্ৰসাদ মুখাৰ্জীৰ সন্দিগ্ধাৱস্থাত কাশ্মীৰত অস্বাভাবিক মৃত্যুত আহত হৈ তেওঁ স্থিৰ কৰিলে তেখেতৰ দেবুৱা পথ প্ৰশস্ত কৰিবলৈ মনত ৰাখিছিল সম্পাদক নহয় অধ্যাপক হবলৈ, কিন্তু ৰাষ্ট্ৰৰ আহ্বানত

তেওঁ ৰাজনীতিৰ কণ্টকময়, ওখ চাপৰ দুখ পথলৈ আগবাঢ়িব বিবিলে।

২৩ জুন, ১৯৫৩ চনত যোঁতয়া ডাঃ শ্যামাপ্ৰসাদ মুখাৰ্জীক বহুসাময় চৰ্চাত মুক্ত ঘোষিত কৰা হ'ল। তেওঁতয়া অটলকৈ যি খুব কান্দিছিল। কিয়নো ডাঃ চাইবে বৰ্ণনাদানৰ পথত আহিবলৈ



ডাঃ শ্যামাপ্ৰসাদ মুখাৰ্জী

আত্মদান কৰোৱাও কৰোৱাও নিজেই বৰ্ণনাদান দিয়াও বৰ্ণনাই পল তেওঁক গ্ৰেপ্তাৰ কৰাৰ পাছত শ্রী নগৰলৈ লৈ যোৱা হৈছিল। ২৩ জুন ৰাতি তেওঁক মুক্ত ঘোষিত কৰা হৈছিল। বিভাজিত ভাৰতৰ একতা বক্ষাৰ বাবে তেওঁ স্বত্বৰ সৈতে নিজকে বৰ্ণনাদান দি অমৰ হৈ ব'লে।

১৯৫৭ চন, দ্বিতীয় লোকসভা নিৰ্বাচনত ভাৰতীয় জনসংঘই ৰাজনীতিৰ ময়দানত নামিবলৈ হৈ বৰ্ণনালে। তেওঁলোকে লক্ষ্মী, মথুৰা আৰু বলৰামপুৰ (জনপদ গোণ্ডা, উত্তৰ প্ৰদেশ) এই তিনিখন ঠাইত প্ৰত্যাশী ঠিক কৰিলে। নিৰ্বাচন হ'ল লক্ষ্মী আৰু মথুৰাত তেওঁলোক পৰাস্ত হ'ল, কিন্তু বলৰামপুৰত তেওঁলোক

জিকিল, গতিকে লোকসভাৰ সদস্য নিৰ্বাচিত হ'ল।

১৯৫৭ চনত তেওঁকে দৰি জনসংঘৰ চাৰিজন সদস্য হৈছিল। পাৰ্টিৰ হৰদেইৰ সুৰক্ষিত চিটীৰ পৰা বিজয় পালে। বাকী বেলগ দুটা শ্রী ভট্টম বাব পাৰ্টি আৰু শ্রী প্ৰমজী ভাই আসৰ মহাৰাষ্ট্ৰৰ পৰা নিৰ্বাচিত হৈছিল। মহাৰাষ্ট্ৰত বিপক্ষী দল সংযুক্ত মহাৰাষ্ট্ৰ নিৰ্মাণৰ বাবে সংযুক্ত সংঘৰ্ষ কৰি আছিল। জনসংঘৰ সেই সংঘৰ্ষত সংযোগ আছিল। শ্রী ভট্টম বাব পাৰ্টিৰ ধূলিখা আৰু প্ৰমজী ভাই আসৰ ৰত্নাগিৰিৰ পৰা নিৰ্বাচিত হৈছিল। শ্রী পাৰ্টি এডভোকেট আৰু শ্রী প্ৰমজী ভাই আসৰ বাৰমাবী আছিল। এনেকুৱা জনসংঘৰ চাৰিজন সদস্যই একদৃষ্টিত গোটেই সমাজৰ প্ৰতিনিধিত্ব কৰিছিল।

১৯৫৭ চনৰ নিৰ্বাচনৰ পাছত শ্রী আবাহনলাল নেহেৰুৰ নেতৃত্বত যি মন্ত্ৰী মন্ত্ৰল গঠন কৰা হ'ল তাত আবুল কালাম আজাদ, শ্রী গোবিন্দ বল্লভ পণ্ট, শ্রী মোৰাৰজী দেসাই আৰু শ্রী জগজীবন বামৰ নিচানা মূৰ্খনা নেতা সোমাই আছিল। শ্রী কৃষ্ণ মেননজীও তাত মন্ত্ৰী আছিল। প্ৰতিপক্ষত আৰ্চাৰু কপালানী, শ্রী পদ অমৃত ডায়ে, শ্রী নাৰায়ণ গনেশ গোৱে, প্ৰমুখৰ হীৰেন মুখাৰ্জী আৰু শ্রী মনু মসান'ৰ নিচানা কুশল সাংসদ থকা ৰাজনেতা উপস্থিত আছিল। শ্রীমত বিজয়ৰাজে সিদ্ধিমা যি আজ বিজেপৰ ভোষ্ট নেতা তেওঁতয়া বংশেই আছিল। তেওঁসকল বাদে শ্রীমত সূৰ্য্যত কপালানী, কুং পাৰ্বতা কুমৰ, শ্রীমত আবাকেশ্বৰী সিনহা সদনত সক্রিয় আছিল আৰু চৰ্চাত মহাপূৰ্ণ যোগদান দিছিল।

ভাৰতীয় জনসংঘৰ চাৰিজন সদস্য প্ৰত্যক্ষভাৱে বাবে যোঁতয়া সংসদত আহিছিল, তাৰ পৰা কোনোও বিধান সভাৰ সদস্য নাছিল। সংখ্যা কম হোৱাৰ বাবে সকলো সদস্যক সদনত



পিছৰ বেঞ্চত ঠাই দিছিল। তাত বহি লোকসভাৰ অধ্যক্ষৰ নজৰত পৰা কঠিন কাম আছিল। বিভিন্ন বিষয়ৰ ওপৰত চৰ্চাৰ সময় পাৰ্টি বিলাকৰ সংখ্যাৰ অনুসৰত হে পোৱা হৈছিল। সকলো সদস্য সকলক কোৱাৰ সময় আগতে ও আৰু আঁজ ও তেনেকৈ দিয়া নহয়। সেইবাবে ভাৰতীয় জনসংঘৰ বাবে অলপ কোৱাৰ সময় পোৱা কঠিন কাম আছিল। পাৰ্টিৰ ভাগত বৰ বেছি দুই চাৰি মিনিট সময় হে পোৱা হৈছিল। সময় নোপোৱাৰ বাবে অটলজীয়ে বিৰোধী পক্ষ হিচাবে এবাৰ সদন ত্যাগ কৰিছিল। এনেকুৱা হোৱা সত্ত্বেও জনসংঘৰ সদস্যসকলে পোৱা সময় খিনিৰ সম্পূৰ্ণ লাভ উঠাবলৈ প্ৰয়াস কৰিছিল।

সংসদ সদস্য ৰূপত অটলজী এজন মুখৰ কিন্তু সংঘত বক্তা। যেতিয়া সংসদত তেওঁলোকৰ মাত্ৰ চাৰিজন সংসদ আছিল, এই চাৰিজনৰেই চৰ্চাৰ বৰাবৰ আছিল। অটলজীয়ে যেতিয়া তেওঁৰ ভাষণ আৰম্ভ কৰে তেতিয়া সকলোৱে তেওঁৰ সেই ভাষণত গভীৰ মনযোগ দিছিল। স্বয়ং প্ৰধানমন্ত্ৰী পণ্ডিত জৱাহৰলাল নেহেৰুৱেও খুব মন দি শুনিছিল। আন্তৰাষ্ট্ৰীয় বিষয়ত অটলজীয়ে পৰ্যাপ্ত ৰুচি ৰাখিছিল। সমস্যা বিলাকৰ বিশ্লেষণ যেনেকুৱা তৰ্কপূৰ্ণ শৈলীত উপস্থাপনা কৰিছিল, তাৰে প্ৰশংসা বিৰোধী পক্ষইও কৰিছিল। সেইবাবে তেওঁ যেতিয়া ভাষণ আৰম্ভ কৰিছিল, সকলো সদস্য সদনত উপস্থিত হবলৈ চেষ্টা কৰিছিল। তেওঁৰ ভাষণত চুহকীয় ক্ষমতা আছিল।

(৮)

তৃতীয় লোকসভাৰ বাবে অটলজী আকৌ বলৰামপুৰৰ পৰা নিৰ্বাচনত খিৰ ২ নং কিন্তু চূড়ান্ত ফল যন্ত্ৰৰ বাবে হাৰিব লগা হ'ল। তেখেতৰ এই পৰাজয় গুনি বহুতৰ বিদ্বেষ নহ'ল। তেতিয়াৰ দিনত অটলজী ভাৰতীয় জনসংঘৰ প্ৰবক্তা আছিল। তেখেতৰ ভাষণ, বিচাৰ

আৰু প্ৰচাৰ ক্ষমতাৰ বাবে পাৰ্টিৰ জনপ্ৰিয়তা আৰু বাৰ্চল। পাৰ্টিৰ এনেকুৱা লোকপ্ৰিয়তা চাহ বেলেগ ৰাজনৈতিক দলবিলাকৰ সঁচা হবলৈ ধৰিলে। বিৰোধী দলবিলাকে মিলি ধ্বংস কৰিলে অটলজীক যি কোনো প্ৰকাৰে পৰাজিত কৰাব লাগে। কংগ্ৰেছী সকলে বামপন্থী সকলৰ লগত মিলি সঁচাই মিছাই মিথ্যা প্ৰচাৰ আৰম্ভ কৰিব ধৰিলে। টকা পইচাৰ অভাৱ তেখেত সকলৰ নায়েই কিন্তু জনসংঘৰ অভাবেই অভাৱ। এনেকুৱা হৈয়ো জনসংঘৰ কাৰ্যকৰ্তাই অলপৰ বাবেও হতাশ হোৱা নাই। অটলজীয়ে নিজৰ ক্ষেত্ৰৰ জনতাৰ সেৱা কৰিলে, লগতে জনসংঘক ৰাষ্ট্ৰীয় স্তৰত উন্নীত কৰিলে, সেইবাবে লোকৰ ধাৰণা আৰু পুৰা বিশ্বাস হল যে এদিন তেওঁলোকৰ বিজয় নিশ্চয় হ'ব।

অটলজীৰ বাবে বলৰামপুৰত কংগ্ৰেছৰ প্ৰতিষ্ঠা প্ৰশ্ন চিহ্ন হৈ থাকি গল। প্ৰায়ে কোনো কংগ্ৰেছৰ ডাঙৰ নেতা তালৈ আহি ৰাষ্ট্ৰীয় স্বয়ং সেৱক সংঘ আৰু ভাৰতীয় জনসংঘৰ বিৰুদ্ধে উদ্ভেজনাৰ্থক ভাষণ দি থাকে। এনেকৈ মতদানৰ দিন ওচৰ চাপিলত উত্তৰ প্ৰদেশৰ কংগ্ৰেছ পাৰ্টিয়ে দেখিলে তেওঁলোকৰ প্ৰত্যাহ্বানৰ অৱস্থা ঠিক নহ'ব। সেইবাবে বিশেষ ৰূপত নেত্ৰকজীক তাত অনা হল। তেওঁ তেখেতৰ মৰ্যাদা অনুৰূপ ভাষণ দিলে। তেওঁৰ তেখেতৰ ভাষণত এনেকুৱা কৈয়ো কলে যে ভাৰতীয় জনসংঘত কেইজনমান ভাল মানুহও আছে। এই বাক্য অটলজীক উদ্দেশ্য কৰিহে কৈছিল। আৰু এই বাক্যই অটলজীক সহায়তা কৰিলে। বলৰামপুৰৰ জনতাই ভালকে গম পালে যদি অটলজী ইয়াত থিয় নহলহেঁতেন, নেত্ৰকজী কোঁতয়াও ইয়ালৈ নাহিলেহেঁতেন। তাৰ মানুহে অনুভৱ কৰিলে অটলজীৰ ব্যক্তিগত ৰাষ্ট্ৰীয় স্তৰত, সেইবাবে নেত্ৰকজী তালৈ আহিব লগা হল।

তৃতীয় লোকসভাত ভাৰতীয় জনসংঘৰ বিজয় ভালেই হল। দ্বিতীয় লোকসভাত তেওঁলোকৰ মাত্ৰ চাৰিজনহে সাংসদ আছিল। তৃতীয় লোকসভাত গৈ চৌদুজন পালেগৈ। কম সময়তে জনসংঘৰ এনেকুৱা সফলতাই বেলেগ পাৰ্টি বিলম্বকৈ চিন্তাত পেলালে। তেওঁলোকৰ এই সফলতাত কাৰ্যকৰী সকলে দুগুন উৎসাহেৰে কাম কৰিবলৈ ধৰিলে।

তৃতীয় লোকসভাত প্ৰতিপক্ষৰ নেতাসকলৰ মাজত আচাৰ্য জে. বি. কৃপালানী, ড. বামমোহন লোহিয়া আৰু শ্ৰী মীনু মসানীৰ নিচানা বলিষ্ঠ নেতাসকল সাংসদ হৈ আহিলে। ওপৰত দীনদয়াল উপাধ্যায় আৰু শ্ৰী অটল বিহাৰী বাজপেয়ীৰ অনুপস্থিতি অনুভৱ কৰা হল। তেতিয়া পাৰ্টিয়ে ঠিক কৰিলে ৰাজ্যসভাত অটলজীক মনোনীত কৰাৰ ক্ষমতা এতিয়া সংঘৰ হাতত আছে। সেইবাবে তেওঁক ৰাজ্যসভাৰ প্ৰতিনিধি কৰা হ'ল। ৰাজ্যসভাৰ নিৰ্বাচনত অটলজী বিজয়ী হৈ সংসদৰ ৩৮৮ সদন পালেগৈ। ৰাজ্যসভাত প্ৰবেশৰ বিষয়ে অটলজীয়ে কয় আমি সদনত জনসংঘৰ দুজন সদস্য আছিলোঁ। সভাপতি ড. ৰাধাকৃষ্ণণে শালীনতা আৰু গাৰ্হমা সহকাৰে সদনৰ কাৰ্যবাহী সমতালন আৰু নিয়ন্ত্ৰণ কৰিছিল। তেখেতেৰ পাছত ড. জাকিৰ হুসেইনে পদাটো সম্বালিছিল।

ৰাজ্যসভাৰ সদস্য চয়নত তেওঁলোকৰ যোগদানৰ বিষয়ে অটলজীয়ে কয়, মোৰ অনুভৱ, ৰাজনৈতিক দলবিলাকে ৰাজ্যসভাৰ বাবে সদস্য মাননীয়া কৰোঁ, অধিক সাবধানে কৰিব লাগে। দলৰ বয়োবৃদ্ধ নেতা সকলক ৰাজ্যসভাৰ সদস্য পাতি সন্মানিত কৰিব লাগে। কিন্তু তেওঁলোকৰ অনুভৱ অ'ৰু জ্ঞানৰ দিশতে যোগ্য হোৱা অ'ন আবশ্যক। ৰাজনৈতিক দলবিলাকে সদস্য চয়ন কৰোঁতে সমাজৰ বিভিন্ন বৰ্গৰ পৰা যোগ্য ব্যক্তিসকলক পৰিচালিত নিয়াৰ প্ৰয়াস কৰিলে এফালে যেনেকৈ দল শক্তিশালী হ'ব আনফালে ৰাজ্যসভাখন ভাল মানুহেৰে অলংকৃত হ'ব। সেইবাবে সেনাৰ অৱসৰপ্ৰাপ্ত আধিকাৰী, শিক্ষাবিদ, বেজৰ্গানিক, উদ্যোগপতি, ৰচনা হুক কাৰ্যকৰীৰ যোগদানে ৰাজ্যসভা বাদ-বিবাদ উপযোগী হ'ব পাৰে।

১ মাৰ্চ, ১৯৬৩ চনত ভাৰতৰ প্ৰথম ৰাষ্ট্ৰপতি ড° ৰাজেন্দ্ৰ প্ৰসাদৰ বিয়োগত অটলজীয়ে শ্ৰদ্ধাঞ্জলি অৰ্পণ কৰোঁতে ৰাজ্যসভাত এনেদৰে কৈছিল। সভাপতিজী, মৃত্যুৱে যিজনক আমাৰ পৰা কাঢ়ি লৈ গল, সেইজনৰ কীৰ্তিগাথা কালৰ ইতিহাসত অমিট অক্ষৰত অংকিত থাকিব। সেইজনৰা ৰাজেন্দ্ৰনাথৰ স্মৃতিত মই মোৰ বিনম্ৰ শ্ৰদ্ধাঞ্জলি অৰ্পণ কৰিছোঁ।

চিন্তন মনন, ভাৱ, ভাষা, খেৱা বোৱা, চাল চলন আৰু ৰূপ-ৰঙা ড° ৰাজেন্দ্ৰ প্ৰসাদ ভাৰতৰ সনাতন সংস্কৃতিৰ নিতানতুন প্ৰতিনিধি আছিল। বিদ্বতাৰ লগত বিনয়, শাসনৰ লগত সৌজন্য, বজ্ৰৰ সমান কঠোৰ কিন্তু কুসুম সমান মৃদুল, তেওঁৰ জীৱন ভাবী-সন্তান সন্ততিৰ বাবে সদায় প্ৰেৰণা হৈ থাকিব।

হিন্দী ভাষালৈ যেতিয়া চেলাইত উপদ্রৱ হৈছিল, সেই সময়ত অটলজীয়ে ৰাষ্ট্ৰপতিৰ ভাষণত ধন্যবাদ প্ৰস্তাব দি ৪ মাৰ্চ ১৯৬৫ চনত এনেদৰে কৈছিল - চেলাইত (মাদ্ৰাজত) হিন্দী ভাষাৰ ওপৰত যি উপদ্রৱ হৈছিল, তাৰ বাবে উচ্চস্তৰীয় আদালতী অনুসন্ধান হ'ব লাগে। মোৰ মিত্ৰ শ্ৰী অম্মাদুৰে তেখেতক তামিল ভাষাৰ প্ৰতি অভিমান। মই তেখেতৰ অভিমানক শ্ৰদ্ধা কৰোঁ। কিন্তু তেখেতে পাহৰিব নালাগে অম্মালে'কনো হিন্দী ভাষাৰ প্ৰতি অভিমান আছে। মাদ্ৰাজৰ মানুহে এই শাসনৰ বিৰোধী হ'ব পাৰে। কিন্তু মাদ্ৰাজৰ মানুহে হিন্দী ভাষাৰ বিৰোধ কৰিব নালাগে। আমি যদি দিল্লীত 'তামিল মুদ্দাবাদ' ধৰ্মি তোলা তেতিয়া শ্ৰী অম্মাদুৰেৰ কেনেকুৱা লাগিব? কিন্তু তেওঁলোকে 'হিন্দী' মুদ্দাবাদ' ধৰ্মি তুলি হিন্দীৰ অপমান কৰিলে। যদি আমি ভাৰতীয় হৈ যি কোনো ভাষাৰ আদৰ কৰোঁ, সেই ভাষাত হিন্দী ও আছে, অকল তামিল নহয়। তামিল সমৃদ্ধ ভাষা। কিন্তু মই এটা ক্ষণৰ বাবে পাহৰি নাযাওঁ 'হিন্দী' এটা সমৃদ্ধ ভাষা।

আজিৰ পৰা বিশবছৰ আগতেই অটলজীয়ে কে আহিছে কংগ্ৰেছ শাসনে দেশত এপ্ৰচাৰক প্ৰশ্ন দি আহিছে। যদি তেতিয়াই চকু বন্ধ নকৰি এপ্ৰচাৰ দূৰ কৰাওঁ চকু দিলেহেতেন তেনেহলে আজিৰ এই লজ্জাজনক পৰিস্থিতি নহলহেতেন।

অটলজীয়ে কাশ্মীৰক ভাৰতৰ মুকুট বুলি ভাবে। সেই দেশৰ জনকক আঁক বহু বছৰৰ পৰা বুজাই আহিছে অ'ৰু কে আহিছে পাকিস্থানে ভাৰতৰ মুকুট কাশ্মীৰক কাঢ়ি নিদিলে।

নতুন ধৰণৰ কুচকৰচনা কৰিছে। সেইবাবে তেওঁ সংসদত বক্তব্য বান্ধাৰ ৩৭০ ক সমাপ্ত কৰিবৰ বাবে অনুৰোধ জনাইছে। কিন্তু ক'মেছে এই কথাটোত ইমান গুৰু দিয়া নহৈছে।

১৯৬২ চনৰ পৰা ১৯৬৭ চনলৈ এই সময় ছ'লা প্ৰশ্নৰ ভাৱে ইতিহাসত এক বিশেষ মহত্বপূৰ্ণ স্থান দখল কৰি পৰিছে। এই সময়তেই দাৰ্জিলিংত দুখন যুদ্ধৰ সম্বন্ধেই হৈছে। প্ৰথমখন "হিন্দী চাৰ্ভিছ আই ৩৬" বুলি কৈ ভাৱম দিয়াই আৰু আনটো পৰৱৰ্তী চাৰ্ভিছ আক্ৰমণ কৰিলে। তেওঁলোকৰ এই বিধ্বাসঘাতকতাত নেতৃত্বভাৱে বহু অধীশ পালে, তেওঁৰ অন্তৰ বেদনাত ভাঙি পৰিল।

১৯৬৪ চনৰ ২৭ মে' দিনা ৭ নেতৃত্বভাৱে হ'লে মুক্তা হ'ল বাতাসত তেওঁক শোকাঞ্জলি অৰ্পণ কৰোঁতে অটলতায়ে কৈছিল অশান্তিৰো, এটা সপোন আছিল, যিটো পূৰা নহ'ল। এটা গীত আছিল, যিটোও পূৰা নহ'ল, এজন বান্ধু আছিল, যিজন অনন্তত বিদ্বান হৈ গ'ল। সপোন আছিল এনেকুৱা এখন সপোনৰ, সপোন আছিল য'ত ভয় আৰু ভোক নাথাকে, গীত আছিল এনেকুৱা মহাকাব্যৰ, য'ত গীতৰ গুঞ্জ আৰু গোজপ ফুলৰ গন্ধ, এনেকুৱা এটা দীপক আছিল, যি নৌকি গোটেই নিশা জ্বলি উঠিছিল, সকলো আন্ধাৰৰ লগত যুঁজি আছিল আৰু আমাক পথ দেখুৱাই এক প্ৰভাতত নিশা প্ৰাপ্ত হ'ল।

ভাৰতমাতৃ আজি শোকমুখ। কিয়নো আজি তেওঁৰ সবাটোক মৰমৰ বাতুকুমাৰ দেৱাই গ'ল। মানবতা আজি বিঘ্ন বেদনা। কিয়নো তেওঁৰ পূজৰ্থী চিৰদিনৰ বাবে শুই গ'ল। শান্তি আজি অশান্তি। তেওঁৰ বক্ষক গুচি গ'ল। দৰ্জিলঙৰ আশ্বয় নাইকিয়া হ'ল। সকলোৰে চকুৰ ওপৰে আজি ৰহি পৰিল। যবনিকা পৰিল। বিশ্ব বক্ষমাঞ্চল প্ৰমুখ অভিনেতা তেওঁৰ অক্লান্ত অভিনয় দেখুৱাই অশ্রুমান হ'ল। তেওঁ অহিংসাৰ উপাসক আছিল।

সংসদত তেওঁৰ অভাব কেতিয়াও পূৰণ নহ'ব। মতভেদ থাকিলেও তেওঁৰ মহান আদৰ্শৰ প্ৰতি, প্ৰামাণিকতাৰ প্ৰতি, দেশভক্তিৰ প্ৰতি, অটুট সাহস আৰু দুৰ্দমা দৈৱ্যৰ প্ৰতি আমাৰ জিয়াৰ আদৰৰ বাহিৰে আন একো দিব নোৱাৰে। এই শব্দ কেইটা কৈ মহান আত্মাৰ প্ৰতি বিনম্ৰ শ্ৰদ্ধাঞ্জলি অৰ্পণ কৰিলোঁ।

তেখেতৰ মুক্তাৰ পাছত ইংলান্ডৰ লণ্ডনৰ শান্তি ভাৰতৰ দ্বিতীয় প্ৰধানমন্ত্ৰী হ'ল। পাৰ্লামেণ্টৰ আক্ৰমণৰ সময়ত তেখেতৰ জয়, জীবন, জনকিসান ধৰ্ম্মই সমগ্ৰ দেশত ধ্বনিত হ'ল। যুদ্ধৰ সময়ত তেখেত জনসংগঠনৰ পূৰ্ণ সহযোগ দিলে। জনসংগঠন জন আবেগৰ মহত্বপূৰ্ণ কাৰ্য কৰিলে। আন্তঃসৈনিক সকলো প্ৰকাৰৰ সহায় সহযোগ আগবঢ়ালে। তেখেত অটলতায়ে কৈছিল "যুদ্ধত অৰ্দ্ধ বিজয় পালে"। এই বিজয়ৰ সকলো শ্ৰেয় আমাৰ বাৰ জেনাৰেল আৰু সৈনিক অধিকাৰী সকলৰ।

আজি যুদ্ধত জয় হ'লে। কিন্তু তেওঁক স্মৰণ কৰিবৰ লোকে প্ৰতি প্ৰতিদিনে কৰিব লাগিব।

লালবাহাদুৰ শাস্ত্ৰীক আমি হেৰুৱালোঁ তাম্বুত ভাৰত - পাকিস্তানৰ যিখন চুক্তি হ'ল, সেইখন
বলেৰে কৰা হ'ল এই চুক্তিত ইষ্টাফৰ কৰিবৰ বাবে শাস্ত্ৰীজীৰ ওপৰত জোৰ দিয়া হ'ল তেওঁ
আগৰ পৰাই হৃদয়োগত ভুগি আছিল এই বল তেওঁ সহ্য কৰিব নেবাৰিলে আৰু তাৰ পৰিণাম
স্বৰূপে ভাৰত মাতাই তেওঁৰ সপুত্ৰক হেৰুৱালে। তেওঁৰ হৃদয়গতি তাম্বুত তেওঁ বন্ধ হৈ গ'ল
শাস্ত্ৰীজীৰ সৰলতা, বিনয়তা, অৰ্দ্ধাৰ্থতা আৰু ত্যাগ - ভাৱনাৰ অটলজীয়ে প্ৰশংসক আছিল।

(৯)

চতুৰ্থ লোকসভা নিৰ্বাচনৰ দিন ঘোষণা কৰা হ'ল অটলজীয়ে নিৰ্বাচনত যুজিব কিন্তু
ক'ৰ পৰা এই যুজ দিব ঠিক কৰা নাছিল। যোৱা নিৰ্বাচনৰ পৰাজয় মনত বিন্ধি আছে। পৰাজয়ৰ
পোটক লৈ কেনেকৈ নিশ্চিন্ত হ'ব মতদাতা সকলৰ মনত ভয়, শ্ৰম, অতংক বিয়পাই নিৰ্বাচনত
জয়ী হোৱা সকলক এশিকনি দিবলৈ স্থিৰ কৰিলে। তাৰ মাজতে কংগ্ৰেছৰ কেইজনমান বিখ্যাত
নেতাই আহি অটলজীক লগ ধৰি কলে, "আপুনি বলৰামপুৰৰ বাহিৰে বেলেগ ঠাইৰ পৰা নিৰ্বাচনত
থিয় হওক, আপুনি য'ৰ পৰাই নুঠক জিকিবই, গত আপুনি কংগ্ৰেছৰ প্ৰত্যাশীক জিকিবলৈ
দিয়ক অটলজীয়ে তেখেতসকলৰ মন্তব্য প্ৰত্যাখান কৰিলে।

চতুৰ্থ লোকসভাৰ নিৰ্বাচনত অটলজীয়ে বলৰামপুৰৰ পৰাই যুজিবলৈ স্থিৰ কৰিলে
তেখেতে এনেকৈ বাহ-ৰচনা কৰিলে যে বিৰোধী সকলে দাঁত কামুৰি থাকি গ'ল। তেওঁ নিজে
গাঁৱে গাঁৱে গৈ মানুহৰ লগত সম্পৰ্ক কৰিলে। বাইজো তেওঁলোকৰ প্ৰিয় নেতাক বিগত নিৰ্বাচনত
হেৰুৱাই দুখ পাই আছিল। তেওঁলোকেও পোটক লবলৈ সাজু হৈ আছিল।

মতদানৰ দিনটো বলৰামপুৰত উৎসৱ যেন হৈ উঠিছিল। গাঁৱৰ তিব্বতাসকলে গুণ্ড
গীত গাই মতদান কেন্দ্ৰ পাইছিল। ভোট গণনাৰ দিনা নিৰ্বাচন পৰিণাম জানিবৰ বাবে কাচাৰীত
লোকে লোকাৰণ্য হৈছিল। এই নিৰ্বাচনত অটলজী ৩১,০৪২ টা ভোটত বিজয়ী হৈছিল। বিধান
সভাৰ পাঁচজন প্ৰাৰ্থীৰ মাজত জনসংঘৰ চাৰিজন প্ৰাৰ্থীয়েই বিজয়ী হৈছিল। এই অভাৱনীয়
বিজয়ত সম্ভ্ৰম পাই বলৰামপুৰবাসীয়ে সেইদিনা পুৱা ক্ষেত্ৰত দেৱালি পাতিছিল আৰু বিজয়
সমাদল উলিয়াইছিল। অটলজী আকৌ লোকসভা নিৰ্বাচনত জয়ী হৈ সংসদত আহিলে। চতুৰ্থ
লোকসভাত অটলজীয়ে ৰাষ্ট্ৰীয় আৰু আন্তৰাষ্ট্ৰীয় সমস্যা দৈ সংসদৰ মতিয়াত অনেক মহত্বপূৰ্ণ
ভাষণ দিছিল।

জম্মু-কাশ্মীৰ ভাৰতৰ অভিন্ন অংগ, কিন্তু জম্মু-কাশ্মীৰৰ সংবিধান এতিয়াও বেলেগ,
তাৰ নাগৰিকতা বেলেগ, পত্ৰকাৰ বেলেগ ইয়াৰ কাৰণটো কি? অজি প্ৰায় তিনি দশক পূৰ্ণ হ'ল,
অটলজীয়ে যেতিয়া প্ৰস্তাবটো উপস্থাপন কৰিছিল তেতিয়া চৰকাৰে কান নিদিলে আৰু একো
নকৰিলে। কাশ্মীৰি পণ্ডিতসকলে নিজস্ব ঘৰ-দুৱাৰ ৰি শৰণাৰ্থী হৈ ইফালে সিফালে ঘূৰি আছে।
এনেকুৱা চৰকাৰ আৰু প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ কি কাম? যিসকলক নিজৰ দেশত থাকিও শৰণাৰ্থী হ'বলগীয়া
হৈছে। এতিয়া সেইদিনা আৰু দুব নহয়, যেতিয়া কাশ্মীৰৰ পৰা পৰা ৩৭০ গুণোবা হ'ব ভাৰতমাত্ৰৰ

মুকুট গৰ্বতে জ্বিলিকি উঠিব।

১৯৬৮ চনৰ ১২ ফেব্ৰুৱাৰী, পণ্ডিত দীনদয়াল উপাধ্যায়ৰ শোকাবহ মৃত্যুত দুখ কৰি অটলজীয়ে লোকসভাত এনেকৈ কৈছিল অধ্যক্ষ মহোদয়, আমি শোকৰ ছায়াত আজি একেলগ হৈছোঁ। আজি যি অসমত সবাতকৈ বেদনাদায়ক, সেইটো হল শ্ৰী দীনদয়াল উপাধ্যায়জীৰ দেহাবসান, তেওঁৰ সংসদ সদস্য নাছিল, কিন্তু ভাৰতীয় জনসংঘৰ যিমান সদস্য আজি দুটা সদস্যত বিৰাজমান, তেখেত সকলৰ বিজয়, জনসংঘ গঢ়িবলৈ, যদি কোনবা ব্যক্তিক শ্ৰেয় দিব পাৰি সেইজন হ'ল উপাধ্যায়জী। নেথিবলৈ সিধা-সাধা কিন্তু মৌলিক বিচাৰক, কুশল সংগঠক, দূৰদৰ্শী, সকলোকে একেলগ কৰি আগুৱাই যোৱা তেখেতৰ জীৱনত আমি দেখা পাইছোঁ। তেওঁৰ সেই গুণে নতুন পৰিৱৰ বাবে আগদৰ্শনৰ কাম কৰিব, উচ্চৰ পৰা উচ্চতৰ শিক্ষা লৈয়ো চাকৰি কৰা নাছিল, পৰিয়ালৰ বন্ধনত সন্মোৰা নাছিল, সমস্ত জীৱন ভাৰতমাতৃৰ সেৱাত সমৰ্পিত কৰি ধন্য মানিছিল।

আজি যি পৰিস্থিতিত তেওঁৰ নিধন হল অতি হৃদয় বিদাবক। সেহবাৰে উচ্চস্তৰীয় তদন্ত হ'ব লাগে। প্রশ্ন ওকল ওকল নেতাৰ বাবে নহয়, এজন নাগৰিকৰ জীৱন সুৰক্ষাৰ বাবে ও আমাৰ বাবে তেওঁৰ মৃত্যুত যি ক্ষতি হল, সি কেমতিয়াও পূৰণ নহয়।

প্ৰেছক স্বতন্ত্ৰতা দিয়াৰ ক্ষেত্ৰত অটলজী সদায় পক্ষপাতী। তেওঁৰ বিচাৰ আছিল যি দেশত প্ৰেছ স্বতন্ত্ৰ হ'ব নোৱাৰে, সেই দেশৰ নাগৰিকৰ মাজত অসুৰক্ষা আৰু সন্দেহৰ সৃষ্টি হয়। ভাৰত এখন লোকতন্ত্ৰ দেশ, পৃথিৱীৰ সবাতকৈ ডাঙৰ লোকতন্ত্ৰ। কিন্তু ইয়াত যদি প্ৰেছৰ স্বতন্ত্ৰতা কাটি লোৱা হয় তেতিয়া দেশৰ জনতাৰ ও স্বতন্ত্ৰতা কাটি লোৱা হ'ব।

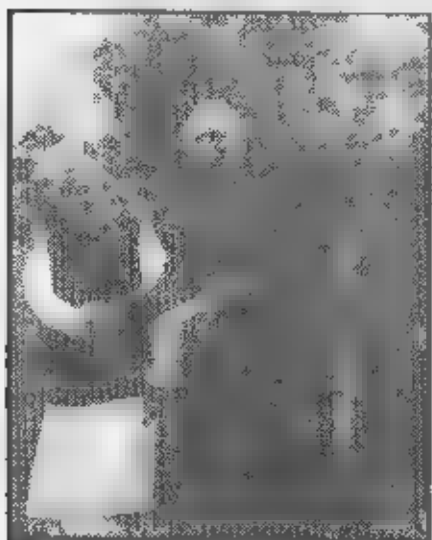
অটলজীয়ে সংসদীয় জীৱনত কৃষকৰ বিভিন্ন সমস্যাৰ বাবে প্ৰস্তাৱ উঠাইছিল আৰু আজিও উঠাই আছে। নেথেনে মতে ভূমি-সংস্কাৰ অতি আবশ্যক। ভূমিত হাল বোৱা সকলেই ভূমিৰ মালিক হ'ব লাগে। পেলাই যোৱা মাটিবোৰ বেচি কৰিব পৰা কৰি উপযুক্ত ভূমিহীনৰ মাজত বিতৰণ কৰিব লাগে, তাত কোনো ধৰণৰ মতভেদ হ'ব নালাগে।

পাৰ্কিঙান হোৱাৰ পাছতো দেশত কটুৰপন্থী, ঘোৰ সাম্প্ৰদায়িক মুছলমানৰ এটা বৰ্গই আজিও তেওঁলোকৰ সমৰ্থন ভাৰতৰ প্ৰতি নহয়, পাৰ্কিঙানৰ প্ৰতি হৈ আৰু দেশৰ বোবা চৰকাৰ মোন হৈ বহি থাকে। বাস্তৱত এই কথাত ওপৰত খোলাখুলি আলোচনা হ'ব লাগে। নিয়নো শেষত সাম্প্ৰদায়িক কোন? যি সকলে বন্দেমাতৰমৰ প্ৰতি বিৰোধ কৰে, যি সকলে ভাৰতমাতাক ওহন, বুলি ভাবে, যি সকলে ৰাণা প্ৰতাপ আৰু শিৱাজীৰ নিচিনা দেশভক্ত মহাবীৰক লুটেৰা বুলি কয় সিহঁত কোন, কোন হ'ব পাৰে? ইয়াৰ উত্তৰ তেওঁলোকে দিব পাৰিব, যি সকলে নিজক ধৰ্ম্মনবাপেক্ষ বুলি কৈ থাকে? দেশত দাঙগী কোনে কৰায়? ইয়াৰ উত্তৰ দিবলৈ কাৰোবাৰ অঙ্গো সাহস আছে? প্রশ্ন হল এই দাঙগীৰ সূতপাত কিয় হল? এই বিচাৰো সদস্যত ইয়াৰ ওপৰত বিচাৰ হ'ক। মহা ত্ৰিতিয়াও কোন পৰিণামত গৈ পোৱা নাই। মানুহে কিয় দাঙা আনন্দ

কৰে, ইয়াৰ তিনিটা কাৰণ। এটা কাৰণ হ'ব পাৰে মুচলমান ৰাইসকলে এই সিদ্ধান্তত উপনীত হৈছে এতিয়া হিন্দুস্থানত আমাৰ ঠাই নাই, হিন্দুস্থানত আমাৰ কোনো ভবিষ্যত নাই। জিয়াই থকাত কৈ যুঁজি যুঁজি মৰাই ভাল।

দুই নম্বৰ কাৰণ এইটো। হ'ব পাৰে মুচলমানৰ কেইজনমান মানুহে পাকিস্থানৰ লগত সংঘৰ্ষ ৰাখি থৈছে, যিহেতু পাকিস্থানৰ সংকেটত দাঙগা কৰিব পাৰে।

তিনি নম্বৰ আৰু মহত্বপূৰ্ণ কাৰণ গম পোৱা যায় সেইটো হ'ল মুচলমানৰ কেইজনমান



নেতাই মুচলমানে নিজক ৰাষ্ট্ৰীয় মুখাধাৰাৰ লগত মিলাই দিয়াতো নিবিচাৰে।

দেশত যেতিয়া বিপত্তিৰ কলামেঘ ঘনাই আহে, বা দেশৰ প্ৰভুসভা, অখণ্ডতা, স্বতন্ত্ৰতা আৰু একতাত বিপদে দেখা দিয়ে, তেতিয়া অটলজী বিৰোধীপক্ষৰ নেতা হিচাবে নহয়, এজন নিভাজ মাৰুভূমিৰ সেৱকৰ ৰূপত চৰকাৰৰ লগত কান মিলাই পাকিস্থানৰ দুৰ্বাসন্ধি বাৰ্থ কৰিবৰ বাবে ৰাষ্ট্ৰৰ জনতাক অহবান জনায়। তেওঁৰ মতে ৰাষ্ট্ৰ প্ৰথম আৰু সকলো পাছত।

মিত্ৰতাৰ নামত হাত বঢ়ালেও

তেওঁ কয় ন্যায়পালিকা সদায় স্বতন্ত্ৰ আৰু নিৰপেক্ষ হ'ব লাগে। যি দেশত ন্যায়পালিকা পূৰ্ণ স্বতন্ত্ৰতা অনুভৱ নকৰে,

সেই দেশত নাগৰিক সকলে ন্যায়ৰ প্ৰতি সদায় সন্দেহ পোষণ কৰে। সেইভাৱে কথা আমাৰ দেশত ন্যায়পালিকা পূৰ্ণ স্বতন্ত্ৰ, তেওঁলোকৰ ওপৰত কাৰো হেচা নাই, সেইজন যদিও ডাঙৰ মানুহ।

বিৰোধীপক্ষ হ'ব কিবা ভাল কাম কৰিলে গাৰে প্ৰশংসা কৰিবলৈ অটলজীয়ে কোঁতয়াও কুণ্ঠাবোধ আৰু কৃপণালী নকৰে। তেনেকুৱা এটা ঘটনা, বাংলাদেশক যোগিয়া স্বীকৃতি দিয়া হল, তেতিয়া অটলজীয়ে ভাৰত চৰকাৰ আৰু হিন্দীৰ গান্ধীক প্ৰশংসা কৰিছিল। বাস্তৱত অটলজীৰ ৰাজনীতি ধনাত্মক, ঋণাত্মক নহয়।

ভাৰত চৰকাৰে বাংলাদেশক মানাত্ৰা দি অকল মুক্তি - সংগ্ৰামত সহায়তা কৰা নহয়, বাংলাদেশক আন্তৰাষ্ট্ৰীয় স্তৰত প্ৰতিষ্ঠিত কৰিলে।

মই ভাবো আমাৰ প্ৰধানমন্ত্ৰীজী বাস্তৱত প্ৰশংসাৰ অধিকাৰী। আমি ঠিক এনেকুৱা খবৰৰ আশা প্ৰতিদিন কৰো।

অটলজী অস্পৃশ্যতাৰ বিৰোধী মানুহ। মানুহৰ মাজত এনেকুৱা প্ৰকাৰভেদক মানৱতা নহয়, প্ৰস্তুত কৰা পাৰি। এলৰ কণ সিংজীয়ে পাটনাত এখন সভাত ভাষণত কৈছিল "ছুআছুত হিন্দু ধৰ্ম্মকা হিস্সা হ'ই" কথাটো অটলজীৰ হজম নহল। তেওঁ তেওঁৰ ভাষণত কলে- ছুআছুত

এক পাপ, অভিশাপ, অস্পৃশ্যতা এটা কলঙ্ক এতিয়ালৈকে এই কলঙ্ক আমাৰ মূৰৰ পৰা আঁতৰ
নহয়, আমি এই পৃথিৱীত মূৰ ডাঙি থিয় হব নোৱাৰিম আৰু মই বুজো, হিন্দু শাস্ত্ৰত কয়
অস্পৃশ্যতা চলিব লাগে। যদি শাস্ত্ৰত এনেকুৱা কোনো ব্যাখ্যা আছে, সেইটো ভুল ব্যাখ্যা হৈছে
আৰু মই সেইটো মানিবলৈ সাজু নহও। এনেকি পৰমাত্মাই ছুআছুত মানিবলৈ কলে, মই পৰমাত্মাকো
মানিবলৈ সাজু নহও।

দেশত সমাজবাদী বিচাৰধাৰাৰ চিন্তক-- বিচাৰক ড° ৰামমোহনৰ লোহিয়া এজন মহান
দেশভক্ত, স্বতন্ত্ৰতা সেনানী আৰু ক্ৰান্তিকাবী আছিল। তেওঁৰ মৃত্যুত দেশৰ পুৰণা পী বিৰ এজন
মৌলিক চিন্তক গুচি গল। ১৩ নভেম্বৰ ১৯৬৭ চনত লোহিয়াজীৰ মৃত্যুত অটলজীয়ে শ্ৰদ্ধাঞ্জলি
অৰ্পণ কৰোতে কেইলাইনমান পংক্তি এনেকুৱাকৈ কৈছিল-- ড° লোহিয়া এজন মহান দেশভক্ত,
স্বতন্ত্ৰতা সংগ্ৰামৰ অগ্ৰণী নেতা, মৌলিক বিচাৰক আৰু ক্ৰান্তিদৰ্শী ব্যক্তি আছিল। তেওঁৰ ব্যক্তি হৈ
অতুলনীয়, বিবোধিতাত পৰিপূৰ্ণ আৰু বহুমুখী প্ৰতিভা সম্পন্ন। তেওঁ ৰাষ্ট্ৰজীৱনত নতুন দিশ
দিবলৈ যত্ন কৰিছিল। তেওঁৰ বিচাৰত কাৰো মতভেদ হ'ব পাৰে, কিন্তু দলিত, পীড়িতৰ বাবে
তেওঁৰ হৃদয়ত সদায় জুই জ্বলিছিল। আজিৰ এই দিনত তেওঁক স্মৰণ কৰি মহান আত্মাৰ প্ৰতি
শ্ৰদ্ধা জ্ঞাপন কৰিলোঁ।

(১০)

গোৱালিয়ৰৰ নাম আহোতেই অটলজীৰ মুখমণ্ডলত আনন্দৰ ভাৱ জিলিকি উঠে।
ইয়াতেই তেখেতৰ জন্মস্থান, ইয়াতেই ডাঙৰ হোৱা, পঢ়াশুনা কৰা ৰাষ্ট্ৰীয় স্বয়ং সেৱক সংঘৰ
পাঠশালাত 'নমস্তে সদা বৎসংল মাতৃভূমে' শিকাৰ পাঠ ইয়াৰ লক্ষ্মীনগৰ শাখাতেই পঢ়িছিল।
তেওঁৰ গোৱালিয়ৰ প্ৰেম খুব বেছি। কিয়নো জন্মভূমি হোৱাৰ বাবে সেইখন 'স্বৰ্গদৰ্শি গবীয়েসী'।

গোৱালিয়ৰৰ ৰাইজে তেওঁলোকৰ অটলজীক বহুত মৰম কৰে। তাৰ মানুহে 'আমাৰ
অটলজী' বুলিকৈ গৰ্ব অনুভৱ কৰে। সেইবাবে পঞ্চম লোকসভাৰ নিৰ্বাচনত অটলজী গোৱালিয়ৰৰ
পৰা নামবলৈ সিদ্ধান্ত কৰিলে। গোৱালিয়ৰবাসীয়ে এই প্ৰস্তাৱত আনন্দ পাইছিল, কিয়নো এই
পৃথিৱীৰ অনেক দেশত ভাৰতৰ ধ্বজা উৰুৱা অটলজী এতিয়া ইয়াৰ পৰাই নিৰ্বাচনত যুঁজ দিব।

নামাঙ্কন হৈ গল। নিৰ্বাচন অনুষ্ঠিত হ'ল আৰু কংগ্ৰেছ প্ৰত্যাশীয়ে পৰাজয় বৰণ কৰিলে।
অটলজী অনেক ভোটত বিজয়ী হ'ল।

লোকসভাত নিজৰ জন্মভূমিৰ প্ৰতিনিধিত্ব কৰা অটলজী এতিয়ালৈকে গোটেই ৰাষ্ট্ৰত
নিজৰ ভাল জনাধাৰ বনাবলৈ সক্ষম হ'ল। তেওঁৰ সভাবিলাকত অপাৰ জনগণৰ সঙ্গম হয়। তেওঁ
নেহেৰুজী দৰে জনপ্ৰিয়তা লাভ কৰিছিল। সংসদৰ মাজীয়াত অটলজীয়ে যিখিনি কথা কয়,
সেইবলক প্ৰামাণিক। কথাবলক প্ৰস্তুতি কৰাৰ কলা, বাস্তৱ - বিনোদপূৰ্ণ শৈলী, বিৰোধী পক্ষৰ
মনত প্ৰসন্নতা, কিন্তু বাস্তৱত বৰ্ত্তি উত্তৰৰ সন্মুখীন হ'ব লগা হয়। কংগ্ৰেছত কৈ কঠোৰ কথাত
এনেকুৱা শব্দবিন্যাস প্ৰয়োগ কৰে যে কথাবলক মিঠা হৈ যায়, কিন্তু প্ৰভাৱ কঠোৰ হৈ থাকে।

সেই কালছোৱাত তেওঁৰ ভাষণৰ কিছু অংশ উদ্ধৃত কৰা হ'ল।

চিমলা চুক্তি বিষয়ত নিজৰ প্ৰতিক্ৰিয়া ব্যক্ত কৰি অটলজীয়ে সংসদত কৈছিল আমি মৈদানত জিকিছোঁ, কিন্তু মেজত হাৰিছোঁ। বাস্তৱত শ্ৰী ভুট্টো চিমলাত তিনিটা উদ্দেশ্য লৈ আহিছিল- নিজৰ দখলৰ পৰা যোৱা সীমানা পুনৰুদ্ধাৰ কৰা, যুদ্ধবন্দীক মুক্ত কৰা আৰু কাশ্মীৰক বিবাদৰ বিষয় কৰি বনাই ৰখা। তেওঁ সকলো উদ্দেশ্যত সফল হৈছিল। এই চিমলা চুক্তিও অটলজীয়ে এনেকুৱা কথা ব্যক্ত কৰিছিল পাকিস্তানৰ এক হৃদয় পাতিও অ'ম'ক নালাগে, কিন্তু পাকিস্তানে ভাৰতৰ ৩০ হাজাৰ বৰ্গ মাইল জমি কজা কৰি আছে। এনেকুৱা হ'বলৈ আমি কেতিয়াও দিব নোৱাৰোঁ।

চিমলা-চুক্তিৰ বাবে কাশ্মীৰৰ জনতাৰ মাজত অনিশ্চয়তাৰ সৃষ্টি হৈছে। যিসকলে কাশ্মীৰক ভাৰতৰ পৰা বেলেগ কৰিব বিচাৰিছে, সিহঁতৰ উদ্যম অপৰিসীম। মই জানিব বিচাৰিছোঁ চিমলাত কাশ্মীৰৰ বাবে কি চুক্তি হৈছিল? মই দুখ পাইছোঁ, কিজানি কোনো গুপ্ত চুক্তি হৈছিল।

অটলজী সংসদত এজন জাগৰুক পহৰাদাৰৰ ভূমিকা পালন কৰে। তেওঁ নিজক এনেকুৱা তৈয়াৰী কৰে, 'হোমৱৰ্ক' কৰোঁতে কেতিয়াবা ৰাতি দুই তিনি বাজি যায় তেওঁ কথা পশুত কৰাৰ বাবে সকলো প্ৰমাণ গোটাই লয়। বিনা প্ৰমাণত তেওঁ কোনো কথা নকয়। সেইবাবে তেওঁ যোঁতীয়া সংসদত ভাষণ দিয়ে সকলোৰে দৃষ্টি তেওঁৰ ওপৰত, চাৰিওফালে গুৰুতা বিৰূপ পৰে। কেতিয়াবা কেতিয়াবা দুই এজনে অভদ্ৰতা কৰিবলৈ প্ৰয়াস কৰিলে মাননীয় অধ্যক্ষৰ কাঁপং শুনিব লগা হয়।

নিঃসন্দেহে তেওঁ এজন সৰ্বশ্ৰেষ্ঠ বক্তা। ১৯৫৭ চনত যেতিয়া প্ৰথমবাৰৰ বাবে সংসদৰ মজিয়ালৈ আহিছিল এদিন লোকসভাৰ অধ্যক্ষ শ্ৰী অনন্ত শ্যামম অধ্যক্ষৰজীয়ে শ্ৰী নাৰায়ণ মাধব ঘটাটেক শুধিছিল মহাশয়, সংসদত সবাতোকৈ ভাল বক্তা কোন? তেওঁ কৈছিল দুজন শ্ৰেষ্ঠ বক্তা, এজন হ'ল শ্ৰী অটল বিহাৰী বাজপেয়ী হিন্দীত আৰু শ্ৰী হীৰেন মুখাৰ্জী ইংৰাজীত। তেতিয়াৰ পৰা আৰম্ভ কৰি আজিলৈকে অটলজীয়ে সেই স্থানত প্ৰতিষ্ঠিত হৈ আছে।

কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰে যেতিয়া যেতিয়া প্ৰদেশ চৰকাৰক অপদস্থ কৰিবলৈ মন কৰে, নিজৰ ৰাজনৈতিক স্বার্থৰ বাবে ক'ৰণ বনাবলৈ প্ৰদেশ চৰকাৰৰ ওপৰত ধাৰা ৩৫৬ প্ৰয়োগ কৰে। অটলজী এনেকুৱা ৰাজনীতিৰ ঘোৰ বিৰোধী।

শিক্ষাই হৈ ৰাষ্ট্ৰক উন্নতিৰ শিৰৰলৈ লৈ যাব পাৰে। শিক্ষাই বালকৰ মনত বিদ্যমান নৈসৰ্গিক গুণক বিকশিত কৰে, তেওঁক আত্মনিৰ্ভৰতা, স্বাবলম্বন, দেশভক্তি, পৰোপকাৰ, উদাৰতা আদি গুণৰ বিকশিত কৰে। যি ৰাষ্ট্ৰই শিক্ষা ক্ষেত্ৰত উচিত ব্যৱস্থা কৰিব নোৱাৰে, সেই ৰাষ্ট্ৰৰ উন্নতি মাৰ্গ অবৰুদ্ধ হৈ যায়। অটলজী শিক্ষা বিষয়ত ইমান জাগৰুক। সেইবাবে সংসদত শিক্ষা বিষয়লৈ সূচনা দি থাকে।

শিক্ষাৰ কেন্দ্ৰ হ'ল শিক্ষক। 'আজি কালি ভাল শিক্ষক আৰু ভাল ছাত্ৰৰ অভাৱ

অনুসন্ধান কেন্দ্ৰ বিলাকত জুনিয়ৰ অনুসন্ধান কৰ্তা বিলাকৰ ওপৰত শোষণৰ মাধ্যম সংসদত উঠায় অটলজীয়ে ১৮ নভেম্বৰ ১৯৭৩ চনত এনেদৰে কৈছিল 'আমাৰ জুনিয়ৰ বৈজ্ঞানিক সকল নিৰাশ হৈ দেশৰ বাহিৰত যাবলৈ ধৰিছে কাৰণটো টকা পইচা কম পোৱাৰ বাবে বা তেওঁলোকৰ কাম কৰাৰ ক্ষেত্ৰ নথকাৰ বাবে নহয় আমাৰ ডেকা বৈজ্ঞানিক সকলে ভাল কাম কৰিব বিচাৰিছে কিন্তু তেওঁলোকে ভাল কাম কৰিলেও ন'ম হৈছে জ্যেষ্ঠ বৈজ্ঞানিক সকলৰ কনিষ্ঠ বৈজ্ঞানিকৰ সহায়তা লোৱা হয়, কিন্তু শ্ৰেয় দিয়া নহয় ড° বিনোদ সাহাৰ আত্মহত্যাৰ ইয়াৰ সত্যতা প্ৰকট হৈ পৰিছে

চৰকাৰে খাদ্য নিগম স্থাপিত কৰি দিলে কিন্তু কেইবা বছৰৰ ভিতৰতে নিগম বঙাল হৈ গ'ল চোৰী আৰু এচাচাৰে অধিক ৰীবিলাক ধৰি হৈ গ'ল খেতিয়কৰ লগত এনেকুৱা অশাস্তি হোৱাটো অটলজীয়ে কেতিয়াও সহ্য কৰিব নোৱাৰে

চৰকাৰে ভূমি সংস্কাৰলৈ পৰৱৰ্তী পত্ৰিকা আৰু এজেন্সীৰ মাধ্যমে বহুত গোলমাল কৰিলে উত্তৰপ্ৰদেশৰ বলৰামপুৰ এলাকাত হাৰ্ভজন সকলক লক্ষ্য কৰি ভূমি দিয়াৰ বাবে ঘোষণা কৰা হ'ল। খবৰ কৰি গম পোৱা গ'ল ভূমি দি দিয়া হৈছে কিন্তু পোৱা নাই এবাৰ পঠি দিয়া হৈছে, নিশ্চয় এতিয়ালৈকে গৈ পাইছে এনেকুৱা লুকা ভাকু চলি আছে

সেই সময়তেই দেশত ইমৰজেন্সি চলাকালীন অটলজীক বঙ্গলাৰ জেলত বন্দী কৰি ৰখা হ'ল কাৰাগাৰত কষ্ট সহ্য কৰোঁতে কৰোঁতে তিনিশ পঁচষষ্ঠি দিন উকলি গ'ল কৰি অতলে জেলত থাকোঁতেই কেইটামান কবিতা আৰু গীত ৰচনা কৰিছিল

পশ্চিম দীনদয়াল উপাধ্যায়জীৰ হতাৰ পাছত ভাৰতীয় জনসংঘই ১৯৬৮ চনত অটলজীৰ হাতত পাৰ্টিৰ সকলো দায়িত্ব দিলে তেওঁক পাৰ্টিৰ অধ্যক্ষ কৰা হ'ল। উপাধ্যায়জীৰ দৰে তেওঁৰ কুশল নেতৃত্বত কাৰ্যকৰী সকলে উৎসাহৰে কাম কৰি গৈছিল। পাৰ্টিৰ সদস্য সংখ্যা বাঢ়িবলৈ ধৰিলে, প্ৰদেশ বিলাকত জনসংঘৰ বিধায়ক সংখ্যাও বাঢ়িলে। মহাপালিকা, নগৰপালিকা আৰু টাউন এৰিয়াত জনসংঘৰ লোকপ্ৰিয়তাৰ কাৰণ পাৰ্টিৰ সম্মানজনক আৰু উৎসাহবধক বিজয় হ'ব ধৰিলে। ৰাষ্ট্ৰীয় চেতনাৰ বাবে বুদ্ধিজীবি সকলৰ ধ্যান আকৃষ্ট হ'ল।

একেৰাহে তিনিবাৰ পাৰ্টিৰ অধ্যক্ষ পদত অধিষ্ঠিত আলেক্সা পাৰ্টিৰ নেতা আৰু কাৰ্যকৰীৰ মনত এনেকুৱা আত্মবিশ্বাস জগাই দিলে যে এতিয়া সেইদিন আৰু দূৰ নহয় ভাৰতবৰ্ষত জনসংঘৰ ৰাজত্ব স্থাপিত হ'ব। তেওঁক পাৰ্টিৰ সকলো বাৰিষ্ঠ নেতাই পূৰ্ণ সহযোগ দিলে। শ্ৰী লালকৃষ্ণ আত্মবাণী, শ্ৰীমূৰলী মনোহৰ যোশী আৰু অন্য নেতাই একেলগে বাঁহ পাৰ্টি সম্বন্ধত গভীৰভাৱে বিচাৰ কৰি থাকে। তেওঁলোকৰ অসাম প্ৰচেষ্টাই দেশৰ জনতাক পাৰ্টিৰ প্ৰতি আকৃষ্ট কৰিবলৈ সক্ষম হ'ল।

১৯৬৮ চনৰ ৭ অক্টোবৰ ১৯৬৮ চনত ইণ্ডোৰত অনুষ্ঠিত ভাৰতীয় জনসংঘৰ প্ৰতিদিন সভাৰ অধিবেশনত অটলজীয়ে দিয়া ভাষণ শোটেই দেশত চৰ্চাৰ বিষয় হৈ পৰিল। সেই ভাষণত

তেখেত 'সেকাল'বন্দ অ'ক ভাৰতৰ উপৰত যি বিচাৰ প্ৰস্তুত কৰিলে, সেইটো সকলো ঠাইতে ভাল প্ৰশংসা পালে। সামাজিক সংস্কাৰ, অনুসূচিত জাতিৰ হিত, ধৰ্ম্মাৱলম্বনৰ প্ৰতিবোধ, চৌকোম্মোবাৰ্হিত্যৰ প্ৰশংসা, কচৰ পৰা পাৰ্কেস্থানে পো'বা অস্ত্ৰ শস্ত্ৰ, জম্মু কাম্বোজৰ হিত আদিৰ ওপৰত তেওঁ যি ধৰণৰ বিচাৰ প্ৰকট কৰিলে, সেইটো বহু জনৰ মনত যি'চ যি'চ গল।

(১১)

জৰুৰীকালত অটলজীক বেঙ্গলেৰ জেতন্ত বন্দী কৰি বহু হ'ল। তেওঁ, আডবাণীজী, দণ্ডবত্ৰেতা অ'ক শ্যামানন্দজী তেওঁলোকে বেঙ্গলেৰত সংসদায় সমিতিৰ বৈঠক এখনত ভাগ লবৰ বাবে গৈছিল। ১৯৭৫ চনৰ ২৬ জুনত তেওঁলোক সকলোকে জেতন্ত ভৰি থো'বা হ'ল। উপৰৰ পৰা আগতেই নিৰ্দেশ আ'হ'ছিল, তেওঁলোকক আগতে খানাতে গোটেই দিনটো বহু হৈছিল, পিছত জেতন্ত লৈ যো'বা হৈছিল। শাসনৰ দমন চকুই গোটেই দেশতে এক বিচিৰ ভয়ানক বাতৰিৰ সৃষ্টি কৰিছিল। তেওঁলোকক গ্ৰেপ্তাৰ কৰাৰ সময়তে খুব বেয়া বাতৰি কৰা হৈছিল। কাক কেঁতৰা গ্ৰেপ্তাৰ কৰা হয়, তাৰো কোনো ঠিকনা নাছিল। শাসনৰ নিলক্ষুণ্ণতায় দেশৰ সকলো 'বিলোহ' দলৰ নেত্ৰক জেতন্ত ভৰি দিয়া হ'ল। বা'ষ্ট্ৰ'য় স্বয়ং সেবক স্বয়ং সেবক সকলক নি'চম ঠাইত অনুসন্ধান কৰি ধৰা হ'ল। দেশত লোকপ্ৰহুৰ হতা কৰা হ'ল আৰু প্ৰধানমন্ত্ৰী ইন্দিৰা গান্ধীৰ একমাত্ৰক চ'লিব ধৰিলে। জেতন্তৰ পৰা কোনো ওলাই অ'হাৰ আশা হ' নাহ'কল। তেওঁৰ এই ক্ৰুৰতা আৰু অমানুসিক বাৰহাৰ বা'জনাৰে দিগ্ৰজ বা'ষ্ট্ৰ'য় নেতা সকলৰ লগত কৰিলে, তাৰ প্ৰতিশ্ৰুতি কেইদিনমান পিছত তেঁ ভুগিললৈ প্ৰস্তুত হ'ল। বহুদিনক সময়জান্দী নেতা জয়প্ৰকাশ নাৰায়ণকো ক'ৰকল্প কৰা হ'ল। তেওঁৰ বৃদ্ধাৰহুৰ প্ৰতি লক্ষ্য কৰি ক্ষমা কৰা নহ'ল। শ্ৰী সঞ্জয় গান্ধী বাজৰ অবেধ সাংবাদিক কেন্দ্ৰ হৈ পৰিল। বাজকাৰ্যত তেওঁ নিৰ্ণয় লব ধৰিলে। মন্ত্ৰী, মুখ্যমন্ত্ৰী আৰু উচ্চ বিষয়া সকলক তেওঁ নিৰ্দেশ দিব ধৰিলে। কয়েদী কৰিবলৈ অটলজীয়ে এইবোৰ শুনি খুব দুখ পালে, কিন্তু উপায় বা কি? তেওঁৰ হৈ, দেহকান্ত বৰুৱা কংগ্ৰেছৰ অধ্যক্ষ। তেওঁ লোকনায়ক জয়প্ৰকাশ নাৰায়ণক 'দৰবাৰী মসখৰা' আখ্যা দিলে। বৰুৱাজীয়ে তাৰ প্ৰমাণো দিলে। 'ইন্দিৰাই ভাৰত, ভাৰতেই ইন্দিৰা' বুলি কৈ তেওঁ সৰাওকৈ ডাঙৰ পাৰিতোষিক পাবলৈ ইকদাৰ হ'ল। তেওঁ এই কথাটো এবাৰো নাভাবিলে, কোনো মানুহ যিমানহি ডাঙৰ নহ'ক কিয় তেওঁ এখন 'বাষ্ট্ৰ' হ'ব নোৱাৰে।

বিপৰ্যয় পৰিহৃত্ত বত্ত সংখ্যক বাজবন্দী অসুখত পৰিল। অটলজীও অসুখত পৰিলে। তেওঁৰ আঙুলি বিভিন্ন ধৰণৰ কথা প্ৰচাৰ হ'ব ধৰিলে। কিন্তু কয়েদী কৰিবলৈ তেখেতৰ লগৰ বেদনা লৈ চিত্ৰ কৰা নাছিল, চিত্ৰত আছিল ভাৰতৰ কোটি কোটি মানুহৰ কষ্ট বেদনাত অসুখ বেশি হোৱাৰ লগে অটলজীক 'অল ইণ্ডিয়া মেডিকেল ইনষ্টিটিউট হাসপাতাল' লৈ স্থানান্তৰিত কৰা হ'ল। লগত প্ৰসিদ্ধ পত্ৰনাট্য চৰিত্ৰনাট্য তেওঁক ল'লেবন্দীত বহু হ'ল। 'চাৰুমা', 'জেন', 'বলৰ কাগজ' আদিৰ বাবে সদায় হেপাহত থাকিল।

(১২)

শেষত জৰ্জৰীকালৰ কলা মেঘে ঢাকি থোৱা একাৰ গুচি গৈ পোহৰ বিয়পি পৰিল জয়প্ৰকাশজীৰ উপদেশানুযায়ী “জনতা পাৰ্টি” নামেৰে নতুন দল এটা গঠন কৰা হ'ল। তেওঁৰ তৃতীয় জনসংঘৰ তাতৈ সন্নিবিষ্ট কৰা হ'ল।

১৯৭৭ চনত দেশজুৰি ঐতিহাসিক নিৰ্বাচন হ'ল। কংগ্ৰেছৰ কাৰণমাত্ৰ মানুহ অতিষ্ঠ হৈ আছিল। সেইবাবে কংগ্ৰেছৰ আশাতীত পৰাজয় আৰু জনতা পাৰ্টিৰ অপৰিসীম বিজয়ও দেশত নবীনক স্মৃতি উৎপন্ন হ'ল। অটলজীয়ে নতুন দিল্লীৰ পৰা নিৰ্বাচনত জিকিলে তেওঁক নতুন চৰকাৰৰ বিদেশমন্ত্ৰী পতা হ'ল।

তেখেতে যি দক্ষতাৰে নিজৰ কামখিলাক কৰিলে সেইবাবে দেশ, বিদেশত তেওঁৰ খ্যাতি বিয়পিলে। এনেকুৱা কিয় নহ'ব তেওঁৰ জৰ্জৰীত বিজয়ৰ ছাত্ৰ আছিল আৰু বিদেশ নীতি তেওঁৰ প্ৰিয় বিষয় আছিল।

যেতিয়া অটলজী বিদেশমন্ত্ৰী হ'ল কেইখনমান সমাচাৰ-পত্ৰত এই বুলি টিপ্পনী কৰা হ'ল- এতিয়া ভাৰতৰ সম্বন্ধ প্ৰতিবেশী দেশবিলাকৰ লগত ইমান ভাল নাথাকিব, বিশেষকৈ পাকিস্থানৰ লগত। কিন্তু যেতিয়া অটলজী পাকিস্থানলৈ গ'ল আৰু তেওঁৰ ভাষণত কলে “এতিয়া হিন্দুস্থানে, পাকিস্থানক অকল হৰিব ময়দানতেই হাবাব।” তেওঁৰ এই ভাষণত দুয়োদেশৰ মাজত বহুত বহুতৰবি যি মনোমালিন্য চলিছিল, সেইটো পৰিষ্কাৰ হৈ গ'ল।

ঠিক এনেকৈ ভাৰত আৰু নেপালৰ মাজত তেওঁ যি সমৰ্থন স্থাপিত কৰিলে, সেইটো দুয়ো দেশেই শলাগ ললে। তেওঁ নেপাললৈ যোৱাকালত এটা ভাষণত কলে – দুনিয়াত এনেকুৱা কোনো দেশ ওচৰত হ'ব নোৱাৰে, যেনেকুৱা ভাৰত আৰু নেপাল। ইতিহাসে, ভূগোলে, সংস্কৃতিয়ে, ধৰ্ম্মই আৰু নদী বিলাকে আমাক বান্ধি ৰাখিছে।


২৯ জুন ১৯৭৭ চনত বিদেশ নীতি বিষয়লৈ তেওঁ লোকসভাত কৈছিল। মই বিদেশ নীতি বিষয়লৈ প্ৰথমবাৰৰ বাবে কৈছো, মই ভাৰতমাত্ৰৰ লাখ লাখ লৰা ছোৱালীলৈ শুভকামনা পঠাই আছোঁ? যি সকল বিশ্বৰ বিভিন্ন প্ৰান্তত আছে। যি সকলে গ্ৰাম চৰকাৰৰ অধীনত নাইবা ব্যক্তিগত নাগৰিক ৰূপত কাম কৰি আছে, তেওঁলোক যদিও ৰাজীৱ গান্ধীৰ বাবে বিদেশলৈ গৈছে, তেওঁলোকক আমি কেতিয়াও পৰ বুলি নাভাবো। তেওঁলোকেও যেন নিজৰ মাতৃভূমিৰ সংস্কৃতি আৰু ধৰ্ম্মৰ প্ৰতি নিষ্ঠা স্বীকাৰ কৰিবলৈ কেতিয়াও সঙ্কোচ নকৰে।

সংযুক্ত ৰাষ্ট্ৰসংঘৰ ৩২ তম অধিবেশনত ভাৰতৰ ৰাষ্ট্ৰভাষা হিন্দীত ভাষণ দিয়া অটলজীয়ে প্ৰথম বিদেশমন্ত্ৰী সংযুক্ত ৰাষ্ট্ৰসংঘত তেওঁৰ ভাষণ ৪ অক্টোবৰ ১৯৭৭ চনত নিউইয়ৰ্কত দিছিল। তাৰে দুদিন আগতে গান্ধী জয়ন্তী অনুষ্ঠানত তেওঁ ওৱাশিংটনৰ গান্ধী স্মাৰক কেন্দ্ৰতো ভাষণ দিছিল।

তেওঁৰ এই যাত্ৰাত অটলজীয়ে ‘এশিয়া সোসাইটি’ ওখা অ'মেৰিকান থক্ৰ ভাৰতীয়

বিদেশশুল্ক কপত আয়কৰী হোৱা চ'নত চৰকাৰে মাৰ্গত কেইদিন গাভৰুওক স্থগিত
জনাবলৈ তৎপৰতা চ'নি বিদেশশুল্ক আঁতৰায়। অৱশ্যে ভাৰতৰ উত্তৰত কেইটা এইদৰে কৈছিল
- "পণ্ডিত জগদীশচন্দ্ৰ বোছকেই, অনুচৰ কৰা দুই, গাভৰু বুদ্ধি আৰু কৰা কৰা আৰু চ'নত
কেতিয়াও পাহৰিব নোৱাৰে

নিদেশ মন্ত্রী কপট আচৰণে যেতিয়া পাৰ্শ্বস্থান যাব কৰিবলৈ স্থিৰ কৰিলে তেতিয়া
 তাৰ আনক অৰ্থ লগে লগে গল্প কেওখনমান সমাচাৰ পঢ়াই এইটো সন্দেহ কৰিলে ভবিষ্যতত
 তাৰত আৰু পাৰ্শ্বস্থান সম্বন্ধ ইমান ভাল নহ'ব কিন্তু তেওঁলোকে তাকো নহ'ল অটলতা যতিয়া
 পাৰ্শ্বস্থানত গল্প তেওঁ ভোলাবলৈ জিয়া উলৈ হক, সেনাপাখি, মুখা, মাজিল ল'পাশাসক আৰু
 নিদেশ মন্ত্ৰীৰ সলহকাৰ হ'ব আশঙ্কা কৰিব লাগিব কথা বহুবা হ'ল। তেওঁলোকৰ কথা বহুবা

[illegible]

ॐ श्री गणेशाय नमः । श्रीगुरुदेव ! प्रसादं मे भूयः ।

হুবি এই চৰকাৰত সকলোতকৈ ভাল হৈছিল। অকল দেশত নহয়, বিদেশতো অটলজী বিদেশমন্ত্ৰীৰ ৰূপত বহুত সন্মান কঢ়িয়াইছিল। জীৱাৰ মাজত দোহৰী সদস্যতাই দলৰ মাজত ফাট দেখা দিলে। ফলস্বৰূপে জনতা দল ভাঙি গ'ল আৰু চৰকাৰ শেষ হৈ গ'ল।

পূৰ্ব জনসংঘৰ ঘটক সদস্যই অটলজী আৰু আডবাণীজীৰ নেতৃত্বত 'ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টি' (ভাজপা) গঠন কৰিলে। ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিৰ প্ৰথম অধিবেশন মুম্বাইত ৬ এপ্ৰিল ১৯৮০ চনত হৈছিল। এই অধিবেশনত দেশৰ বিভিন্ন প্ৰান্তৰ পৰা পূৰ্ব জনসংঘৰ বহু কাৰ্যকৰ্তা একত্ৰিত হৈছিল। তেওঁলোক সকলোৰে মাজত নতুন পাৰ্টিৰ নাম "ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টি" ৰখা হ'ল। এই অধিবেশনৰ অধ্যক্ষত্ব অটলজীয়েই কৰিছিল।

অধিবেশনত 'একাত্ম মানববাদ' ক পাৰ্টিৰ প্ৰধান দৰ্শন বুলি স্বীকাৰ কৰা গ'ল। পাৰ্টিৰ পতাকা, নিৰ্বাচন প্ৰতীক, সংগঠনাত্মক চাঁচা, কেন্দ্ৰীয় নিৰ্বাচন সমিতি, প্ৰদেশীয় নিৰ্বাচন সমিতি আদি সকলো বিলাক সৰ্বসন্মতি ক্ৰমে ঠিক কৰা হ'ল। সাকাৰাত্মক ধৰ্ম নিৰপেক্ষতাক এই অধিবেশনত স্বীকাৰ কৰা হ'ল। অটলজী ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিৰ সংস্থাপক সদস্য।

ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিয়ে কমল ফুলক তেওঁলোকৰ নিৰ্বাচন চিহ্ন ঘোষিত কৰিলে। ভাৰতীয় সংস্কৃতিত প্ৰাচীনকালৰ পৰা জৰিত 'কমল'ৰ-মহাত্মক অত্যন্ত শ্ৰদ্ধা সহকাৰে প্ৰস্তুত কৰা হ'ল। আমাৰ পুৰাণত লিখা আছে যে কমলৰ পৰাই সৃষ্টিৰ উৎপত্তি হৈছিল। কমল আনন্দৰ প্ৰতীক। বাস্তৱত মংগলসূচক কমল আমাৰ সংস্কৃতিৰ একে কুৰা প্ৰতীক, যিয়ে নেকি পাবনতা, শুদ্ধতা, নিৰ্মলতা, কোমলতা আৰু চাক্তাৰ নানা ভাৱ ব্যক্ত কৰি থাকে।

কমল অটলজীৰ ভাল লাগে, কিয়নো তেওঁ সৌন্দৰ্য প্ৰেমী, প্ৰকৃতিপ্ৰেমী আৰু লগতে কৰিও।

কমলৰ জন্ম বোকাতে হয়, সেইবাব কমলক পক্ষজো কোৱা হয়। কিন্তু বোকা দেখা নাযায় বোকাৰ উপৰত উঠি নিজৰ অস্তিত্বৰ ঘোষণা কৰে আৰু এই সিদ্ধান্তৰ প্ৰতিপাদন কৰে যে জন্মৰ পৰা কোনো হেয় বা নীচ নহয়। বস্তু তথা ব্যক্তিৰ মূল্যায়ন তেওঁৰ চৰিত্ৰ আৰু গুণৰ উপৰত নিৰ্ভৰ কৰে।

যেতিয়া ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিয়ে কমলক নিজৰ নিৰ্বাচন চিহ্ন ৰূপত স্বীকাৰ কৰিছিল, তেতিয়া এইটো ভাবে তেওঁলোকৰ মনত কাম কৰিছিল যে ৰাজনীতিৰ বোকাৰ ময়দানত তেওঁলোকৰ পাৰ্টিৰ কমলৰ দৰে প্ৰস্ফুটিত কৰিব লাগিব। দেশৰ কোটি কোটি জনসাধাৰণক ভালদৰে বুজাবৰ বাবে কমলৰ লগত ফুল শব্দ লগাবলৈ প্ৰয়োজন হ'ল।

সপ্তম লোকসভাৰ নিৰ্বাচনত অটলজী আকৌ নতুন দিল্লীৰ পৰা যুঁজিলে আৰু বহুমতত বিজয়ী হ'ল। কংগ্ৰেছে চৰকাৰ বনালে আৰু অটলজী বিপক্ষ দলৰ নেতা হৈ বহিল। সেই সময়ছোৱাত উত্তৰ প্ৰদেশত কেইখনমান ঠাইত হাৰজনৰ ওপৰত অত্যাচাৰ চলোৱা হ'ল। অটলজী সেই খবৰ পাই বৰ দুখ পালে আৰু তেওঁ চিৰাং কৰিলে সেই ক্ষেত্ৰত গৈ পদ যাত্ৰা কৰি মানুহৰ

মনত আত্মবিশ্বাস জাগৃত কৰিব।



‘দি আসাম ট্ৰিবিউন’ৰ হাঁৰক জয়ন্তী উপলক্ষে
চেয়াৰমেন টি জি বৰুৱাই বিশিষ্ট অতিথি অটলজীক
শৰাইয়েৰে সন্মৰ্দনা জনাইছে

কোনো কণ্ড হেঁৰা নাই বুলি? অসমৰ মানুহক অ'পুনি জৰাৰ দিব লাগিব, মানুহৰ মুকাবিলা কৰিব লাগিব এইটো বিষয় লুকাই থোৱা বিষয় নহয় স্থিতিটোক কেতিয়াও লুকাই থব নোৱাৰি।

কংগ্ৰেছে নিজৰ গাদী সুৰক্ষিত কৰিবৰ বাবে পাঞ্জাবত আতঙ্কবাদক প্ৰথমতে উদগনি দিছিল, পাহত ভয়গ্ৰস্ত হৈ অশান্ত ক্ষেত্ৰ ঘোষনা কৰিছিল অটলজীয়ে সংসদত থিয় হৈ ইয়াৰ বিৰোধ কৰিছিল তেওঁ কৈছিল “সম্প্ৰতি পাঞ্জাবৰ জনতা দুটা পাৰ্টিৰ মাজত নিজকে পিহিছিল। এফালে আতঙ্কবাদী য় নিৰ্দোষী মানুহ বেৰক মাৰিছিল অন্যফালে পুলিচৰ লগত সংঘৰ্ষত নিৰপৰাধ নাগৰিকৰ প্ৰাণ লোৱা হৈছিল।

গৃহমন্ত্ৰীজীয়ে কৈছিল আমি আকালি সকলৰ লগত কথা পাতিবলৈ সাজু আছো আৰু আকালিৰ লগত মিলি চৰকাৰ গঠন কৰিবলৈ প্ৰস্তুত তেনেহলে পাঞ্জাবক উপদ্রবগ্ৰস্ত ঘোষিত কৰিবলৈ কিয় লাগিছিল? মই গৃহমন্ত্ৰী মহোদয়ক শুধিব বিচাৰিছো কিমান উগ্ৰবাদী ধৰা পৰিলে? চাৰিহাজাৰৰ বেছি লোকক গ্ৰেপ্তাৰ কৰা হল তাত হয়তো তস্তৰ, সমাজ বিৰোধী, চোৰ, বদমাচ আদি আছে। তাৰ মাজত উগ্ৰপন্থী কিমান বা আছে? মই বিচাৰো চৰকাৰে এখন শ্বেতপত্ৰ প্ৰকাশ কৰক শ্বেতপত্ৰত মুখাৰুপত দুটা কথা হব লাগিব উগ্ৰপন্থী কোন? উগ্ৰপন্থী সকলৰ কোন ৰাজনৈতিক দলৰ লগত সম্বন্ধ আছে? কোন ৰাজনৈতিক নেতাৰ লগত সম্বন্ধ আছে? খানসাদলৰ স্থাপনা কোনে কৰিছিল? ১৯৮০ চনৰ নিৰ্বাচনত সন্ত ভিণ্ডাৱালে আৰু তেওঁলোকৰ সহযোগী সকলৰ সহযোগ আৰু সমৰ্থন কোনে লৈছিল?

যেতিয়া পাঞ্জাবত আতঙ্কবাদীৰ হাতৰ পৰা হৰমিন্দৰ সাহিব খালি কৰিবলৈ সন্দৰ্ভত এখন শ্বেতপত্ৰ জাৰী কৰা হৈছিল তেতিয়া অটলজীয়ে বহুত সংযত ভাষাত কৈছিল—“মই প্ৰথমতে সেনাৰ অফিচাৰ আৰু জোৱান সকলক শুভেচ্ছা জনাইছোঁ যি সকলে নিজৰ বহুদূলা জীৱন সমৰ্পিত কৰি শিখৰ পবিত্ৰতম তীৰ্থ অৰু সকলো ভাৰতীয়ৰ শ্ৰদ্ধাৰ স্থান শি হৰমিন্দৰ সাহিবক আতঙ্কবাদীৰ পৰা মুক্ত কৰিলে আৰু তেওঁৰ পবিত্ৰতা পুনঃ স্থাপিত কৰিলে কোনোবা ধাৰ্মিক স্থানত সেনা পঠোৱা এইটোৱে প্ৰথম আৰু শেষ হ'ব লাগে। বাকীকোৱা পৰিস্থিতি আৰু হ'ব দিব নালাগে আন্তৰিক ব্যৱস্থাত দেখা শুনা কৰা পুলিচৰ কৰ্তব্য।

অটলজী স্পষ্টবাদী, স্পষ্ট কথা কওঁতে কেতিয়াও সঙ্কোচ নকৰে দেশ এক হৈ থাকি বুলি হলে কোন এটা পাৰ্টিৰ কাৰণে নাথাকে কোন এজন মানুহৰ কাৰণে নাথাকে, নাথাকে এটা পৰিয়ালৰ কাৰণে দেশ এক হৈ থাকিব দেশৰ ৭০ কোটি জনতাৰ দেশভক্তিৰ বাবে হৈ

অটলজী ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিৰ ৰাষ্ট্ৰীয় অধ্যক্ষ নিৰ্বাচিত হলে তেওঁৰ কুশল নেতৃত্বত পাৰ্টিয়ে নিজৰ জনধৰ মজবুত কৰিলে, জনতাৰ বিশ্বাসনীয়তাৰ কাৰণে পাৰ্টিৰ সদস্য সংখ্যা বাঢ়িলে মহিলা, যুৱক আৰু মুচলমানৰ সংখ্যাও পাৰ্টিত বঢ়িবলৈ ধৰিলে। পাৰ্টিৰ গতিপ্ৰধান কৰিবৰ বাবে তেওঁ দেশৰ বিভিন্ন ঠাইত যাত্ৰা কৰিলে।

১৯৮৭ চনৰ ১২, ১৩ আৰু ১৪ অক্টোবৰত পুণেত অনুষ্ঠিত হৈছে ভাৰতীয় জনতা

পাৰ্টিয়ে নতুন উৎসাহ পালে।

(১৪)

হাৰিলে



বিৰোধী পক্ষৰ হলেও আমাৰ মাজত শত্রুতা নাই -

তেখেতৰ নিজৰ ওজন
গম পাই যাব। মোৰ মতে,
এই টো একে বাবে
মনেসজা কাহিনী
ৰাজনৈতিক বিৰোধীৰ
প্ৰতি অশিষ্টতা ব্যৱহাৰ
কৰা মোৰ স্বভাৱত নাই।
শ্ৰী সিন্ধিয়াৰ প্ৰতি মোৰ
সহজ স্নেহ আৰু সন্মান
ভাব আছে। তেওঁক
জনসংঘৰ সদস্য মই হৈ
কৰিছিলোঁ

অটলজী কোনো সদনৰ সদস্য হৈ থকা নাছিল। লোকসভা নিৰ্বাচনত হৰি যোৱাৰ আগতে এক বছৰ ধৰি ৰাজ্যসভাৰ সদস্য হ'ব পৰা নাছিল।

১৯৫৭ চনৰ পৰা সম্প্ৰতি ১৯৯৬ চনলৈ কেৱল ১৯৮৫ চনক বাদদি অটলজী সংসদৰ কোনো নহয় কোনো সদনত সদস্য হৈ আছিল। ১৯৮৬ চনত অটলজী পুনঃ ৰাজ্যসভাৰ সদস্য নিৰ্বাচিত হ'ল। প্ৰতিপক্ষৰ সদস্য যদিও সংখ্যাত সত্তা পক্ষতকৈ কম, কিন্তু বিদ্বতা, অনুভৱ আৰু সংসদীয় জ্ঞানত বহুতো যোগা আছিল। কংগ্ৰেছৰ যুৱা প্ৰধানমন্ত্ৰী ৰাজীৱ গান্ধীয়ে নিজৰ বহু যুৱক মিত্ৰকে ৰাজ্যসভাত সদস্য কৰি ল'লে। ৰাজ্যসভাত অধিক অনুভৱী আৰু সুযোগ্য ব্যক্তিক ল'ব লাগে, কিন্তু এনেকুৱা ক'ত হৈ আছে?

পৃথকবাদে দেশৰ অ'গত যেতিয়া যেতিয়া সমস্যাৰ সৃষ্টি কৰি দিয়ে, দিল্লী চৰকাৰ তেতিয়া মূৰ নুৰাবলৈ বাধ্য হয়। আমি ধৰ্মস্থানৰ পৰা ৰাজনীতিক নিয়ন্ত্ৰণ হ'বলৈ দিব নোৱাৰোঁ। ধৰ্মৰ ব্যাপক অৰ্থ আছে। এই সময়ত মই তাৰ বাখ্যা কৰিব বিচৰা নাই।

মুশাবৰাতে মুচলিম সম্প্ৰদায়ক আপীল কৰিছে যে নিজৰ নিৰ্বাচনী ক্ষেত্ৰত সাবধান পূৰ্বক এজন প্ৰতিনিধিক নিৰ্বাচন কৰি তেওঁৰ বাবে এক হৈ ভোট দিয়ক। লগতে এইটো ও গম পাব লাগে অকল মুচলিম সমন্বয়ত প্ৰতিনিধিজন নিৰ্বাচিত হৈছে।

যি সকলে কেৱলত মুচলিম লীগৰ লগত সহযোগ কৰিছে, মৃতপাহ মুচলিম লীগক জীয়াই তুলিছে। যি সকলে হাযদৰাবাদৰ লোকসভা সিট জিৰ্কাৰৰ বাবে মজলিস ইতিহাদুল মুসলমীনৰ সমৰ্থন লৈ আছে, তেওঁলোকৰ মানুহ হাযদৰাবাদৰ মেয়ৰ হৈ আছে, তেওঁলোকে যেতিয়া সাম্প্ৰদায়িকতাৰ লগত যুজাৰ কথা কয় তেতিয়া বাহ্যিক ৰূপটো ধৰা পৰে। কোৱা আৰু কৰাৰ মাজত মিল থাকিব লাগে। এফালে সাম্প্ৰদায়িকতাক উচিত হৈ দি, আনফালে সাম্প্ৰদায়িকতাৰ লগত যুজিব নোৱাৰে।

এই সময়ত হিন্দু সমাজত যিটো প্ৰবৃত্তিৰ জন্ম হৈছে, সেইটোৱে মোৰ মনত চিন্তাৰ সৃষ্টি কৰিছে। হিন্দুয়ে যদি নিজৰ উদাৰতা এৰি দিয়ে, হিন্দুয়ে যদি সংকীৰ্ণ হৈ যায়, সঙ্কুচিত হৈ যায় তেতিয়া এই দেশৰ ভৱিষ্যত অন্ধকাৰ হৈ যাব। অৰ্জি হিন্দুৰ মনত এক প্ৰতিক্ৰিয়াৰ সৃষ্টি হৈছে, কিয়নো ৰাজনৈতিক দলৰ অকল ভোটৰ হৈ চিন্তা।

কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰে সুভাষ ঘীসিংক প্ৰশয় দি দেশৰ পূৰ্বসীমাত একপ্ৰকাৰ উত্তেজনাৰ বাতাবৰণৰ সৃষ্টি কৰিছে। এই বাতাবৰণে বঙ্গদেশৰ ৰাইজৰ বাবে সুৰক্ষা সম্বন্ধত আশংকা উৎপন্ন কৰিছে। অটলজীয়ে ৰাজ্যসভাত তেওঁৰ ভাষণত স্পষ্ট কৰি কৈছে 'পাঞ্জাবৰ সাম্প্ৰদায়িকতাক কিছু পৰিমাণে দোষ দিব পাৰি। কিন্তু গোৰখালেও কি হৈ আছে? শ্ৰী সুভাষ ঘীসিং হিন্দু ইয়াত হিন্দু, শিখ, মুচলমানৰ কথা নুঠে কেন্দ্ৰ চৰকাৰে পৰিস্থিতিক এনেকুৱা 'মিছ হেণ্ডলিঙ' কৰিলে শ্ৰী সুভাষ ঘীসিং আৰু সকলো গোৰখা, নেপালী নেও হৈ গ'ল। তেওঁলোকক প্ৰবৃত্তা বনাই দিয়া গ'ল। মই যেতিয়া শিলাঙীত গৈছিলোঁ তেতিয়া প্ৰতিদিনৰ পাছত বন্ধ পালন কৰা

[illegible][illegible][illegible]

অন্যত্রাণ্য লক্ষণ সমূহ আকল্পনা ও কল্পিতাও নহা পদবল্যে নিয়মিত। ইতিহাসি
চলিত। জল আতিথিলে ওই এক মতাবলি প্রকাশ্যে দলে ভূমিকা নির্দেশ করি যাইছিল। অন্যত্রাণ্য
বলিল যে মতাবলি আকল্পিত ও কল্পিত সমূহ ও অন্যত্রাণ্য বাক্য সমূহ ও নিয়মিত। ইতিহাসি

[illegible]

মিজোৰামৰ সমস্যা যেনেও ঔৎকৰ্ষ ধাৰণ কৰিলে চৰকাৰে তেতিয়া ল'লডেঙ্গাৰ লগত কিছু গুপ্ত আলোচনা কৰিলে, তেতিয়া আটলজীয়ে ৰাজ্যসভাত ধ্যানাকৰ্ষণ প্ৰদান কৰিলে 'মিজোৰামত হাজাৰ সংখ্যাত চাক্‌মা আছে যি সকল বোদ্ধ, ইসাই নহয়। মিজো নেশনেলফ'ৰেণ্ট খৃষ্টিয়ান প্ৰদেশ বনাবলৈ বিচাৰে' ঠিক আছে সেইতে সংৰোধনত সেইটো কথাক অলপ বেলেগ কৰি থৈছে এতিয়া চাক্‌মা প্ৰিয়াকৰ এখন জিলা আছে, এটা ডিস্ট্ৰিক্ট কাউন্সিল আছে ল'লডেঙ্গা যি সেই কাউন্সিলক সমাপ্ত কৰিব বিছাৰিছে। চাক্‌মাৰ বাবে চৰকাৰে ইউনিয়ন টেৰিটৰী গঠন কৰিবৰ বাবে বিচাৰ কৰিছে নেকি? মিজোৰাম এখন পাহাড়ী জিলা আছিল, তাক উন্নত কৰি ৰাজ্য বনোৱা হ'ল। পাঁচ লাখতকৈ কম আবাদী ৰাজ্য। তাৰে বেলেগ হাইকোর্ট হ'ব, বেলেগ ইউনিভাৰ্চিটি হ'ব। দেশৰ অন্যভাগৰ পৰা যদি এনেকুৱাকৈ সকলোৱে দাবী কৰে তেতিয়া আপুনি কেনেদৰে প্ৰতিৰোধ কৰিব? ইনাৰ লাইন বিয়ত স্পষ্টীকৰণ জৰুৰী। বিয়না জম্মু-কাশ্মীৰত যোৱাৰ বাবে পৰমিট নালাগে। যদি এই প্ৰাবধান ট্ৰাইবেল সকলক বক্ষণ কৰিবৰ বাবে কথা হৈছে তেতিয়া গৃহমন্ত্ৰী মহোদয়ক সময় দিব লাগিব ইয়াৰ লক্ষ্যপোহা হ'ব নালাগে। অ'মি মিজোৰামৰ মানুহৰ জীৱন মুখ্যধাৰাত আনিব বিছাৰিছে।

ক'ংগ্ৰেছ চৰকাৰৰ ভুল নীতিৰ বাবে দেশৰ আন্তৰিক আৰু বাহ্যিক স্থিতিক বহুত শোচনীয় কৰি দিলে। পাঞ্জাব আৰু দিল্লীৰ দাঙ্গাত বহু নিৰ্দোষী লোক মৰা গ'ল। সম্পূৰ্ণ দেশ ক'ম্প উঠিল। এক জাগৰক সংসদৰ ভূমিকা পালন কৰোঁতে আটলজীয়ে ১৯৮৬ চনৰ ১১ নবেম্বৰত ৰাজ্যসভাত চৰকাৰৰ বিপক্ষে এনেদৰে কৈছিল - দিল্লীৰ দাঙ্গাত যিসকলৰ হাত তেজেৰে ৰঙা হৈছিল, তেওঁলোকে পাঞ্জাবৰ সমস্যা সফলতাপূৰ্বক সমাধান কৰিব পাৰিবনে এই বিষয়ে মোৰ সন্দেহ আছে। দিল্লীত দাঙ্গাৰ বাবে কোনবা দোষৰ ভাণী হ'ব লাগিব। কোনবাই শাস্তি মূৰ পাতি ল'ব লাগিব। হিন্দীৰাজ্যত তাৰ পাছত যোঁৱা শত শত শতিকা তাত মৰা হৈছিল তেতিয়া আপনালোক ক'ত আছিল? দাঙ্গাৰ তদন্ত কৰিবলৈ কমিশন বনালে, সেইটো ও দিবটোক আৰু তেওঁলোকক ভাৰতৰে কাম কৰিব নিদিলে, কিন্তু এতিয়া ৰিপাৰ্টবোৰ ঢাকিব নালাগে। "

আটলজীয়ে ব্যক্তি আৰু ৰাষ্ট্ৰ-দুয়োটাৰে উত্থানৰ বাবে শিক্ষা বাবদাক উন্নত কৰিব বিচাৰে। তেখেতে ভাৰতক এক সুশিক্ষিত দেশ হিচাবে পৰ্যায় সন্মত আগহী। য'ত নোক নিজৰ প্ৰাচীন সাহিত্য, সংস্কৃতি আৰু কলাৰ সহায়ত বৰ্তমানৰ দিশ নিৰ্দেশন কৰিব পাৰি। তেওঁৰ মতে আমাৰ অতীত স্বৰ্ণময় আছিল। আমাৰ ভৱিষ্যতকো এনেকুৱা স্বৰ্ণময় কৰিবৰ বাবে বৰ্তমানৰ পৰা যত্নপৰ হ'ব লাগে।

শিক্ষাৰ মাধ্যম কি? এই বিষয়ে আটলজীয়ে সদায় একে কথায় কৈ থাকে। শিক্ষাৰ মাধ্যম মাতৃভাষা হ'ব লাগিব। উচ্চৰ পৰা উচ্চতৰ শিক্ষা মাতৃভাষাৰ মাধ্যমত দিব লাগিব।

প্ৰেছ মানহানি বিলাক (বিৰোধকৰ) ওপৰত ৰাজ্যসভাত আটলজীয়ে চৰকাৰক বুজায় নিজৰ বক্তব্যত কৈছিল জনমতৰ কথা স্বীকাৰ কৰিব লাগে আৰু জনমতৰ আগত মূৰ নত কৰা

লোকতন্ত্রী চৰকাৰৰ বাবে কোনো লাভৰ কথা নহয়

১৯৮৮ চনৰ নবেম্বৰ মাহত অটলজী চিকিৎসাৰ বাবে নিউইয়ৰ্ক চহৰলৈ গৈছিল। তাৰ মাজতে ২৩ নবেম্বৰত তেওঁ 'ধৰ্মযুগ' পত্ৰিকাৰ সম্পাদকলৈ এখন চিঠি দিছিল।

“নিশ্চয় আপুনি জানে মই চিকিৎসাৰ বাবে ইয়াত আহিছোঁ.... ডক্টৰে যিদিনা কলে অস্ত্ৰোপচাৰ কৰিব লাগিব, সেই ৰাতি চিন্তা কৰি মই ভালদৰে শোব পৰা নাই। এক আশঙ্কায় মোৰ মনক ব্যথিত কৰিলে। সেই মুহূৰ্ত্তৰ অনুভূতিখিনি মই কবিতাৰ ৰূপত লিপিবদ্ধ কৰিলো।

(অটলজীৰ কবিতাটোৰ অসমীয়া অনুবাদ শ্ৰী নৰেন্দ্ৰদেৱ শাস্ত্ৰীৰ কিতাপ 'মোৰ একাৰমটি কবিতাৰ' সহায় লৈ ইয়াতে উদ্ধৃত কৰা হ'ল।)

কবিতাখনৰ শীৰ্ষক 'মৃত্যুৰ সতে যুঁজ'

যুঁজ
মৃত্যুৰ স'তে যুঁজ
যুঁজ কৰাৰ ইচ্ছা নাছিল
কৈকুৰিত লগ ধৰিম
তেনে কোনো কথা নাছিল
বাট আগটি থিয় হ'ল
জীৱনতকৈও যেন ডাঙৰ হ'ল।
মৃত্যুৰ আয়ুস কিমান?
এক মুহূৰ্ত্তও নহয়
জীৱনৰ যিটো ক্ৰম
আজি-কালিৰ নহয়
গোটেই জীৱন ইচ্ছা মতে জীলোঁ
মনেৰে কিয় মৰোঁ
উভতি তো আহিমই
যাহাত কিয় ডৰোঁ?
ইহা তত সাৰে ভৰিত সাৰে
লুকাই চুৰকৈ নাহিবি,

সন্মুখ সমৰ কৰি
মেৰ শক্তি বুজিব।
মৃত্যুৰ পৰোৱা নাই
যাত্ৰা জীৱনৰ
প্ৰতি সন্ধ্যা চুৰ্মা নীল
ৰাবি বাঁহীৰ স্বৰ,
এনেকুৱা কথা নহয় যে নাই দুখ দহন
ব্যথা নিজৰ পৰৰ অলপো নহয় কম
পৰৰ পৰা পাইছোঁ ইমান মৰম
নিজৰ বোৰ তো হোৱা নাই কোনো এনে মৰম
প্ৰজাহৰান কিমান আহিছে
যুঁজিছোঁ প্ৰাণ টাকি
ধুমুহাত জ্বলাইছোঁ
নুমাই যোৱা চাকি
আজি ভয়ংকৰ বুকু কঁপোৱা তুফান তীব্ৰ গতি
চাকনৈয়াৰ দুবাহুত নৌকা অতিথি
পাৰ পোৱাত সমৰ্থ যদি উৎসাহ
দেখি তুফানৰ তাণ্ড
নৌকাৰো ৰুদ্ধৰূপ
মৃত্যুৰ স'তে যুঁজ।

১৯৯০ চনত যোঁতিয়া আৰক্ষণৰ বিষয়লৈ ছাত্ৰ ছাত্ৰীৰ মাজত চৰম নিৰাশা উৎপন্ন হৈছিল আৰু তেখেতসকলৰ আত্মদাহত গোটেই দেশ শোকাবুল হৈছিল, কিন্তু শাসন মৌন

আছিল অত্যাধিক সম্পৰ্ভত অটলজীয়ে ১ আক্টোবৰত ৰাজ্যসভাত বৈঠক। “পৰিহীত বিবেচক কোমল যদি কও অতিশৰোভি নহব কিয়নো ভাৰতৰ আগত এনেকুৱা পৰিহীত কেতিয়াও হোৱা নাছিল। আমাৰ যুৱক, কোমল ল’ৰা ছোৱালী অত্যাধিক কৰি আছে, নিজৰ প্ৰাণ লৈ খেঁচি আছে কোনো এনেকুৱা দুখৰ কথা আছে যিয়ে নেকি সিহঁতৰ মনৰ ভিতৰলৈকে স্পৰ্শ কৰি আছে আমি তাৰ কাৰণ বিছৰিবলৈ যত্ন কৰিব লাগিব।”

স্বতন্ত্ৰ সেনানীৰ ত্যাগ আৰু বলিদানে আজি দেশ স্বাধীন হল দেশ স্বাধীন হোৱাৰ পাছত নৈখিত সকলোক মাহকীয়া পেনচন দিয়া হল সেই পেনচন কিবা কাৰণত বন্ধ কৰা হলে কিমান অশোভনীয় হব এনেকুৱা এটা ঘটনা বিহাৰত হৈছিল বিহাৰ তে, বিহাৰেই, ইয়াত কিবা নহয় কিবা এটা ঘটিয়েই থাকে বিহাৰৰ পৰিহীত স্বতন্ত্ৰতা-সংগ্ৰাম সেনানী পণ্ডিত দ্বাৰিকানাথ তিৱাৰী, যিজন নেকি কেইবাবাৰো জেলত গৈছিল সংসদ সদস্য ও আছিল আৰু কংগ্ৰেছ ওয়াকিং কমিটিৰ সদস্য হোৱাৰ সন্মানও পাইছিল সেইজনাৰ পেনচন বন্ধ কৰি দিয়া হৈছিল।

তিৱাৰীজীয়ে অটলজীক এই মোকদ্দমা সদনত উঠাবলৈ কৈছিল স্বতন্ত্ৰতা সেনানীক অপমান কৰি এই দেশে নিজৰ স্বতন্ত্ৰতা ৰক্ষা কৰিব নোৱাৰে আৰু এই চৰকাৰে স্বতন্ত্ৰ সেনানীক অপমান কৰি টিকি থাকিব নোৱাৰে

অটলজীয়ে মহাত্মাগান্ধীক দেশৰ নাটী ধৰিব পৰা মহাত্মাৰ বুলি মা নছিল যিদিনা জনতাৰদলৰ প্ৰধানমন্ত্ৰীয়ে দেশৰ দায়িত্ব লৈছিল সিদিনা তেওঁ নিজৰ সংশোধন ভাষণত এবাৰ ও মহাত্মাগান্ধীৰ নাম নললে এই কথাটো লৈ অটলজীয়ে ৰাজ্যসভাত এটা বিবেচনাত্মক ভাষণত কৈছিল — “প্ৰধানমন্ত্ৰীয়ে যেতিয়া সত্ৰা সন্তালিছিল আৰু দেশৰ নামত যি সংশোধন ভাষণ দিছিল, তাত মহাত্মা গান্ধীৰ নাম লোৱাই নাছিলে মই কাকো সৰু বা ডাঙৰ দেখুৱাবলৈ কথাটো কোৱা নাই। সমাজক বদলাবলৈ মহাত্মাগান্ধীৰ এটা কলা আছিল, এটা বিজ্ঞান আছিল তেওঁ সমাজক প্ৰভাৱিত লোকৰ চিন্তাধৰা সলনি কৰিব পাৰিছিল এতিয়া প্ৰশ্ন হল সামাজিক ন্যায় আৰু সামাজিক একতা কি পৰস্পৰ বিৰোধী? দুয়োটাতে একলগ কৰিব নোৱাৰি নেকি? সামাজিক ন্যায় আনিবৰ বাবে সামাজিক ‘সমৰ সত্ৰা’ সমাপ্ত কৰাৰ প্ৰয়োজন নেকি? জৰুৰী হব নালাগে? আমি এনেকুৱা নীতিৰ আশা কৰা যিয়ে নেকি সামাজিক ন্যায় হয় আৰু সমাজৰ ‘সমৰ সত্ৰা’ ও নাভংগে কোনো ডেকাই উত্থাপন হে, ভাৰনাত বৰ্ষীভূত হে অত্যাধিক কৰিবলৈ যেন নাহয় কিন্তু এই কাম কঠিন, আৰু কঠিন কামকেই কৰি দেখুৱাব লাগে কিন্তু এই কঠিনকাম এতিয়ালৈকে হোৱা নাই পেন ৰাষ্ট্ৰা ওলাই গৈ আছে সেইবাবে দেশ এই অনুবিধাত ফঁসি আছে এই অনুবিধাৰ পৰা ওলাবলৈ হলে সকলোৰে একেলগে বহিব লাগে আৰু একেলগে আলোচনা কৰা উচিত।”

ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিৰ বাদী যি অংশত মুৰলীমোহনৰ যোশীৰ একতা যাত্ৰায় জনতা দলবিলাকৰ পোট কামাৰনি আৰম্ভ হল সকলো দলে ভাৰিলে এই একতা যাত্ৰা লৈ ভাৰতপ্ৰদলে ৰাজ্য মাৰৰ আৰু আমি সকলোৰে পিছত পৰি যাম। সংসদ আৰু সংসদৰ বাহিৰতে ইয়াৰ

যেয়া প্ৰতিশ্ৰুতি প্ৰতিফলিত হ'ল। অটলজীয়ে সকলোৰে মুখামুখী অতি সংযম আৰু কৈৱৰ্ত্তি কৰিলে।

ৰাজীৱ গান্ধীৰ নিৰ্মম হত্যাও গোটেই দেশ শোকাবুল নিৰ্বাচনৰ দিন আছিল, আজতেই নিৰ্বাচন হুগিও হৈ গ'ল। তেওঁৰ দুখদ মৃত্যুত অটলজীয়ে গভীৰ শোক পালে। তেওঁ নিজৰ শোক সংবেদনাক উদাস আৰু গধুৰ মন লৈ ১৯৯১ চনৰ ৬ জুনত লোকসভাত শ্ৰদ্ধাঞ্জলি অৰ্পন কৰিছিল এনেদৰে -

“সভাপতি জী, মৃত্যু শৰীৰৰ ধৰ্ম। জন্মৰ লগত মৃত্যু জড়িত। কিন্তু মৃত্যু যোঁতয়া সহজ নহয়, স্বাভাৱিক নহয়, প্ৰাকৃতিক নহয়, জীৱানি বস্তুগি যথা বিহায় গীতাৰ এই ‘কেটি’ ত নাহে, যোঁতয়া মৃত্যু বিনা মেখে বজ্ৰপাতৰ দৰে খহি পৰে, যোঁতয়া পূৰ্ণ যৌৱনত কাৰো জীৱন পুষ্পক চিতাৰ জুহুয়ে ছাই কৰি পেলাই, যোঁতয়া মৃত্যু এক কুচ কৰ চিকাৰ হয়, এক বডযন্ত্ৰৰ পাৰণাম হয়। যোঁতয়া বুজিব নোৱাৰো মানুহে কেনেকৈ ধৈৰ্য্য ধাৰন কৰে, পৰিয়ালৰ মানুহে কেনেকৈ সেই বজ্ৰপাতক সহ্য কৰে। শ্ৰী ৰাজীৱ গান্ধীৰ জঘনা হত্যা আমাৰ ৰাষ্ট্ৰীয় মৰ্মত এক আঘাত, ভাৰতীয় লোকপুত্ৰও এক আৰু কলংক। আকৌ এবাৰ আমাৰ মহান সভাতা আৰু প্ৰাচীন সংস্কৃতি বিশ্বীত উপহাসৰ বিষয় হৈ গ'ল। কিজানি পৃথিৱীত এনেকুৱা দেশ নাই যিও ভাৰতৰ নিচানা অহিংসৰ কথা কৈ থকাৰ পাছত ৰাজনৈতিক ইমান হিংসা কৰে। এই হিংসা আৰু হত্যাৰ প্ৰবাহ বন্ধ কৰিব লাগিব।

সভাপতি মহোদয়, মই নিজৰ তৰফৰ পৰা, নিজৰ দলৰ আৰু হৃদয়ৰ পৰা শ্ৰী ৰাজীৱ গান্ধীৰ স্মৃতিত বিনম্ৰ শ্ৰদ্ধাঞ্জলি অৰ্পিত কৰিলো আৰু পৰমেশ্বৰক প্ৰাৰ্থনা কৰিছো প্ৰয়াত নেতাৰ আত্মাক সদগতি দিয়ক আৰু শোক সন্তপ্ত পৰিয়ালক এই বজ্ৰপাত সহ্য কৰিবলৈ শক্তি দিয়ক।”

(১৫)

দশম লোকসভা নিৰ্বাচনৰ আধিসূচনা জাৰী কৰা হ'ল। প্ৰত্যাশী সকলে নিজৰ নিজৰ নামাঙ্কন পত্ৰ ভৰিলে। অটলজীয়েও নিজৰ মনোনয়ন পত্ৰ লক্ষ্মী আৰু বিদিশা এই দুটা ক্ষেত্ৰতে প্ৰদান কৰিলে। তেওঁ দুটা সমষ্টিতেই বিজয়ী হ'ল। পাছত বিদিশা সমষ্টিৰ পৰা ত্যাগপত্ৰ দি দিলে আৰু লক্ষ্মীৰ চিটটি ৰাখিলে। কাৰণ যিয়ে নহওক, লক্ষ্মীৰ প্ৰতি তেওঁৰ স্নেহ বেছি। তেওঁৰ ৰাজনৈতিক জীৱনৰ আৰম্ভণি ইয়াতেই হৈছিল। ১৯৬৪ চনত তেওঁ ইয়াৰ পৰা ‘ৰাষ্ট্ৰধৰ্ম’ৰ সম্পাদকৰ কাম কৰিছিল আৰু কেইবা বছৰো ইয়াতেই আছিল।

লোকসভাৰ দশম সাধাৰণ নিৰ্বাচনৰ পাছত সদনৰ যি স্থিতি হ'ল তাত ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিৰ ১১৯ খন আসন পাই মুখ্য বিপক্ষ দলৰ ৰূপত প্ৰতিষ্ঠিত হ'ল। ২২৭ খন আসন পাই কংগ্ৰেছ সকলোতকৈ ডাঙৰ দল হ'ল। মাননীয় ৰাষ্ট্ৰপতি শ্ৰী আৰ, ডেচ্টেম্বৰ মণে যোঁতয়া কংগ্ৰেছ সংসদীয় দলৰ নেতা শ্ৰী নৰসিং ৰাওক চৰকাৰ গঠন কৰিবলৈ মাতিলে। যোঁতয়া সদনত কংগ্ৰেছৰ বহুমত নাছিল। এনেকুৱা স্থিতিত কংগ্ৰেছক চৰকাৰ গঠন কৰিবলৈ কোৱাৰ আগতে

ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিৰ লগত বিচাৰ বিনিময় কৰিব লাগিছিল কিন্তু ৰাষ্ট্ৰপতিয়ে যোৱা ভেঁও বছৰত সি ৰাফৰ্ণা এক অস্থিৰতা পাইছিল আৰু তাত ইমান ক্ষুদ্ৰ হৈছিল যে সেইবাবে তেওঁ কোনবা বেলেগ দলৰ লগত পৰামৰ্শ কৰিবলৈ আবশ্যকতা অনুভৱ কৰা নাছিল ১৯৯০ ৯১ চনৰ সময়মানে ভাৰতীয় ৰাজনীতিৰ ইতিহাসত ৰাজনৈতিক অস্থিৰতাৰ সময় ৰূপত গণ্য কৰা যাব।

জনতা দলৰ আৰু শ্ৰবিক কলহ আৰু বামপন্থী দলৰ শক্তিক বেছি মন্তব্য দিয়াৰ নীতিৰ বাবে অসুখপান প্ৰশ্ন কৰাতকৈ আৰু বেছি বেয়াৰ ফালেহে গ'ল আৰু দেশৰ বহুমান সংযুক্ত চৰকাৰৰ পতনৰ বাবে কৰা হোৱা নাছিল তেওঁৰ উদ্দেশ্য আয়োজিত শ্ৰী ৰাম মান্দৰ পুনৰ্নিৰ্মাণৰ পক্ষত ব্যাপক ৰাষ্ট্ৰীয় জনমতৰ্থন গোটেৱা এই উদ্দেশ্যত তেওঁ সফলতাও পাইছিল

অটলজীয়ে সংসদত যি বিষয়ৰ উপৰত ভাষণ দিছিল, সেই বিষয়ত পুৰা অভিজ্ঞতা হোৱাৰ পাছতহে তেওঁ প্ৰকাশ কৰিছিল ১৯৯২ চনৰ ২৩ মাৰ্চত লোকসভাৰ বাজেট প্ৰস্তাব চৰ্চাৰ সময়ত তেওঁ যি বিচাৰপূৰ্ণ তথ্যসমূহ আৰু তৰ্কসম্মত ভাষণ দিছিল তাৰে প্ৰশংসা গোটেই দেশতে হৈছিল। “দিনক দিনে বাঢ়ি যোৱা বেৰোজগাবৰ কি হব? ৰোজগাব দিবৰ বাবে সৰু উদ্যোগে মুখ্য ভূমিকা পালন কৰি আছে আৰু পালন কৰিব পাৰে তাত্ত্বিক উদ্যোগত পুঁজি প্ৰয়োগ প্ৰক্ৰিয়াত দেখা গ'ল তুলনা অনুযায়ী সৰু উদ্যোগে ছয়গুন ৰোজগাব উপলব্ধ কৰাৰ পাৰে যি দেশত নিৰ্দীতৰ বাবে ৪০ শতাংশ যোগদান দিয়ে নতুন অৰ্থনীতি অহাৰ পাছত লাইসেন্স, পাৰমিট, কৌশলৰাজ শেষ কৰাৰ পাছত, যেনেকুবাকৈ ঠিক দিশত আগুৱাই গৈছে, যাক আমি স্বাগত জনালোঁ, সৰু উদ্যোগৰ কি হব? এতিয় বিদেশী কোম্পানীবোৰ অহি আছে। তেওঁলোকে দাবী কৰি আছে সৰু উদ্যোগৰ বাবে উৎপাদনৰ বস্তু যেন বিজাৰ্ভ কৰি থোৱা নহয়

“আমাৰ দেশত বহু মাটো সোণ আছে এতিয়া স্বৰ্ণ ‘বাণ্ড’ জাৰী কৰা হৈছে বিদেশৰ পৰা সোণ আনিবলৈ এৰি দিয়া হৈছে। হাবলা বজাৰত সৰু উৎপন্ন হৈছে য'ৰ পৰা সোণ তত্ত্ববী ৰূপত আহিছিল, তাত এতিয়া বেয়া অৱস্থা হৈছে। বিদেশত সোণৰ দাম কমি গ'ল এই দাম আৰু কমিব আমি হিচাব কৰি চাওঁ। প্ৰতি দহ গ্ৰাম সোণ কিনাৰ পাছত এজন ভাৰতীয়ৰ আঠশ টকা কম দিব লাগিব যদি এক টকা হিচাব কৰিলে প্ৰতি টনত আঠ কোটি টকা বেছাই হব আনুমানিক এশ পঞ্চাশ টন সোণ দেশত উপযোগ হয়। তাৰ হিচাব কৰিলে বাৰশ কোটি টকা সঞ্চয় হোৱাৰ সম্ভাৱনা। দেশত কিমান সোণ আছে, তাৰ বেলেগ বেলেগ অনুমান, প্ৰায় ৭,৫০০ টন তাৰ পৰা যদি আমি দুই হাজাৰ টন মান সোণ জমা কৰি থব পাৰোঁ তেতিয়া দেশ অৰ্থিক সংকটৰ পৰা বহু মুক্ত হব। বস্তু পাৰ বাবে সৰু সোণৰ মিলি অভিযান চলোৱা আবশ্যক

অটলজীয়ে কৈছিল “স্বৰ্ণ অভিযান চৰকাৰৰ নাতিৰ্ভৰ্য সমাধি আৰু সংগঠন সমূহক জড়িত কৰিব লাগে। তাক আমি জন মান্দলৰ ৰূপটলৈ ল'ব পাৰোঁ। আমাৰ ৰাষ্ট্ৰীয় লক্ষ্য ৰূপমূক্ত ভাৰতৰ স্থাপনা আৰু তাৰে লক্ষ্য কৰা আৰু আমাৰ ৩২ চফৰ কোটি টকা ব্যয় দি

আছে। তাতে দেশী আৰু বিদেশী দুই প্ৰকাৰৰ ব্যাজ সামিল হৈ আছে। ভাৰতক ঋণমুক্ত কৰিব পাৰি এইটো অসম্ভৱ নহয়। দেশত পুঁজি আছে। সংকটৰ সময় দেশত পুৰা শক্তি লৈ থিয় হোৱাৰ আৱশ্যক। অৱশ্যকতা এই কথাৰে আমি দেশক অনুপ্রানিত কৰো আৰু অনুপ্রানিত কৰিবলৈ ঠিক ধৰণৰ নীতি মানি লব লাগিব।”

কৃষিৰ পৰা উৎপাদিত বস্তুৰ সমবায় সমিতি আছে, তাৰ হিচাপ ৰখা হয়, অডিট হয় আৰু সাৰ্বজনিক প্ৰকাশন হৈ থাকে কিন্তু কাৰখানাৰ বাবে এই সকলো কথা কিয় প্ৰযোজ্য নহয়। দুটাৰ মাজত এই মতভেদ কিয় হ'ব লাগে।

“শূদ্ৰাৰ প্ৰসাধন বস্তুয়ে ১,৪০০ প্ৰতিশত ল'ভ কৰি আছে ‘আনলিমিটেড কনজুমাৰিজম’ (Cousumerism) এই দুখীয়া দেশখনক নাজানো কলৈ লৈ যাব। ইয়াক প্ৰতিৰোধ কৰাৰ উপায় কি? চৰকাৰী টেলিভিচন, ডাঙৰ ডাঙৰ কোম্পানীৰ বিজ্ঞাপনে চলোৱা পত্ৰিকা বিলাক, বিজ্ঞাপন এজেন্সী আদিয়ে ‘আনলিমিটেড কনজুমাৰিজম’ৰ প্ৰচাৰ কৰি আছে। চৰকাৰৰ নিয়ন্ত্ৰাধীন টেলিভিচন বাদে ও‘কেবল টি ভি’ৰ বিভিন্ন চেনেলৰ মাধ্যমত প্ৰসাধনৰ বিজ্ঞাপন প্ৰচাৰ কৰা হৈ আছে। মানুহ থাকিবলৈ ভাল ঘৰ নাই জুপুৰীত বহি বিজ্ঞাপন চাই আছে ঘৰত কেচুৱাক খুৱাবলৈ গাখীৰ নাই কিন্তু শ্যাম্পু কিনি ব্যৱহাৰ কৰি আছে।”

১৯৯২ চনৰ ২৫ জানুৱাৰীত অটলজীক পদ্মবিভূষণ উপাধিৰে সন্মানিত কৰা হ'ল। নতুন দিল্লীত তেওঁৰ অভিনন্দন অনুষ্ঠানৰ আয়োজন কৰা হৈছিল। এই অভিনন্দন সমাৰোহত অটলজীয়ে স্ব জীৱন দৰ্শনৰ ওপৰত ৰচিত কবিতা পাঠ কৰি সকলোকে শুনাইছিল। কবিতাটোৰ শীৰ্ষক আছিল ‘উচাই’ (কবিতাটোৰ অসমীয়া অনুবাদ শ্ৰী নৰেন্দ্ৰদেৱ শাস্ত্ৰীৰ কিতাপৰ সহায়লৈ ইয়াতে সন্নিবিষ্ট কৰা হ'ল)

উচ্চতা

(১)

ওখ পাহাৰত

গছ নগজে

পুলি নহয়

ঘাঁহো নগজে।

জমে কেবল বৰফ

যি কফনৰ দৰে বগা আৰু

মৃত্যুৰ দৰে শীতল হয়

এগীডাৰত কুলু কুলু সুৰৰ নদী

যাৰ ৰূপ ধাৰণ কৰি

নিজৰ ভাগ্য সুঁৱৰি অশ্রু ঢোকে

এনে উচ্চতা

(৩)

প্ৰতিটো বোজা অকলে কঢ়িয়ায়

মুখত মিচিকিয়া হাঁহি মাৰি

নীৰয়ে সিজনে কান্দে।

প্ৰয়োজন হৈছে —

উচ্চতাৰ লগত বিস্তাৰো থাকক,

যাতে মানুহে

লঠঙাৰ দৰে থিয় হৈ থাকিব নালাগে,

আনৰ লগত মিলি-জুলি,

কাৰোবাক লগত লৈ

একেলগে বাট বুঢ়ে

ভিতৰ হেৰাই যোৱা

(২)

যাৰ পৰশনে
পানীক শিল কৰি দিয়ে,
ইমান উচ্চতা
যাৰ দৰশনে হীনভাৱ আনি দিয়ে
অভিনন্দনৰ অধিকাৰী
আবোহীসৱৰ বাবে আমন্ত্ৰণ
তাত পতাকা উৰাব পৰা যায়।
কিন্তু কোনো ঘৰ চিৰিকাই
তাত নাড় সাজিব নোৱাৰে
আৰু কোনো ক্লান্ত পথিকে
তাৰ ছাঁত ক্ষন্তেকৰ বাবেও
তল্লা আনিব নোৱাৰে।

সঁচা কথাটো হৈছে—

কেৱল উচ্চতাই যথেষ্ট নহয়
সকলোতকৈ বেলেগ
পৰিবেশৰ পৰা পৃথক্
আপোনাৰ পৰা বিছিন্ন হৈ
শূন্যত অকলে থিয় হোৱাটো
পাহাৰৰ মহত্ত্ব নহয়।
নিকপায় অৱস্থাহে।
উচ্চতা আৰু গভীৰতাৰ
আকাশ-পাতাল পাৰ্থক্য
সি যিমান ওখ
সি সিমানে অকলশৰীয়া

(৪)

স্মৃতিৰাশিত বুৰ যোৱা
নিজক পাহৰি যোৱাই
অস্তিত্বক অৰ্থ
জীৱনক সুগন্ধ দিয়ে
ধৰণীক বাওনাৰ নহয়
ওখ পাথ মানুহৰ আবশ্যক
ইমান ওখ যাতে আকাশ ছুব পাৰে,
নতুন নক্ষত্ৰসমূহত প্ৰতিভাৰ বীজ
বপন কৰিব পাৰে
কিন্তু ইমান ওখও নহয়
যাতে ভৰিৰ তলত দূৰবি নগজে,
কিবা কঁইটে নিবিঞ্চে
আৰু কোনো কলি নুফুলে।
নাথাকিব বসন্ত, শীত
থাকিব কেৱল উচ্চতাৰ ধুমুহা
মাত্ৰ একাকিত্বৰ নিস্তৰ্দ্ধতা।
মোৰ গ্ৰভু!
মোক ইমান উচ্চতা
কেতিয়াও নিদিবা
আনক ডিঙিত
সাৱটি ল'ব নোৱাৰোঁ
ইমান কক্ষতা
কেতিয়াও নিদিবা।

দেশ বিদেশত হিন্দী ভাষাৰ ধ্বজা উৰোৱা অটলজীক উত্তৰ প্ৰদেশ হিন্দী সংস্থানে ১৯৯২ চনৰ ২৮ চেপ্টেম্বৰত হিন্দী গৌৰৱ উপাধিৰে সন্মানিত কৰে। পুৰস্কাৰত প্ৰশস্তি পত্ৰৰ লগতে ৫১ হাজাৰ টকা সদৰৰে উপহাৰ দিয়া হল। তেওঁ সেই ধন লগতে আৰু ৫১ হাজাৰ টকা যোগেদি মুঠ এক লাখ দুইহাজাৰ টকা হিন্দী সংস্থানক দান দিলে। তেওঁ এই টকাৰ পৰা পিতা পণ্ডিত কৃষ্ণ বিহাৰী বাজপেয়ীৰ নামত উত্তৰ প্ৰদেশৰ বোৰ্ড পৰীক্ষাত হাইস্কুল তথা ইণ্টাৰমিডিয়েটত সৰ্বাধিক নম্বৰ পোৱা দুজন ছাত্ৰক ক্ৰমশঃ পাঁচ হাজাৰ আৰু সাত হাজাৰ টকা পুৰস্কাৰ দিবলৈ নিৰ্দেশন কৰিছিল। উত্তৰ প্ৰদেশ হিন্দী সংস্থানে ধনৰ সুদৰ পৰা প্ৰত্যেক বছৰ এই দুটা

পুৰস্কাৰ দি আহিছে।

সেই দিনাই আবেলি চাৰি বজাত উত্তৰ প্ৰদেশ হিন্দী সংস্থানে সভাকক্ষত এখন কিতাপ লোকপৰ্ণ কৰোঁতে অটলজীয়ে কলে- মই প্ৰসন্নতা প্ৰকাশ কৰিছো মোক এই কাব্য পুস্তক বিমোচন কৰিবলৈ দিয়া হৈছে। মই কাব্যপ্ৰেমী। কেতিয়াবা লিখোঁ, কিন্তু কাব্য গছ এখন লোকপৰ্ণ কৰো, মই ভাবো মোৰ ইমান যোগ্যতা নাই। সাহিত্যকাৰে সদায় জীয়াই থাকিবলৈ জানে আৰু সদায় জীয়াইয়ো থাকে সুখৰ কথা আজি ইয়াত ইমান কাব্যপ্ৰেমী গোট খাইছো আজিকালি ভাল কবিতাৰ অভাব কবি-সম্মেলনৰ স্তৰ বহুত নিম্নগামী। কেতিয়াবা কবি-সম্মেলনত যাব লগা হয়, কবিতা শুনিব লগা হয়। তেতিয়া অনুভৱ কৰো, ভাল কবিতাৰ অভাব, ভাল শ্রোতাৰো অভাব। যেতিয়া সুন্দৰ বাক্য কবিৰ হৃদয়ৰ পৰা ওলায় আৰু শ্রোতাৰ হৃদয়ত স্পৰ্শ কৰে গৈ তেতিয়া হে কবি গৰ সার্থকতা হয়। লক্ষ্ণৌৰ এক বিশিষ্ট সাহিত্যিক পৰম্পৰা আছে- এই পৰম্পৰা আৰু আগবাঢ়ি যাব লাগে।

গান্ধী জয়ন্তীৰ দিনা ৰাজভৱনত সাহিত্যকাৰ শ্ৰী বিষ্ণু প্ৰভাকৰৰ সন্মানত অটলজীয়ে এই বক্তব্যখিনি ডাঙি ধৰিছে- আজি একে লগে বহুত সুখদায়ক প্ৰসঙ্গ গোট খাইছে- আজি গান্ধীজীৰ ১২৫ তম জন্মতিথি, লাল বাহাদুৰ শাস্ত্ৰীৰ 'সালগিৰহ', তদুপৰি ৰাজাপালৰ হাতত মহান সাহিত্য শিল্পী শ্ৰী বিষ্ণু প্ৰভাকৰৰ সন্মান, এই তিনিটা ঘটনা আজি একেলগে দেখিবলৈ পাইছোঁ।

গান্ধীজীয়ে আমাক যুগ যুগ ধৰি অনুপ্ৰানিত কৰিব। চিন্তন আৰু বিচাৰৰ ক্ষেত্ৰত তেওঁ নতুন নতুন কলা প্ৰয়োগ কৰিছে। গান্ধীজীৰ যোগদান এজন ঋষিৰ যোগদান বুলি কব পাৰি সমাজ পৰিবৰ্তনত তেওঁৰ শৈলী নিৰালা অসহিল- সংঘৰ্ষৰ আগত তেওঁ মূৰ নোদোবাইছিল, যুজিছিল।

আজি বিষ্ণুপ্ৰভাকৰজীক সন্মানিত কৰি নিজাক যেন সন্মান কৰা হৈছে- তেওঁৰ চিন্তন, লেখন আৰু দৰ্শন গান্ধীজীৰ জীৱন দৰ্শনৰে প্ৰভাৱিত- ময়ো তেখেতৰ পুৰনি পাঠক। তেখেতৰ লেখা ভাল পাওঁ বুলি কলে মিছা কথা কোৱা নহব।

মাৰিশাসৰ বিদেশমন্ত্ৰীৰ ৰাজকীয় নিমন্ত্ৰণত ১৯৯৫ চনৰ ৭ জুলাইত অটলজী লোকসভাৰ প্ৰতিপক্ষৰ নেতাৰ ৰূপত ছয় দিনৰ বাবে তালৈ গৈছিল। এই যাত্ৰাত তেওঁ মাৰিশাসৰ প্ৰধানমন্ত্ৰী শ্ৰী অনিৰুদ্ধ জগন্নাথ, প্ৰতিপক্ষৰ নেতা শ্ৰী নৰ্বীন ৰামগোলাম, কৃষিমন্ত্ৰী শ্ৰী কৈলাশ কৰী আৰু ভাৰতৰ হাইকমিশনাৰ শ্ৰী শ্যামশৰণৰ লগত লগ ধৰিছিল। মাৰিশাস গনৰাজ্যৰ ৰাষ্ট্ৰপতিৰ লগতে ও ৰাজপেয়াজীয়ে লগ ধৰিছিল। তেখেত সকলে মাৰিশাসৰ ৰাষ্ট্ৰপিতা শ্ৰী শিৱসাগৰ ৰামগোলামৰ সমাধিত গৈ শ্ৰদ্ধা-সুমন অৰ্পিত কৰিছিলে। ১৮৩৪ চনত গিৰমিটিয়া মজদুৰ বিলাকে যত প্ৰথমবাৰৰ বাবে জাহাজৰ পৰা নামিছিলে, সেই ভাৰতীয় প্ৰবাসীৰ স্মৃতি বিৰঞ্জিত অগ্ৰদামী ঘণ্টাত গৈ তেওঁলোকৰ প্ৰতি শ্ৰদ্ধা-সুমন অৰ্পণ কৰিলে। সেই সময়খিনিত তেওঁ কৈছিল- আমি

আমাৰ পূৰ্বজৰ উপৰত গৰ্ব কৰিব লাগে, তেওঁলোকে দি যোৱা পৰম্পৰা সুৰক্ষা কৰি থোৱা
আমাৰ একান্ত কৰ্তব্য তেওঁলোকে কৈ যোৱা পথেদি গৈ আমি আমাৰ দেশৰ উন্নতি কৰিব
পাৰিম

মাৰিশাসৰ হিন্দীভাষী সংঘ'ৰ উদ্ঘাটন অটলজীয়ে কৰিছিল এই অবসৰত মাৰিশাসৰ
তৎকালীন প্ৰধানমন্ত্ৰী শ্ৰী অনিৰুদ্ধ জগন্নাথ লগতে সংঘৰ সংৰক্ষক শ্ৰী ৰবীন্দ্ৰ গুৰুবৰনে অটলজীক
আদৰণি জনাইছিল।

এই অবসৰত সকলো নেতাই হিন্দীত ভাষণ দিছিলে অটলজীয়ে দিয়া ভাষণ
মাৰিশাসবাসীয়ে খুব মনদি শুনিলে তেওঁ কৈছিলে ১৫ বছৰ আগতে মই যেতিয়া ইয়ালৈ
আহিছিলো তেতিয়াৰ মাৰিশাস আৰু আজিৰ মাৰিশাসৰ বহুত পাৰ্থক্য আছে আজিৰ মাৰিশাস
আৰ্থিক আৰু সামাজিক দুই ক্ষেত্ৰতেই বহুত উন্নতি কৰিছে ইয়াৰ গাঁওবোৰত হিন্দী ভাষা
(ভোজপুৰী) কোৱা হয় এটা ভাল কথা ইয়াত পাইমাৰী পৰীক্ষাত হিন্দী ভাষাৰ পৰা পোৱা
নম্বৰ বিলাকো যোগ কৰা হয়। এইটো ল'ৰা ছোৱালীৰ প্ৰতি ন্যায় কৰা বুলি কব পাৰি সেইবাবে
এই প্ৰাচীন ভাষাৰ বিকাশ হ'ব।

সকলো ভাষাৰ আদান প্ৰদান জৰুৰী ইংৰাজী পঢ়ক, ফ্ৰান্স পঢ়ক, চীনি পঢ়ক, কিন্তু
লগত হিন্দীভাষাও পঢ়ক।

প্ৰধানমন্ত্ৰী শ্ৰী অনিৰুদ্ধ জগন্নাথে উৎসাহপূৰ্বক অথচ ভাবুক হৈ কলে "হিন্দীৰ উন্নতি
মানে আমাৰ সংস্কৃতিৰ উন্নতি। হিন্দী ভাষাই আমাৰ দেশক স্বাধীন কৰাত সহায় কৰিছিলে। মই
ভাৰতৰ বৰ্তমান সংসদৰ প্ৰতিপক্ষৰ নেতা শ্ৰী অটলবিহাৰী বাজপেয়ীক ধন্যবাদ দিছো কিয়নো
তেওঁ ৰাষ্ট্ৰসংঘত বিদেশমন্ত্ৰীৰ ৰূপত হিন্দীত ভাষণ দিছিলে

(১৬)

সম্পাদক শ্ৰী চন্দ্ৰিকা প্ৰসাদ শৰ্মাজীৰ বহুত চেষ্টাৰ ফলতে শেষত অটলজীৰ কাব্য-
সংগ্ৰহ 'মেৰী ইকয়াৱন কবিতায়' কিতাপখন লোকাৰ্পণ কৰাৰ তাৰিখ ১৯৯৫ চনৰ ১৩ অক্টোবৰ
ত্বিৰ কৰা হ'ল 'লেক অভিযান' সংস্থাৰ অধ্যক্ষই লোকাৰ্পণ সমাৰোহ দিল্লীৰ ফিক্কী সভাগ'ৰত
কৰিবলৈ প্ৰবন্ধ কৰিলে।

১২ অক্টোবৰৰ দিনা অটলজীৰ নিবাসত গোটেই দিন জুৰি গুজৰাটৰ পৰা অহা পাৰ্টিৰ
মানুহৰ লগত অধিবাস মিটিঙ চলি আছে অটলজী আৰু আডবাণীজী গুজৰাটৰ নেতা সকলৰ
লগত আলোচনা-বিলোচনা কৰি আছে। মিডিয়াৰ মানুহ কেমেৰা আদি লৈ লনত বহি আছে
মিটিঙৰ পাছৰ ৰিজাল্ট জানিবৰ বাবে গধূলিলৈকে সকলো সমাপন হ'ল।

সন্ধ্যা হোৱাৰ লগে লগে লোকাৰ্পণ সমাৰোহৰ পূৰ্ব সন্ধ্যাত নিমন্ত্ৰিত অতিথিসকল
নৈশভোজৰ বাবে একত্ৰিত হ'ব পৰিলে বগাধুতি, কুৰ্তা, চপ্পল পিন্ধি পুৰা গ্ৰাজা হৈ অটলজী
বাহিৰত ওলাই আহিলে কিতাপৰ সম্পাদক শৰ্মাজীক কলে—'গোটেই দিন দৌৰা দৌৰিৰ

বাবে আপোনাৰ লগত একো কথা পাৰ্টিত পৰা নাই। এই বুলি দেখে গৈ লগত বাৰাণ্ডাৰ ফালে ওলাই যাওতে প্ৰগতিবাদী কবি ড° শিবমঙ্গল সিংহ 'সুমন'জী আহি পালে। অটলজীয়ে তেওঁক নমস্কাৰ জনাই অপায়ণ কৰিলে। সুমনজীয়ে অটলজীক আকোবা'লি ধৰিলে। যেতিয়া অটলজী গোবালিঘৰত ভিক্টোৰিয়া কলেজত গৈ এৰ ছাত্ৰ আছিল, তেতিয়া সুমনজী তাৰে হিন্দী প্ৰধ্যাপক আছিল। কিন্তু অটলজী তেওঁৰ ক্লাচত পঢ়া ন'ছিল।

অটলজীয়ে সুমনজীক দুইং কমল লৈ গৈ বঙালৈ আৰু সাধাৰণ দুইং কম দুটা সেট সাধাৰণ সোফা, কেইখনমান চ'ক, কেইখনমান টুল ম'জিয়াত কাৰ্পেট আদি একো পাৰি থোবা নাই। এটা দাঁপদাঁপ, গনেশজীৰ প্ৰতিমা এটা এটা চুকত, এখন বাথৰ চিঞ, এখন বেকত কেইখনমান নতুন কিতাপ, আগত শিৰাজীৰ মূৰ্ত্তি এটা।

এনেকুৱা এজন লোকৰ দুইং কম দেখিলে আশ্চৰ্য্য লাগে, কিমান সাধাৰণ ডঙি তেওঁ থাকে, ক'তো কোনো কৃষিমতা নাই। তাৰ মাজতে পথাৰ লোকক ড° বিদ্যানিবাস মিশৰী আহি পালে। অটলজীয়ে উঠি নমস্কাৰ জনাই বহিবলৈ দিলে। পাছত শ্ৰী লক্ষ্মীমল্ল সিধবীজী আহি পালে। হিন্দীৰ এই বিদ্বান মানুহজন ইংলেণ্ডত হাইক'মিশনাৰ অকল এই কাৰ্য্যক্ৰমত ভাগ লবৰ বাবে আহি পাইছে। এনেকুৱা আৰু কেইজনমান গন্য মান্য লোক আছিল। বাৰ্জালপৰ মাজতে মুখৰোচক কিছুমান লঘু আহাৰ পৰিবেশন কৰা হ'ল। সময় হোৱাৰ লগে লগে ভোজনৰ যোগান ধৰা হ'ল।

বাৰুটি আদিৰ লগত অটলজীয়েও 'নিজে বিলাই আছে চামুচ উঠাই দিয়া, নিজৰ হাতে খাবা বিলোবা, চিলাচত পানী ঢালি দিয়া আদি। আজি এনেকুৱা এটা ৰূপত অটলজী ওলাই আহিছে, তেওঁক যিমান তাৰিফ কৰা যায়, ইমান কম লাগে। নিজৰ ঘৰলৈ অহা অতিথিক, কেনেকুৱা সন্মান কৰিব লাগে, তাৰে এক বিবল উদাহৰণ। এই সকলো তেওঁৰ পৰিয়ালৰ পৰা পোৱা সংস্কাৰ বুলি ক'ব পাৰি। খোৱাৰ পাছত সকলোকে যথাস্থান পোৱাই দিয়াৰো পদক কৰা হৈছিল।

১৩ অক্টোবৰ ১৯৯৫ চন, নতুন দিল্লীস্থ ফিল্মী সভাগাৰ গৃহ ভাৰতৰ তৎকালীন প্ৰধানমন্ত্ৰী শ্ৰী নৰসিংহ ৰাৱৰ সান্নিধ্যত ড° বিদ্যানিবাস মিশৰ অধ্যক্ষত্বত অটলজীৰ কাব্যসংগ্ৰহ 'মেৰ, ইকখাবন কবিঃ য়' পুস্তকৰ লোকাৰ্পণ সমানেই অৰম্ভ কৰা হ'ল। ড° শিবমঙ্গল সিংহ, ড° লক্ষ্মীমল্ল সিধবা আৰু কুপৰবলী সাত্ৰনৈয়েয়া সুদৰ্শন আদি বিশিষ্ট বক্তা আছিল।

সভাৰ প্ৰধান শ্ৰী নৰসিংহ ৰাৱ আৰু প্ৰতিপক্ষৰ নেতা শ্ৰী অটল বিহাৰী বাজপেয়ী সভাত ওচৰা ওচৰি কৈ বহিলে। দুই বিপৰীত বিচাৰধাৰাৰ শিখৰ পূৰ্ণত নিজৰ ৰাজনীতিক ব্যক্তিগত সীমাক অতিক্ৰম কৰি এডোনে আনজনক গলত লগালে। সঁচাই ৰাজনীতিত যত ভৰিঙিবলৈ কাম কৰে, তাতে সাহিত্যই সংযোগৰ কাম কৰে।

এই ৩৩ অসমত দিল্লীৰ বুদ্ধি ভি. সি. সাহিত্য পেয়ী, কবি আৰু কলাকাৰৰ উপৰিও ক.

লক্ষ্যমণ্ডল অতিক্রম, ৬ বছরী বয়সের মেয়ে, সৌন্দর্যমণ্ডল বৃদ্ধা, ছিঃ কেতাৰ মধ্য মাগুনী আদি
বিবাহমান আছিল। এই বয়স বীণা পছন্দিত কৰি গুণাবলী পৰিলে 'কিতাবৰ লোকালয়'ত
বিলাসিতাসমিতিৰ কৰ্মে। কিতাবৰ পক্ষত কৰ্ম ছিঃ এৰিচিঃ বয়সক সাংস্কৃতিক অৰ্জন কৰা হ'ল
অটলভী আৰু বয়স ৮০তঃ ১০০তঃ আনন্দমণ্ডল ৮০তঃ পিছাই সম্বন্ধিত কৰিলে।

ছিঃ এৰিসিঃ বয়সে ১০০তঃ কালকট কলে 'অটলভী' মোৰ গুৰু' এই যোগা পিল বহুত
পৰি অটলভীত খুলি ৮০তঃ পাইছিল। ১০০তঃ বীণাৰ ১০০তঃ এৰিসিঃ কিতাবৰ ১০০তঃ আনন্দ, যিহে
লৈকি আনন্দ ৮০তঃ ১০০তঃ আনন্দ, দুবলৈ আনন্দ লিখিলে। ১০০তঃ আনন্দ কিতাবতঃ ছিঃ এৰিসিঃ
লিখিব সাংস্কৃতিকলৈকিৰ লৈকি আনন্দ পক্ষত বয়স ৮০তঃ অটলভীত বয়স ৮০তঃ পক্ষতঃ। সোহেঃ
আনন্দ লৈকি ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ এই কিতাবলৈকিৰ লৈকিৰ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ
অলপ কলে।

কিতাবৰ লৈকিৰ লৈকিৰ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ
লৈকিৰ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ
সেই বীণাৰ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ
পক্ষতঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ ১০০তঃ



মুখ্য লক্ষ্যমণ্ডল অতিক্রম ৬ বছরী বয়সের মেয়ে, সৌন্দর্যমণ্ডল বৃদ্ধা, ছিঃ কেতাৰ মধ্য মাগুনী আদি

তেওঁৰ কবিতাত প্ৰত্যাৱৰ্তন আৰু বিদ্ৰোহ দুয়োটাই বৰ্তমান। ছায়াবাদী প্ৰভাব কবিতাৰ উপৰত বিদ্যমান আচলতে অটলজীয়ে তেওঁৰ কবিতা সমূহত গোটেই যুগ সামৰিছে। অটলজী অবিৰত কামত লাগি থাকে। শেষত তেওঁ অটলজীৰ শতায়ু হোৱাৰ কামনা কৰি সামৰিলে।

ড° লক্ষীমল্ল সিধবীয়ে অটলজীৰ আৰু কবিতাৰ খা-খবৰ লোৱাৰ কথা কলে। তেওঁ কলে এতিয়ালৈকে অটলজীয়ে মাত্ৰ ৫১-টা হে কবিতা লিখিলে নেকি? তেওঁ কি নিজৰ বয়স লুকাবলৈ বিচাৰি আছে নেকি? তেওঁৰ কবিতাৰ বস সকলো ঠাইতে উপচি পৰি আছে। শ্ৰী সিধবীয়ে কলে তেওঁ অটলজীৰ কবিতাৰ পাঠ ইংলণ্ডতে কৰাইছিল, যত নেকি সুশ্ৰী লতা মঙ্গেশকৰো উপস্থিত আছিল। বিশিষ্ট অতিথি শ্ৰীকুপৰৱলী সীতাৰমৈয়া সুদৰ্শনজীয়ে কলে- অটলজী এজন ভাবুক কবিৰ সংস্কাৰ প্ৰাপ্ত পোৱা মানুহ। আনফালে তেওঁৰ কবিতাত দাৰ্শনিক ভাব অটুট আছে, তেওঁ কেতিয়াও অসফলতাৰ অনুভৱ কৰিব নিবিচাৰে।

কাৰ্য্যক্ৰমৰ অধ্যক্ষ ড° বিদ্যানিৱাস মিশ্ৰই কলে- অটলজী ৰচনাৰ বাবে ভিতৰৰ পৰা এজন ব্যাকুল ব্যক্তি। তেওঁ ভাৰতৰ জন-প্ৰতিষ্ঠাৰ বাবে সদায় আকুল। শ্ৰী বাজপেয়ীৰ লক্ষ্য মানৱতা আৰু ভাৰতৰ জনতা। অহা শতাব্দী ভাৰতৰ উদাৰতা আৰু চিন্তাৰ শতাব্দী হ'ব। সেই শতাব্দীত শ্ৰী বাজপেয়ীৰ নিচিনা নেতাৰ আৱশ্যকতা হ'ব। বাজপেয়ীজী ৰাজনীতিত আহি একো ভুল কৰা নাই। তেওঁৰ এই কবিতাৰ পৰা দেশৰ নিশ্চয় লাভ হ'ব। অটলজীৰ কবিতাক মই ভৰসা কৰো তেওঁ এনেকুৱা কবিতা আৰু ৰচনা কৰিব “শতং জীবেত্ শতং অদীনঃ স্ম্যত্!! শ-শ বৰ্ষো তক জীবে।”

কাৰ্য্যক্ৰমৰ অন্তত অটলজীয়ে অতি ভাবুক হৈ কলে- “মোক কৃতজ্ঞতা প্ৰদৰ্শন কৰিবলৈ কোৱা হৈছে। মই কি কুণ্ড? মই কেতিয়াও ভবা নাছিলো মোৰ কবিতাৰ সংখ্যা একাৱল্লটা হ'বগৈ। লগুনত শ্ৰী সিধবীজীয়ে তেওঁৰ নিবাসতেই এক কাব্য-সন্ধ্যাৰ আয়োজন কৰিছিল, যত নেকি মোক কবি ৰূপত মান্যতা দিয়া হ'ল। মোৰ মনত আছে যি কেইটা কবিতা পঢ়িছিলো যোম্ম সোতৰটা মান হ'ব। লতাজীৰ উপস্থিতিত কাৰ্য্যক্ৰমখন সুন্দৰ হৈ উঠিছিল। আপাতকালৰ সময়ত মোৰ কুণ্ডলীৰ পৰা মোৰ মিত্ৰ শ্ৰী দীননাথ মিশ্ৰই সম্পাদিত কৰি প্ৰকাশ কৰাইছিল, তেতিয়া মই মন্ত্ৰী আছিলো। মন্ত্ৰীৰ সহজতে প্ৰকাশক পোৱা যায়, আনে গ্ৰাহক পাবলৈকে মুস্থিল হৈ পৰে।

মই ভাবিছিলো মোৰ এই কবিতাবোৰ কোনে ছপাব? প্ৰফেচাৰ বিষুৱকান্তজীয়ে কলিকতাত ‘এক সন্ধিয়াৰ’ আয়োজন কৰিছিল। মই কবিতা পঢ়িছিলো। সেই কবিতাৰ সংখ্যা ২৫/৩০-ৰ বেছি নহ'ব। লক্ষ্যেত ড° চন্দ্ৰিকা প্ৰসাদ শৰ্ম্মাই ৫১ টা কবিতা গোটাবলৈ সফল হৈছে। মোৰ অনুভৱ আৰু কেইটামান কবিতা ইফালে-সিফালে নিশ্চয় পৰি আছে। নিজৰ কবিতা কেইটা গোটায় নোথোৱাৰ দোষ মোৰ নিজৰেই। মই কেতিয়াও এই বিষয়ত বেছি চিন্তা কৰা নাছিলোঁ। এতিয়া মোৰ কবিতা কিতাপ আকাৰত গোট খালে আলোচকে নিশ্চয় আলোচনা

কৰিব এই মঞ্চৰ বহুত কথা মই শুনিবলৈ পোৱা নাই অকল ভাবাৰ্থহে গ্ৰহণ কৰিছোঁ। মই ড° সুমনজীৰ আশীৰ্বাদ পাইছোঁ। এজন বিদ্যাৰ্থীৰ ৰূপত তেওঁৰ প্ৰেৰণা পাইছোঁ। কবি সন্মিলনত তেখেতৰ লগতে আছিলোঁ। তেওঁৰ প্ৰেৰণাতেই লিখিছিলো কবিতা 'অমৰ আগ'।

অনাথৰী অজ্ঞান বিশ্বই পালে
শিৰ অৱনত কৰি মহাধন।
কোন দাৰ্শনিকে দিব পাৰিছে
আজিলৈ এনে জীৱন দৰ্শন?
কালিন্দীৰ কলৰৱত
কৃষ্ণ-কণ্ঠৰ গুপ্তিত যি স্বৰ
অমৰ ৰাগিনী, অমৰ ৰাগিনী
কোটি-কোটি আকুল হৃদয়ত
জ্বলিছে যি ফিৰিঙতি
অমৰ অগনি, অমৰ অগনি।



(উক্ত স্তৱকটো শ্ৰী নৰেন্দ্ৰদেৱ শাস্ত্ৰীৰ অনুদিত 'মোৰ একাৰমটি কবিতা' কিতাপৰ পৰা লোৱা হৈছে) যদি ছাত্ৰৰ ৰূপত মোৰ কোনো ক্ৰটি হৈ থাকে তেনেহলে মই সাৰ্বজনিক ৰূপত ক্ষমা বিছাৰিছোঁ। যদিও মই এতিয়া কলেজৰ ছাত্ৰ নহয় লোকতন্ত্ৰৰ পাঠশালাৰ বিদ্যাৰ্থী কিন্তু হয়।

শ্ৰী নৰসিংহ ৰাৱজী, মই তেখেতৰ নামৰ লগত পদৰ উল্লেখ কৰিব বিচৰা নাই তেওঁ অসুস্থ হোৱা সত্ত্বেও এই কাৰ্যক্ৰমত উপস্থিত থাকি কাৰ্যক্ৰমক গৌৰৱ প্ৰদান কৰিলে। তেওঁৰ ভূমিকা এজন সাহিত্যকাৰৰ ভূমিকা, তেওঁ আজিলৈকে যিমান লিখিছে প্ৰকাশ হোৱা নাই, ভাষণৰ ৰূপত হৈ আছে। সেইদিনা শ্ৰী নৰেন্দ্ৰ মোহনজীৰ কিতাপৰ লোকাৰ্পণ কাৰ্যক্ৰমত মই তেখেতক এজন সাহিত্যকাৰৰ ৰূপত শুনিবলৈ অৱসৰ পালোঁ। ইয়াত কোনো প্ৰধানমন্ত্ৰী আৰু প্ৰতিপক্ষ নেতাৰ মিলন নহয়। ইয়াত সাহিত্য সঙ্গমৰ মিলনৰ স্থানহে ইয়াত মনৰ কথাহে হয় ৰাজনীতি অস্থিৰ, চঞ্চল, সময় সাপেক্ষ আৰু সাহিত্য কাল নিৰপেক্ষ, কালজয়ী। শ্ৰী চন্দ্ৰশেখৰ জীয়ে মোক গুৰুজী কয়।

এই অৱসৰত অটলজীয়ে শ্ৰোতাৰ আগ্ৰহত তিনিটামান কবিতা পাঠ কৰি শুনালে। নিতান্ত অনোপচাৰিক পৰিবেশত শ্ৰী বিজয় গোয়েলৰ ধন্যবাদৰে সামৰণি কৰা হল।

সভাগাৰৰ বাহিৰ প্ৰাঙ্গনত কিতাবঘৰ প্ৰকাশনীয়ে 'মেৰী ইকয়াৱন কবিতায়ে' বিক্ৰিৰ বাবে সজাই ৰাখিছিল। অনেক শ্ৰোতায় সুযোগ চাই কিতাপৰ ওপৰত অটলজীৰ হস্তাক্ষৰ ললে তেওঁ থিয় হৈ প্ৰায় চল্লিশ মিনিটৰ বেছি সময় একেৰাহে কিতাপত হস্তাক্ষৰ দিলে পাছত অবস্থা দেখি শিবকুমাৰজীয়ে এখন চকি আনি তেওঁক বহুৱালে কিতাপৰ কেইবা শ কপি লগে

লগে বিক্ৰি হৈ গ'ল। প্ৰকাশকে কলে-
লোকাৰ্পণ অৱসৰত ইমান বেছি কপি
অজিলৈকে বিক্ৰি হোৱা নাই।
এইটোৱে প্ৰমাণিত কৰে জনমানসত
অটলজীৰ ব্যক্তিত্ব আৰু কাব্যৰ প্ৰতি
কিমান বেছি সম্বন্ধ আছে।

পিছদিনা দিল্লীৰ বিভিন্ন
পত্ৰ-পত্ৰিকাত চিত্ৰসহ প্ৰথম পৃষ্ঠাতে
লোকাৰ্পণ সমাৰোহৰ বিৱৰণটো
ওলালে। বিৱৰণ ওলোৱা উল্লেখ
যোগ্য পত্ৰিকাবোৰ হল- নবভাৰত
টাইমস, দৈনিক জাগৰণ, ৰাষ্ট্ৰীয়
সাহাৰা, দৈনিক জাগৰণ (সপ্তৰত্ন
২৩/১০/৯৫ ইং), কাদম্বিনী,
ভাষাসেতু (গুজৰাটী) আদি। প্ৰথম
পৃষ্ঠাত যোৱাৰ মুখ্য কাৰণ হল- একে
মঞ্চত ৰাজনীতিৰ পৰা আঁতৰত থাকি
প্ৰধানমন্ত্ৰী আৰু প্ৰতিপক্ষৰ নেতাই
সাহিত্য চৰ্চা কৰিলে। ৰাজনীতি চৰ্চাত
আকণ্ঠলৈকে বুৰি থকা দুয়ো নেতাই
আজি সাহিত্য ক্ষেত্ৰৰ বিভিন্ন বিষয়ত
চৰ্চা কৰিলে, সেইটো ও বহুত
অনোপচাৰিক আৰু ঘৰুৱা
পৰিবেশত।

‘মেৰী ইকয়াৱন কবিতায়ে’
পাঠকৰ লোকপ্ৰিয়তাৰ বাবে গুজৰাটী,
মাৰাঠী, উড়িয়া আৰু অসমীয়াত
অনুবাদ হৈ প্ৰথম সংস্কৰণ লগে লগে
বিকিলে।

অটলজীৰ কবিতাৰ
লোকপ্ৰিয়তা ইমান বাঢ়িলে প্ৰকাশকে



আড়াই বছৰৰ মাজতে কিতাপৰ সপ্তম সংস্কৰণ উলিৱালে। বাস্তৱত হিন্দী ভাষাত কোনো কবিতাৰ কিতাপ ইমান বিক্ৰী হৈ যোৱাৰ ৰেকৰ্ড অতি উল্লেখনীয়। যেতিয়া কিতাপৰ তৃতীয় সংস্কৰণ উলিওৱাৰ যো-জা চলি আছে সম্পাদকে অটলজীক কলে তৃতীয় সংস্কৰণৰ বাবে কেই শাৰীমান লিখি দিয়ক। তেওঁ আচৰিত হৈ সুধিলে দুটা সংস্কৰণ বিক্ৰি হ'ল! যেতিয়া কোৱা হ'ল- হয় বিক্ৰি গ'ল, তেতিয়া তেওঁ কলে- তেনেহলে আকৌ নতুন সংস্কৰণৰ বাবে লিখাৰ কি আৱশ্যক? সম্পাদকে তেওঁৰ স্বভাৱ ভালদৰে জানে। দুই তিনিবাৰ তৰ্ক কৰাৰ পাছত ৰাজী হৈ নিম্নলিখিত বাক্য কেইটামান লিখি দিলে—

“মই কথাটো গম পাই সুখী হ'লো যে মোৰ কবিতা সংগ্ৰহৰ তৃতীয় সংস্কৰণ প্ৰকাশিত হ'বলৈ যো জা চলিছে। মই কেতিয়াও ভবা নাছিলো মোৰ কবিতাবোৰ ছপা হ'ব, ৰাইজে মনদি পঢ়িব আৰু সেইটোও কিনি। যদি খোলা অৰ্থব্যৱস্থাৰ শব্দত ক'বলৈ যাও, মোৰ বজাৰ ভাও উচ্চ আৰু এই মুহূৰ্তত সেইটো পতন হোৱাৰ কোন আশংকা নাই। মই জানো মোৰ পাঠক কবিতা প্ৰেমী আৰু এই কথাত তেওঁলোক সুখী হৈ মই ৰাজনীতিৰ মৰুভূমিত থাকি ও হৃদয়ৰ এটা চুকত মেহ-সলিলা প্ৰবাহিত কৰি ৰাখিছোঁ। মই মোৰ পাঠকক হৃদয়ৰ পৰা ধন্যবাদ মাচিছোঁ আৰু তেখেত সকলৰ মৰমক জীৱনৰ সম্বল কৰি চলি আছোঁ ”

(১৭)

একাদশ লোকসভা নিৰ্বাচনৰ দিন ঘোষণা কৰা হ'ল। অটলজীয়ে আকৌ লক্ষ্ণৌ আসনতে নামাঙ্কন পত্ৰ দাখিল কৰিলে। আডবাণীজীৰ ক্ষেত্ৰ গুজৰাটৰ গান্ধীনগৰতো পাৰ্টিয়ে তেখেতক প্ৰত্যাশী বনালে। কিয়নো হাৱালা কান্ডত ডায়েৰী এটাত আডবাণীজীৰ নাম থকা বুলি তেওঁ লোকসভা পদৰ পৰা ত্যাগপত্ৰ দিলে। সেইবাবে দলে একমত হৈ অটলজীৰ নাম প্ৰস্তাৱিত কৰিছিল। এনেকুৱা স্থিতিত অটলজী লক্ষ্ণৌৰ অতিৰিক্ত গান্ধীনগৰ সমষ্টিৰ পৰা নিৰ্বাচনত যুজিবলৈ বাধ্য হ'ল।

কিছুমান ক্ষেত্ৰীয় জাতীয় পাৰ্টিয়ে এই বুলি প্ৰচাৰ কৰিব ধৰিলে যে অটলজী লক্ষ্ণৌৰ সমষ্টি সুৰক্ষিত নোহোৱাৰ বাবে বেলেগ ঠাইৰ পৰা যুজিব ওলাইছে। কিন্তু অটলজীয়ে হে জানে, লক্ষ্ণৌৰ ৰাইজৰ ওপৰত তেখেতৰ কিমান বিশ্বাস আৰু ৰাইজৰো কিমান বিশ্বাস তেখেতৰ ওপৰত। কিয়নো সংসদৰ কোটাৰ পৰা এক কোটি টকা বিভিন্ন বিকাশ-কাৰ্যৰ বাবে দিয়া হৈছিল, তেওঁ সেইবিলাক বিকাশ কাৰ্যতে লগাইছিল। লগতে প্ৰফেচৰ বিষ্ণুকান্ত শাস্ত্ৰীয়ে ও নিজৰ কোটাৰ পৰা যি টকা অটলজীক দিছিল। সেই টকাও বিকাশ কাৰ্যতে লগোৱা হৈছিল।

অটলজীয়ে নিজৰ ক্ষেত্ৰৰ চহৰ আৰু গ্ৰামীণ বিকাশৰ বাবে যিজন মুখ্যমন্ত্ৰী আছিল, সেইজনক তেওঁৰ মাধ্যমে নহয় ৰাজ্যপালৰ পৰা বিকাশ কাৰ্যৰ বাবে টকা দিয়াইছিল। তেখেতৰ পাঁচবছৰীয় সংসদীয় কাৰ্যকালত তেওঁ কল্যান মণ্ডপ, শুলভ শৌচালয়, ৰাস্তামাট, পুল, পাৰ্ক, চ'ক আদিৰ সৌন্দৰ্যকৰণ, শশ্মানঘাট, হেণ্ডপাম্প আদিৰ কাম কৰাইছিল।

প্ৰদূষণৰ পৰা গোমতী নদীক বচোৱাৰ বাবে গোমতী একশ্বন প্লেন আৰু খোৱাৰ পানীৰ সমস্যা দূৰ কৰাৰ বাবে দুখন নতুন ওৱাটৰ ওয়াৰ্কসৰ (Water Works-ৰ) যোজনা আৰম্ভ কৰাইছিল।

লক্ষ্ণৌৰ কাছাডীত যিদিনা অটলজীয়ে নামাঙ্কন পত্ৰ দাখিল কৰিবলৈ গৈছিল সেইদিনা গেস্টহাউচৰ পৰা কাছাডীলৈকে তেখেতক অভ্যর্থনা জনোৱাৰ বাবে মানুহৰ ভিৰ উপচি পৰিছিল। ঠায়ে ঠায়ে তেখেতক ৰখাই তিলক পিন্ধোৱা হৈছিল। বিভিন্ন ধৰণৰ ফুলৰ মালা পিন্ধোৱা হৈছিল। উৎসাহী জনসমূহে পুনঃ পুনঃ জয়ধ্বনি কৰিছিল—

“সব পৰ ভাৰী, অটল বিহাৰী।”

“উজ্জ্বল ভাৰত কী তৈয়াৰী, অটল বিহাৰী, অটল বিহাৰী।”

অটলজীয়ে জ্যোতিষিয়ে দিয়া সময় অনুসৰি নামাঙ্কন দাখিল কৰিলে। তাৰ পাছত জীপ এখনত উঠি মাইকত উপস্থিত জনসমূহক সম্বোধিত কৰিলে —

“আপোনালোকে মোক অপনালোকৰ প্ৰতিনিধি কৰি সংসদত পঠাইছিলে। তাত গৈ মই নিজৰ দায়িত্ব পূৰ্ণ সতৰ্কতাৰে কৰিছিলোঁ। আপনালোকে যদি মোক পুনঃ আপনালোকৰ প্ৰতিনিধি কৰি পঠাই তেতিয়া হলে মই দুগুণা শক্তিয়ে মোৰ উত্তৰ দায়িত্ব পালন কৰিম।”

তাৰ মাজতে পুনঃ জনসমূহে জয়ধ্বনি কৰিলে—

“হামাৰা পী. এম. কৈসা হো, অটল বিহাৰী জৈসা হো।”

অটলজীয়ে হাঁহি কলে—“অৰে ভাই, আগত মোক এম. পী. বনোৱা তেতিয়া হলে হে পী. এম. হব পাৰিম।

উৎসাহিত জনসমূহে পুনঃ জয়ধ্বনি কৰিলে—

“অটল বিহাৰী, জিন্দাবাদ..... জিন্দাবাদ।”

“ভাৰত মাতা কী জয়, ভাৰত মাতা কী জয়।”

“হামাৰা পী. এম. কৈসা হো, অটল বিহাৰী জৈসা হো।”

ৰাইজৰ মনত এনেকুৱা দৃঢ়বিশ্বাস হল যে, অটলজী ভাৰতৰ শিখৰ পুৰুষ হব দেশৰ প্ৰধান-মন্ত্ৰী হব। তেখেতক কোনেও হৰাব নোৱাৰে। লোকসভা নিৰ্বাচনৰ সময়ত ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিৰ তৰফৰ পৰা অটলজীৰ আপীলখন গোটেই দেশৰ প্ৰায়বোৰ সমাচাৰ পত্ৰতে প্ৰকাশিত হৈছিল—

“প্ৰিয় মিত্ৰ,

নমস্কাৰ!

সময়ে আকৌ এবাৰ আমাৰ দুৱাৰত দস্তক দি আছে। আমি আকৌ এবাৰ ইতিহাসৰ “মোডত” থিয় হলোহি। আমি সাব্যস্ত কৰিব লাগে, কোনফালে যাম। আমাৰ গন্তব্য কি হব কিবা সাব্যস্ত কৰিবলৈ যাওতে অকল যোৱা ৫ বছৰৰ ওপৰতে নহয় যোৱা ৫০ বছৰৰ কুশাসন

আৰু হেৰুৱা ঘটনা বিলাকো চাব লাগিব।

ভাৰত এখন প্ৰাচীন ৰাষ্ট্ৰ। অনুমানিক ৫,০০০ বছৰৰ বেছি পুৰণি সভ্যতা আৰু সংস্কৃতি আমি আমাৰ পূৰ্বপুৰুষৰ পৰা পাইছোঁ। আমাৰ হাতত অমূল্য আধ্যাত্মিক আৰু ভৌতিক সম্পদ আছে।

ইমান হোৱা সত্ত্বেও আমাৰ দেশ দুখীয়া কিয়? ঋণত কিয় বুৰগৈ আছে? দেশ আন্তৰীণ আৰু আভ্যন্তৰীণ সংকটত বেষ্টিত হৈ আছে। বৰ্তমান চৰকাৰ পুৰা ভ্ৰষ্টাচাৰ, 'ঘোটালা' আদিত লিপ্ত হোৱাৰ বাবে সংকটময় হৈ আছে। এতিয়া আমাৰ প্ৰয়োজন 'ইমানদাৰ', সক্ষম, উপযোগী আৰু সংবেদনশীল চৰকাৰ এখনৰ।

এতিয়ালৈকে কংগ্ৰেছ পাৰ্টিয়ে একেৰাহে শাসন কৰি আছে, কিয়নো বেলেগ কোনবা দলে তেওঁলোকক আতৰাবলৈ সামৰ্থ নাই। এতিয়া তেনেকুৱা স্থিতি নহয়। আপোনালোকৰ সমৰ্থনত ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিয়ে অকলেই এই চৰকাৰক আতৰাব পাৰে আৰু এখন স্থায়ী আৰু জবাব দিব পৰা চৰকাৰ গঢ়িব পাৰে। ভাৰুপায় গৰীবী উন্মূলনৰ বাবে, অধিকাধিক মানুহক ৰোজগাৰ দিবৰ বাবে, বিষমতা কমাই ৰাষ্ট্ৰক নিজৰ ভৰিত থিয় কৰাবৰ বাবে এটা নতুন অৰ্থব্যৱস্থাৰ নক্সা লৈ আহিছে। এই ব্যৱস্থায়িনি বেলেগৰ পুঁজী আৰু বেলেগক নিৰ্ভৰ কৰি নহব, ইয়াৰ আধাৰ হব স্বাবলম্বন। আমি স্বদেশীৰ মন্ত্ৰক পুনঃ জাগৰিত কৰি এনেকুৱা অৰ্থব্যৱস্থাৰ নিৰ্মাণ কৰিম যি নেকি শোষণৰ পৰা মুক্ত আৰু সন্তুলিত বিকাশৰ লগত যুক্ত হব।

ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিয়ে নিৰপেক্ষ শাসনৰ আদৰ্শত বিশ্বাস থয়। আমি এনেকুৱা শাসন দিব বিচাৰো, যত নেকি কোনো ভেদ-ভাৱ নাথাকে, পক্ষপাত নহয়।

আমাৰ এই যুজ সত্তাৰ যুজ নহয়। আমি সত্তাক এটা সাধন মানো, সাধা নহয়। ৰাস্তা বুলি মানো, গন্তব্যস্থান (মঞ্জিল) নহয়। যোৱা পাঁচ দশকৰ পৰা মই মাতৃভূমিৰ সাধনাত লাগি আছোঁ। আমাৰ চকুত এক মহান ভাৰতৰ সপোন আছে যত নেকি মানুহ ভয়মুক্ত আৰু ভোকত পীড়িত নহয়। যি দেশবোৰ আমাৰ একে লগতে স্বতন্ত্ৰ হৈছিল, তেওঁলোক বহু ওপৰত উঠিল। আমি কিয়নো প্ৰগতিৰ দৌৰত পিছ পৰি থাকিলোঁ!

আহক, ভবিষ্যত সংকল্পৰ উত্তৰ দিবৰ বাবে আৰু বৰ্তমানক সজোৱাৰ বাবে আমি কানৰ লগত কান মিলাই আগবাঢ়ো। এয়ে হল সময়ৰ আহ্বান। দেশ পৰিৱৰ্তনৰ বাবে ব্যগ্ৰ হিন্দু মহাসাগৰৰ পৰা উঠা লহৰক আমি হিমালয়লৈকে লৈ যাব লাগিব। লোকসভাত বহুমত পাই এই দেশৰ পুনৰ নিৰ্মাণৰ কাম সম্পূৰ্ণ কৰিব লাগে। ভাৰুপায় এই মহান কাৰ্য কৰিবৰ বাবে আপোনালোকৰ মতহে নিৰ্ণায়ক সিদ্ধ হব।”

অটলজীয়ে নিজৰ নিৰ্বাচনক্ষেত্ৰৰ দায়িত্ব তেখেতৰ বিশ্বাসপাত্ৰ ব্যক্তিগত সচিব শ্ৰী শিৱকুমাৰজী আৰু উত্তৰ প্ৰদেশ ভাৰুপাৰ প্ৰবক্তা শ্ৰী লালজী টাণ্ডনৰ হাতত দি দেশৰ বিভিন্ন অঞ্চলত যাত্ৰা কৰিছিলে। শোবা-খোৱাৰ চিন্তা নাই, বিশ্রাম নাই, কেৱল নিৰ্বাচনৰ হে কথা আৰু

ভাষণ বাদ দি একো নাই। বাহিৰত যোৱাৰ অগতে নিজৰ নিৰ্বাচন কাৰ্যালয়ত বিধিগত ভাবে যজ্ঞ, পূজাপাঠ আদি কৰাই উদগাটন কৰিছিলে। এই অৱসৰত তেওঁ কৈছিলে- মই এতিয়া গুৰুদ্বাৰত গৈ সেৱা কৰি আহি আছো। আমাৰ দেশ বিবিধতাৰ দেশ। ইয়াত থকা সকলো নাগৰিক সমান, ইয়াত উচ্চ-নীচৰ প্ৰশ্ন নাই।

আমি নিশ্চয় কৰিলো শ্ৰী ৰামচন্দ্ৰজীৰ মন্দিৰ আইনৰ সহায়লৈ অযোধ্যাত বনাম উঠা, জাগা, সকলো সন্তান। ভাৰতমাতাই তোমালোকক আহ্বান কৰি আছে। এতিয়া শোৱাৰ সময় নহয়। যি শুই থাকে, সি হেৰায় থাকে। এতিয়া আৰু হেৰাব নালাগে।

আমি তেতিয়ালৈকে বিশ্রাম নলও যেতিয়ালৈকে দেশৰ জন-মন সুখ শান্তিৰ জীৱন অতিবাহিত নকৰে।

তাৰ পাছত অটলজীয়ে বেলেগ সভা এখনত বুদ্ধিজীৱিৰ আগত কলে-আজি এপ্ৰিল প্ৰথমদিন। মই ভাবিছিলো ৰাইজে নিমন্ত্ৰণ বহুত গভীৰতাৰে নলব বুলি। নিৰ্বাচনৰ তিথি ঘোষিত হল। আবহাৱাত অলপ সংঘৰ্ষৰ লক্ষণ। মই আপনালোকৰ খণী কিয়নো বিগত নিৰ্বাচনত মোক আপনালোকৰ প্ৰতিনিধি কৰি লোকসভাত পঠাইছিলে। এই এইবাবে মই লক্ষ্ণৌৰ উদ্ভীদবাৰ। আপনালোকে নিশ্চয় জানে চোবিয়েত সংঘৰ্ষ পাছত লোকতন্ত্ৰীয় পদ্ধতিক দুনিয়াৰ সৰ্বশ্ৰেষ্ঠ পদ্ধতি বুলি মানিলে। বাস্তৱত এই পদ্ধতিয়ে মানবৰ গৰিমাক স্বীকৃতি দিয়ে। এই পদ্ধতিয়ে জন্ম, জাতি, দেশ, স্ত্ৰী-পুৰুষ কাকো কোনো ভেদাভেদ নকৰে। সকলোকে সমান অধিকাৰ দিয়ে যদিও ইয়াত কিবা কিছু কম আছে। তাক সুধৰাব পৰা যায়।

নিৰ্বাচন সভাৰ অন্য এখন ভাষণত অটলজীয়ে কৈছিল-লক্ষ্ণৌ অবধৰ ৰাজধানী। ইয়াত পানী বহুত কম। গৰমত মানুহে এটোপা পানীৰ বাবে পানী নললৈ চাই থাকে আৰু নলে চুপচাপ গুড়গুড়ায় থাকে, শ্ব শ্ব কৰি থাকে, কিন্তু পানী এটোপাও নপৰে। যদি লক্ষ্ণৌ চহৰতেই এনেকুৱা অবস্থা বাকী ঠাইবোৰৰ কি দুৰ্দশা হব! আমি নিজৰ কৌটাৰ টকা লৈ একহাজাৰৰো বেছি হেণ্ডপাম্প ব্যৱহাৰ কৰোঁ।

সেইবাবে ঘোঁটালাত বুৰি থকা চৰকাৰ নহয়। এখন স্বচ্ছ, পাৰদৰ্শী আৰু ইমানদাৰ চৰকাৰ লাগে যি সকলে দেশক ভাল শাসন-প্ৰশাসন দিব পাৰে।

দেশত প্ৰচলিত শিক্ষাপ্ৰণালী অটলজীয়ে পছন্দ নকৰে। তেওঁ বিচাৰে লৰা-ছোৱালীৰ স্বাভাৱিক প্ৰবৃত্তিৰ বিকাশ সহজভাবে বাঢ়িব দিব লাগে। কণকণ লৰা-ছোৱালীৰ পিঠিত কিতাপৰ গধুৰ বেগ দেখি তেওঁ দুখ পায়। তেওঁ লৰা-ছোৱালীৰ মনত স্বভিমান, ৰাষ্ট্ৰভিমান আৰু অনুশাসন জগাবলৈ পক্ষপাতী তেওঁ স্বীকাৰ কৰে দেশত ছোৱালীৰ শিক্ষা এতিয়াও উপেক্ষিত। সেইবাবে গাওঁত আৰু কন্যাবিদ্যালয় স্থাপন হ'ব লাগে। তেওঁৰ মতে—“শাসন শিক্ষাৰ প্ৰতি উদাসীন, আমাৰ প্ৰাথমিক শিক্ষাই ত্ৰুটিপূৰ্ণ কিতাপৰ পাহাড়লৈ লৰা-ছোৱালী স্কুলত যায় শিক্ষা বাৱসায় হৈ গল। এনেকুৱা স্থিতিত ৰাষ্ট্ৰ নিৰ্মাণৰ কথা কোনে ভাবিব পাৰে? এতিয়া কেন্দ্ৰত আমাৰ

চৰকাৰ আহিব লাগে, আমি এই ঐতিপূৰ্ণ পদ্ধতিক বদলাই, আৰু বদলাবলৈ আবশ্যক হৈ পৰিছে।”

নিৰ্বাচন প্ৰচাৰত অটলজী মহোনা ক্ষেত্ৰত অৱস্থিত গাঁওবিলাকত গৈ সৰু সৰু সভাত সন্মোদিত কৰিছিল। তেওঁ কৈছিল-গাঁওত বিজুলী, পানী আৰু বাটৰ অসুবিধা-এক কথাত গাঁওবিলাক উপেক্ষিত। তেওঁ চিন্তা কৰে যদিও দিল্লী এৰিব নোৱাৰে। তাত বহি বহি অকল গাঁওৰ চিন্তা কৰে। গাঁওত যদি কুৰা নথাকে তেতিয়া মানুহ পিয়াহত মৰি যাব। আমাৰ ইয়াত কুৰাই ভগবান। মই নিজৰ ক্ষেত্ৰত হেণ্ডপাম্প লগুৱাই দিছোঁ। কিন্তু খবৰ পাইছোঁ গৰমৰ দিনত পানী নোলায়। মানুহে কৈ থাকে— এইটো অটলজীৰ হেণ্ডপাম্প। তাৰ বোৰিং দ্ৰুৱি কৰা নাই। আধিকাৰী আৰু ঠিকাদাৰে মিলি ইফাল – সিফাল কৰিছে। ঘোঁটোলা কৰিছে। যিফালে চাও সেই ফালে ঘোঁটোলা। প্ৰধানমন্ত্ৰী স্বয়ং ঘোঁটোলাত লিপ্ত আছে। সংসদত মই যেতিয়া তেওঁৰ উপৰত লগা ঘোঁটোলাৰ কথা শুধো তেওঁ মৌন। চুপ!! মৌনী বাবা।

কথা কুসীৰ জনসভা এখনত অটলজীয়ে বৰুৱীদৰ দিনত ভাষণ দি আছিল। বহু সংখ্যক মুৰ্চলিম ভাই-এ ভাজপ’ সদস্যত প্ৰহণ কৰিলে। তেওঁ কলে—“ অজি বৰুৱীদৰ উৎসৱ মই মুৰ্চলিম ভাইসকলক শুভেচ্ছা জনাইছোঁ। উৎসৱ শাস্তিপূৰ্ণ হ’ব লাগে, সকলোৰে মিলি-জুলি উৎসৱ পালন কৰিব লাগে, এইটো ভাল কথা।

এতিয়া কথা হল অযোধ্যাৰ। ৰামৰ ভাতত জন্ম হৈছিল। তাত মন্দিৰ আছিল। বাবৰে সেই মন্দিৰ ধ্বংস কৰিলে। তেওঁ বিদেশী আছিল। সেইবাবে হিন্দুসকলক অপমানিত কৰিবৰ বাবে তেওঁ মন্দিৰ ধ্বংস কৰাইছিল।

সৰদাৰ পাটোলে ‘সোমন’ মন্দিৰক ৰাষ্ট্ৰৰ গৌৰৱৰ বাবে পুনৰ নিৰ্মাণ কৰোৱাইছিল।



‘উপাধৰ’ দিনা মৌলবীয়ে মুৰ্চলিম দুৰ্গ পিন্ধাই অটলজী আৰু অ’ডগাণাৰ্জীক

তেতিয়া হ'লে অযোধ্যাত বামমন্দিৰ কিয় নিৰ্মাণ নহ'ব? বিচিত্ৰ কথা, বাবৰ য'ৰ পৰা অ'হিছিল তাত বহুত কিছু পৰিবৰ্তন হৈ গ'ল, কিন্তু ইয়াৰ মানুহ সলনি নহ'ল, এনেকুৱা কিয় হয়? কিয়নো ভোটৰ ৰাজনীতিয়ে তাক সলনি হ'ব নিদিয়ৈ।

আবে ভাই! বামজন্তুভূমিত মন্দিৰ নিৰ্মাণ হ'লে কি হ'ব, কোনোলা পাহাড় ভাঙি পৰিব নেকি?"

নিৰ্বাচনৰ সময়ত অটলজী এদিন লক্ষ্ণৌলৈ আহিছিল। তেওঁ থকা গেস্ট হাউচত বুকী পিন্ধা বহুত মহিলা অ'হি অতি সন্মানৰে অটলজীৰ বীণ হাতত 'ইমামেজ'মিন' বাকি অল্ল'হভালাৰ প্ৰতি দোৱা কৰিলে কি অটলজী নিৰ্বাচনত বিজয়ী হওক।

ভাঙপা অল্লসংখ্যক মোৰ্চাই মুচলিম মতক নিজৰ পাটিত আনিবৰ বাবে এনেকুৱা আৰু অনেক আয়োজন কৰিছে। অটলজীৰ উদাৰ ছবিৰ বাবে মুচলিম মতদাতায় ভাঙপাক ভোট দিবৰ বাবে প্ৰচাৰ কৰিছে আৰু নিজৰ ভোটো দিছে।

দিবীৰ জন্তুৰ-মন্তুৰত আয়োজিত এখন জনসভাত অটলজীয়ে কৈছিল—“দেশৰ জনতাই সত্তা পৰিবৰ্তন বিচাৰিছে। সকলো ঠাইতে ভাঙপাই জনতাৰ সীমাহীন সমৰ্থন পাই আহিছে। দেশৰ মতদাতায় এই নিৰ্বাচনৰ যুৱত বুদ্ধি পালে। আমাৰে ইচ্ছা দেশৰ ইতিহাসত এক স্বৰ্ণিম অধ্যায় সূচনা হওক আৰু মই ভাবো জনতাই ইয়াৰ পুৰা লাভ উঠাব।” তেওঁ আৰু কলে—দেশৰ মতদাতা সকল নিশ্চয় কম লিখাপড়া, কিন্তু মূৰ নহয়। এতিয়া মতদাতা চতুৰ আৰু পৰিপক্ব হৈ গ'ল। তেওঁলোকে মনতে যেতিয়া পৰিবৰ্তন বিচাৰিছে, পৰিবৰ্তন আহিব, নিশ্চয় আহিব।

লক্ষ্ণৌৰ লগতে পাটিৰ নিৰ্দেশানুযায়ী গান্ধী নগৰতো নিৰ্বাচন পত্ৰ মাখিল কৰিছিল।



বাঙালীত কে.আৰ. নাৰায়ণক মহাত্মা গান্ধীৰ হৃদয়লগত পুস্তকসমিতি প্ৰদান কৰিছে

তাত আয়োজিত জনসভা এখনত অটলজীয়ে ভাষণ দিছিল। সভাত অপাৰ জনসমূহ ঠাই নোজোৰা হৈছে। অটলজীক দেখাৰ লগে লগে জয়ধ্বনি উঠিল —

“হামাৰ পী. এম কৈসা হো, অটল বিহাৰী জৈসা হো ”

“লাল কিলে পৰ পৰ কমল নিশান, মীত্ৰ বহা হে হিন্দুস্থান।”

স্থানীয় নেতাৰ ভাষণৰ পাছত অটলজী লাহেকৈ উঠি আহি মাইকৰ ওচৰ পালেহি আকৌ জয়ধ্বনি আৰম্ভ হ’ল —

“অটল বিহাৰী জিন্দাবাদ, জিন্দাবাদ ”

“ভাৰত মাতা কী জয়, ভাৰত মাতা কী জয়।”

অটলজী কবলৈ আৰম্ভ কৰিলে— “এইখন ঠাই গান্ধীজীৰ জন্মস্থান মই এই ঠাইক মুৰ নত কৰি সেৱা কৰিলোঁ। (জনতাৰ হাতৰ তালিয়ে মুখৰিত কৰিলে)। মই আপনালোকৰ প্ৰত্যাশী আপনালোকৰ পৰা ভোট বিচাৰি আহিছোঁ। আপনালোকৰ এই ভোট ভাবী ভাৰত নিৰ্মাণৰ বাবে সহায়ক হব। এইখন ঐতিহাসিক নিৰ্বাচন নিৰ্ণয়ো ঐতিহাসিক হব। এই নিৰ্ণয় দেশৰ মতদাতাই কৰিব, দেশৰ সম্পত্তিৰ ছাবি কাৰ হাতত দিব— সিহঁতক, যি সকলে নেকি কোটি টকাৰ ঘোটালা কৰিছে, নে সিহঁতক যি সকলে ৰাষ্ট্ৰ নিৰ্মাণৰ বাবে প্ৰাণপণ চেষ্টা কৰি আছে।

কাশ্মীৰৰ সমস্যা যোৱা ৫০ বছৰ ধৰি ওলমি আছে এতিয়া সময় আহি গ’ল কাশ্মীৰক দেশৰ অন্য ৰাজ্যৰ দৰে সমান ৰূপ দিয়া হব পৰিবৰ্তনৰ জোৱাৰ আহি গৈছে বিৰোধী পক্ষ জ্বলি উঠিছে। তেওঁলোকে পথ নেদেখা হৈছে আমাৰ বিশ্বাস আপোনালোক সকলোৰে প্ৰতিনিধি ৰূপত সংসদত গৈ দেশৰ পীড়িত জনসাধাৰণৰ হকৰ বাবে দুই গুন উৎসাহে যুজিব পাৰিম ”

দিল্লী দূৰদৰ্শন যোগে জনতাৰ নামত প্ৰচাৰিত ৰাজনীতিক ভাষণত অটলজীয়ে কলে— স্বদেশী আমাৰ বাবে অকল মৌখিক ভাষা নহয়, আত্মনিৰ্ভৰতাৰ দ্বিতীয় নাম বুলি কব পাৰি। তেওঁ কংগ্ৰেছৰ ভ্ৰষ্ট আৰু নিকম্মা চৰকাৰক আতৰাই কেন্দ্ৰত স্বচ্ছ, সক্ষম আৰু সংবেদনশীল চৰকাৰ বনোৱাত ভাজপাক সহযোগ কৰিবলৈ আপীল কৰিলে — “দেশক আজি এনেকুৱা এখন চৰকাৰ লাগে যি প্ৰভাবী, পাৰদৰ্শী তথা ৰাইজৰ সুখ দুখ বুজিব পাৰে লগতে ৰাষ্ট্ৰ তথা নাগৰিকৰ হিত ৰক্ষা কৰিবৰ ক্ষমতা থাকে ” অটলজীয়ে আশ্বাস দি কলে তেওঁৰ চৰকাৰ গৰীবী, বে-বোজগাৰ আৰু সামাজিক উদ্বেজনা তথা আতঙ্কবাদৰ নিচিনা মামলাক প্ৰাথমিকতাৰ আধাৰত নিৰ্মূল কৰিব

তেওঁ কলে - আমাৰ চৰকাৰে দেশখনক ইমান শক্তিশালী কৰিব যে কোনো দেশে আমাক চকু থিয় কৰি চোৱাৰ সাহস নকৰিব। তেওঁ দেশৰ হেৰাই যোৱা গৌৰৱ পুনৰুদ্ধাৰ কৰি দেশক বিশ্বত স্থান দিয়াব। শাসনৰ দায়িত্ব লোৱাৰ পিছতেই আমি ৰাষ্ট্ৰ পুনঃ নিৰ্মাণৰ কামত লাগি যাম সংসাধনৰ ৬০ প্ৰতিশত গ্ৰামীণ বিকাশতে উপযোগ কৰিম, কিয়নো দেশৰ অধিকাংশ জনতা তাতেই থাকে। বৰ্তমান আৰ্থিক আৰু উদ্যোগীক নীতিৰ সমীক্ষা কৰিম কিয়নো ধৰণ্য বজাৰ

পাৰদৰ্শিতা, বেদাগ আৰু নিয়কলঙ্ক হ'ব লাগিব বিকাশৰ বাবে আমি বিমান টকা খৰচ কৰো, সেইবোৰ যি উদ্দেশ্যে দিয়া হয় তাৰ কাৰ নাপায় গৈ। যদি তাৰ উচিত প্ৰয়োগ হলে তাৰেই বহুত কাম হলেহেতেন।

মই ৰাষ্ট্ৰ-নিৰ্মাণৰ সুযোগ পালোঁ দেশৰ জনতাৰ ওপৰত মোৰ ভৰসা, মই আশ্বাস দিছো, আমাৰ চেষ্ঠা জনতাৰ হিতৰ কাৰণে হ'ব। আপোনালোকৰ সহযোগ লৈ আমি কাম কৰিম আপোনালোকৰ স্বাগত-সমাবোধই মোক অধিক কাৰ্যৰত কৰিবৰ ক্ষমতা প্ৰদান কৰিলে আপোনালোকৰ স্নেহ আৰু সহযোগৰ বাবে ধন্যবাদ।

মহাপৌৰজীয়ে মোক নগৰৰ ছাবি প্ৰদান কৰাৰ কাৰণ ভবিষ্যতে লক্ষ্ণৌলৈ অহাৰ বাবে মোৰ দুৱাৰখোলা থাকিব লক্ষ্ণৌৰ দুৱাৰ মোৰ বাবে কেতিয়াও বন্ধ নহ'ব; আৰু লক্ষ্ণৌবাসীৰ বাবেও মোৰ দুৱাৰ সদায় খোলা থাকিব। এইটো মোৰ নিজৰ সংসদীয় ক্ষেত্ৰ ইয়াৰ সকলো মোৰ অতি আপোন নমস্কাৰ..... ধন্যবাদ।”

কাৰ্যক্ৰমৰ অন্তত নানক চন্দজীয়ে প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ প্ৰতি কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন কৰিলে ৰাষ্ট্ৰীয় সংগীতৰে স্বাগত সমাবোধৰ সামৰণি মৰা হ'ল

তাৰ পাছত লক্ষ্ণৌৰ বেগম হজৰত মহল পাৰ্কত এখন জনসভাত সম্বোধন কৰিলে বিশাল জনসমুদ্ৰ, জনতাই তেখেতসকলৰ অটলজীক চোৱাৰ বাবে আৰু তেখেতৰ ভাষণ শুনিবৰ বাবে উদগ্ৰীব। প্ৰধানমন্ত্ৰী হোৱাৰ পাছতো চালচলন, বেশভূষাত বিশেষ একো পৰিবৰ্তন হোৱা নাই। সেই একেই বগাধুতি-কুৰ্তা, সেই একেই চাল-চলন, সেই মিচিকিয়া হাঁহি, কিন্তু সুৰক্ষা ব্যৱস্থাত সলনি হৈছে। সুৰক্ষা ব্যৱস্থা অতি কটকটীয়া হৈ পৰিছে। সকলো নতুন নতুন যেন লগা হৈছে। সেইবাবে অটলজীয়ে কৈছে-“সুৰক্ষাৰ বাবে এনেকুৱা গুণীত সোমাই পৰিছো যে মই নিজৰ স্বাধীনতা হেৰাই পেলাইছোঁ ”

সেই জনসভাতে তেওঁ ঘোষণা কৰিলে-তেওঁ লক্ষ্ণৌৰ চিট কেতিয়াও নেৰিব, গান্ধীনগৰৰ চিটৰ পৰা ইস্তাফা দি দিব।

মানুহৰ উৎসাহ উদ্দীপনা দেখি অটলজী অতিভূত হল তেওঁ কলে- মই নিজকে আৰু এবাৰ লক্ষ্ণৌৰ বাবে সমৰ্পিত কৰিবৰ বাবে সাব্যস্ত কৰিলোঁ। লক্ষ্ণৌৰ লগত মোৰ সম্পৰ্ক যোৱা ৫০ বছৰৰ আজিলৈকে সেই পুৰণি গলি-বিলাক মোৰ মনত আছে কিন্তু আজি তাত যাব নোৱাৰো, আজাদী হেৰাই পেলোৱাৰ বাবে, সুৰক্ষাৰ বাবে।

তেওঁ কয় সদায় সুৰক্ষাৰ মাজত থকাৰ বাবে অনুভৱ হয় দেশখনৰ অসুখ হৈছে আৰু তাৰ চিকিৎসাৰ আৱশ্যক দিল্লীত মোক কাঁচৰ বাকচত থিয় কৰি দিয়া হয়। তেওঁৰ অনুমান সেইটো বুলেট পুফ কাঁচ। মই কিন্তু কাঁচৰ ঘেৰাত সোমাই কথা কোৱাৰ পক্ষপাতী নহওঁ

ভালকথা, ইয়াত মোক কিন্তু ভাষণ দিয়াৰ বাবে তেনেকুৱা বন্দোবস্ত কৰা হোৱা নাই।

১৯৯৬ চনৰ ১৯ মে'ত প্ৰধানমন্ত্ৰী শ্ৰী অটল বিহাৰী বাজপেয়ীয়ে আকাশবাণী তথা দূৰদৰ্শন যোগে ৰাষ্ট্ৰৰ নামত বাগ্মী প্ৰচাৰ কৰিলে :

“মোৰ দেশবাসী ভনী আৰু ভাই,

আজি আপোনালোকৰ আগত।মই ভাৰতৰ প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ ৰূপত উপস্থিত হ'বলৈ যি সুযোগ পালো তাৰ বাবে আপোনালোকক ধন্যবাদ।

ৰাষ্ট্ৰপতিজীয়ে ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টি তথা তাৰ সহযোগী দলৰ দ্বাৰা লোকসভাত সকলোতকৈ বেছি চিট পোৱাৰ বাবে চৰকাৰ গঠন কৰিবলৈ মোক নিমন্ত্ৰণ দিলে। ৰাষ্ট্ৰপতি মহোদয়ৰ এই নিৰ্ণয় লোকতন্ত্ৰৰ পৰম্পৰাৰ অনুৰূপ। মই জনাদেশৰ ভাবনাৰ সন্মান কৰি এই পদৰ জিম্মেদাৰী পূৰা বিনম্ৰ সহকাৰে স্বীকাৰ কৰি আছোঁ। কিন্তু কেইজনমান মানুহে এই নিৰ্ণয়ক যিটো ভাষাৰে তীব্ৰ আলোচনা কৰিলে সেইবাবে মই বহুত দুখ পাইছো আৰু মোৰ বিশ্বাস নিশ্চয় আপোনালোকৰ ভাবনাতো আঘাত পৰিছে। যি মানুহে নেকি নানা প্ৰকাৰে ভাঙি-গাঢ়ি আৰু বেলেগ বেলেগ প্ৰকাৰত গঠবন্ধন কৰি আমাতকৈ বেছি চিট কৰিবলৈ পৰা নাই, আজি তেওঁলোক সেই দলৰ লগতে সাঁঠ গাঁঠ কৰিবলৈ সজ্জাচ নকৰে, যি সকলৰ বিৰুদ্ধে তেওঁলোকে কটুতাপূৰ্ণ নিৰ্বাচন সংঘৰ্ষ কৰিছিল। তেওঁলোকৰ এই ৰাজনীতিক সত্তাপ্ৰাপ্তিৰ একমুখ উদ্দেশ্যলৈ প্ৰেৰিত সিদ্ধান্তহীন ৰাজনীতিৰ অতিৰিক্ত একো কব নোৱাৰি। যোৱা এটা সপ্তাহত তেওঁলোকে এনেকুৱা এটা শব্দ কোৱা নাই যিটো নেকি ৰাষ্ট্ৰ আৰু লোকহিতকৰ হ'ব। তেওঁলোকৰ কাৰ্যসূচীত অকল ছটা শব্দ- ‘হম ভাজপা কো নেহী আনে দেঙ্গে’ তাৰ বাবে মোৰ বদনাম কৰিবলৈ সুনিশ্চিত অভিযান চলাইছিল। যাৰ উদ্দেশ্য আছিল আমি পোৱা জনাদেশক ধ্বংস কৰি দিয়া। মোৰ বিশ্বাস লোকতন্ত্ৰত সঁচা নিষ্ঠা থোৱাসকলে গোটেই স্থিতিৰ উপৰত পূৰ্ণবিচাৰ কৰিব।”

প্ৰধানমন্ত্ৰী অটলজীয়ে নিজৰ এই ভাষণত দুখীয়ৰ বাবে আহাৰ, স্বচ্ছ শাসন, স্থায়ী ৰোজগাৰ, ধাৰা ৩৬৫-ৰ দুৰোপযোগ নোহোৱা, পৰিযোজনাৰ কাৰ্যউন্নয়ন, জম্মু-কাশ্মীৰত শান্তি, কাৰ্যপ্ৰণালীৰ সৰলীকৰণ আদি বিষয়ত বিস্তৃত কৈছিল।

(১৯)

মাত্ৰ তেৰদিন প্ৰধানমন্ত্ৰী পদত থাকোঁ পাছত অটলজী ত্যাগ পত্ৰ দিলে। এই ঘটনা হৈ যোৱাৰ পাছত তেখেতক একো ব্যতিক্ৰম হোৱা দেখা নাই। পাৰ্টিৰ লগৰীয়া সকলৰ লগত বহি অতি সহজে আছে।

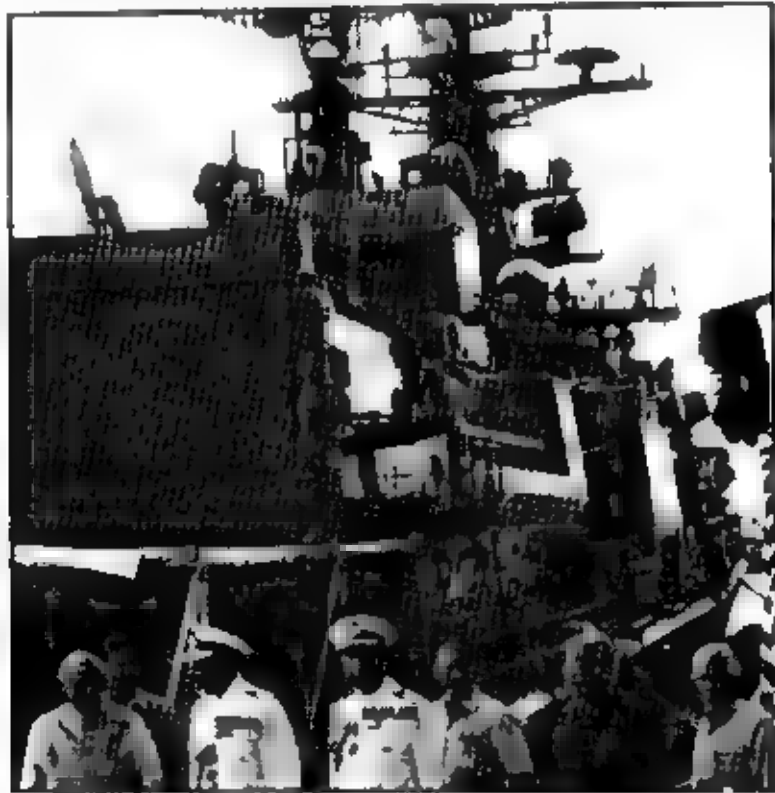
ৰাষ্ট্ৰপতিৰ হাতত ত্যাগ পত্ৰদি সেইদিনা অটলজী ইমান উচ্চত উঠি গল, ইমান ডাঙৰ হৈ গল। পিছদিনা দেশ-বিদেশৰ বহু সমাচাৰ পত্ৰ আৰু মিডিয়াই যিদৰে বৰ্ণনা কৰিলে সেই শব্দ ইতিহাসৰ পাতত স্বৰ্ণাক্ষৰে লিখা থাকিব।

এটা ইতিহাস ৰচিলে, গৌৰৱৰ এটা অধ্যায় লিখা হল, ভাৰতমাতাৰ আৰাধনাৰ এটা

আৰু স্থানীয় উদ্যোগ, বিশেষ কৰি ক্ষুদ্ৰ উদ্যোগৰ সংৰক্ষণ সুনিশ্চিত কৰিব পাৰি। ভাৰুপাই বিশ্ব অৰ্থতন্ত্ৰত ভাৰতক বেলেগ-বেলেগ কৰিব নিবিছাৰে, কিন্তু বিদেশী প্ৰভাৱত নিজৰ আৰ্থিক প্ৰভুসত্তা সমাপ্ত কৰিবলৈ দিব নোৱাৰে।”

লক্ষ্ণৌ নিৰ্বাচন ক্ষেত্ৰত অটলজীৰ বিপক্ষত ৫০ জনৰ বেছি প্ৰত্যাশী ময়দানত নামিছিল। সকলো প্ৰত্যাশীয়ে কয় - এইবাৰ কিন্তু অটলজীক হাবাম।

সমাজবাদী পাৰ্টিয়ে এজন ফিল্মষ্টাৰক ময়দানত নমাইছিল। তেখেতক চোৱাৰ বাবে, হাত মিলাবলৈ, লগত ফটো উঠাবলৈ ডেকা গাভৰু ভিৰ। প্ৰত্যাশীজনে অনুমান কৰিলে লক্ষ্ণৌৰ



লৌ বাহিনীৰ জাহাজ পৰিদৰ্শন কৰোতে

জনতা তেওঁৰ সপক্ষে, ভাৰুপাৰ নেতাক তেওঁৰ চমৎকাৰিতা দেখাব পাৰিব। নিজক ৰাষ্ট্ৰীয় পৰ্যায়ৰ নেতা বুলি জ্ঞান কৰিলে। কিন্তু দুৰ্ভাগ্য তেওঁৰ চমৎকাৰিতায় কাম নিদিলে শেষত পৰাজয়ৰ মুখ দেখিব লগা হল।

এইজন ফিল্মষ্টাৰৰ সপক্ষে সাহাৰা ইণ্ডিয়া কোম্পানীয়ে যি ঘৃণণীয় ব্যাহ ৰচিছিল, তাৰ বিৱৰণ ‘ইণ্ডিয়া টুডে’ - ৩১মে ১৯৯৬ চনত প্ৰকাশিত হৈছিল। ইমান ডাঙৰ ঘটনা হৈ যোৱা সত্ত্বেও অটলজীৰ কোনো ধৰণৰ প্ৰতিক্ৰিয়া হোৱা নাছিল। তেখেতে মাথো এইখিনিযেই কৈছিল- “এতিয়া মতদাতা ইমান পৰিপক হৈছে যে তেওঁলোকে লোৱা সিদ্ধান্তক প্ৰভাৱিত কৰিব পৰা কোনো কুচক্ৰ বা চেষ্টাৰ জৰাব তেওঁলোকে দিব পাৰে।

লক্ষ্ণৌ আৰু গান্ধীনগৰ - দুটা সমষ্টিতেই অটলজী বহুমতত বিজয়ী হল। লক্ষ্ণৌত

তেওঁৰ প্ৰতিদ্বন্দী সমাজবাদী পাৰ্টি (সপা) প্ৰত্যাশীক ১ লাখ ১৮ হাজাৰ ভোটত পৰাজিত কৰিলে।
গান্ধীনগৰ সমষ্টিতো তেনেকুৱা বহুমতত বিজয়ী হ'ল।

তেওঁৰ এই বিজয়ে ভাজপা দলত অত্যধিক প্ৰসন্নতা দেখা দিলে। একাদশ লোকসভাত
সকলো ৰাষ্ট্ৰীয় পাৰ্টিৰ ভিতৰত ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিৰ সংসদৰ সংখ্যাই সবাতোকৈ বেছি হ'ল।
মুখ্য প্ৰতিদ্বন্দী কংগ্ৰেছ পাৰ্টি ভাজপাৰ বহু পিছত থাকি গ'ল। তেওঁলোকৰ সাংসদ সংখ্যা ১৩৬
আৰু ভাজপাৰ সাংসদ সংখ্যা ১৬১ জন। সেইবাবে সৰ্বসন্মতিক্ৰমে লোকসভাৰ সবাতোকৈ
ডাঙৰ পাৰ্টি, আৰু ভাজপা নেতা অটলজীক সংসদীয় দলৰ নেতা মনোনীত কৰা হ'ল। ইয়াৰ
আগতেও তেওঁৰেই পাৰ্টিৰ সংসদীয় দলৰ নেতা আৰু লোকসভাৰ প্ৰতিপক্ষৰ নেতা আছিলে

(১৮)

১৯৯৬ চনৰ ১৫ মে, নতুন দিল্লীস্থ ৰায়সীনা ৰোডৰ বঙলা নম্বৰ ৬, দিনৰ দুই বাজিল
শিৱকুমাৰজী নিজৰ কোঠাত বহি কিবা ভাবি আছে। হঠাৎ ফোন আহিলে কথা পাতি ফোন থৈ
দিলে। আকৌ চুপচাপ, কিবা এটা কথাত চিন্তামগ্ন হৈ আছে। পুনঃ ফোন আহিলে কথাপাতি
ফোন থৈ দিয়াৰ লগে লগে কৰ্মচাৰী জয়প্ৰকাশ প্ৰায় লৰি আহি জনালে-“ চাহাব আহি গৈছে
হাতত ফুলৰ মালা।”

তেতিয়াহে গম পোৱা গ'ল ৰাষ্ট্ৰপতি মহোদয়ে অটলজীক চৰকাৰ গঠন কৰিবলৈ
নিমন্ত্ৰণ দিছে। কালিলৈ ১২ বজাত শপথ লোৱা হ'ব। ভিতৰৰ পৰা মিঠাই আহিলে। সকলোৱে
মিঠাই খালে, এজনে আনজনক খুৱাই দিলে।

অলপ পিছতেই বঙলাত এস, পী, জীৰ কজা, লনত চকি পৰা হ'ল, সোফা, মাইক,
শামিয়ানা আদিৰ ব্যবস্থা কৰা হ'ল। এক ঘণ্টা আগত ৬ নম্বৰ ৰায়সীনা ৰোডৰ বঙলাটো সাধাৰণ
আছিল। কিন্তু এতিয়া “প্ৰধানমন্ত্ৰী নিবাস” হৈ গ'ল। বিশ্বৰ সবাতোকৈ ডাঙৰ লোকতন্ত্ৰৰ প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ
আবাস বাতাবৰণ সলনি হ'ল, মেঘৰ ৰঙো সলনি হ'ল যেন লাগিল।

ৰাষ্ট্ৰপতিয়ে পৰামৰ্শৰ বাবে সবাতোকৈ ডাঙৰ পাৰ্টিৰ নেতা অটল বিহাৰী বাজপেয়ীক
মাতি পঠাইছে। চিঠিত অকল এইটোয়ে লিখা আছে নিৰ্বাচন পৰিণামৰ বিষয়ে পৰামৰ্শ কৰিবৰ
বাবে ৰাষ্ট্ৰপতিয়ে মাতিছে।

যাৱাৰ অটলজী ৰাষ্ট্ৰপতি ভৱনলৈ গ'ল। তালৈ গৈ ৰাষ্ট্ৰপতি মহোদয়ক ক'লে- ‘কেনেকুৱা
পৰামৰ্শ? ইয়াত পৰামৰ্শৰ কি অৰ্থ? মাতি পঠোৱা মানে চৰকাৰ গঠন কৰিবলৈ নিমন্ত্ৰণ দিয়া
হয়।’

অটলজীৰ কথাশুনি জেপৰ পৰা খাম এটা উলিয়াই ৰাষ্ট্ৰপতিজীয়ে ক'লে- এইখন
জপক। এইখন চৰকাৰ গঠন কৰিবলৈ দিয়া নিমন্ত্ৰণ।

অটলজীয়ে চিঠিখন খুলি পঢ়ি কলে “স্বীকাৰ কৰিলোঁ”

বিভিন্ন মাধ্যমৰ যোগে খবৰটো দেশৰ চুকে কোনে বিয়পি পৰিল যে ৰাষ্ট্ৰপতিয়ে

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



50

জয়কাৰ গ্ৰহন কৰি আছে আৰু মিচিকীয়া হাঁহিৰে মানুহক অভ্যৰ্থনা কৰি আছে।

যেতিয়া আডবাণীজী বাহিৰত আহিলে মিডিয়াৰ মানুহে তেওঁক আগুৰি ধৰিলে; কিন্তু অত্যাধিক ভাবুকতায় কিবা কব বিচাৰি ও ডিঙি ৰুদ্ধ হোৱাৰ বাবে একো নকৈ চুপচাপ গাড়ীতে বহিলে।

লাহে লাহে সূৰ্যাস্ত হ'ল চাৰিওফালে একাৰ বিয়পিল কিন্তু হলে কি হব, সেইদিনা দিল্লীত সকলোৱে দেওৱালী পাতিছে আতস-বাজি কৰি আছে ৰাস্তাত মানুহে মিঠাই, চান্দা আদি বিলাই আছে।

ৰাতি লক্ষ্ণৌ, জয়পুৰ, আহমেদাবাদ, কলিকতা আৰু মুম্বাইৰ ঘনিষ্ঠ মিত্ৰ সকলে ফোনত শুভেচ্ছা জনাই আছে।

পিছদিনা ১৬ মে, ৰাতিপুৱাৰ পৰা মানুহৰ ভিৰ। অটলজীৰ নিজৰ ক্ষেত্ৰ লক্ষ্ণৌৰ পৰা প্ৰায় পাঁচশ-ছশ মানুহ কাৰ, বাছ, টেক্সি, ট্ৰেইন আৰু প্লেইনত দিল্লী আহি পালেহি। তেওঁলোকৰ আনন্দৰ সীমা নাই, তেওঁলোকৰ অটলজী আজি ভাৰতৰ প্ৰধানমন্ত্ৰী। কোনোবাই আহি তেওঁক ফোট দি আছে, কোনবাই ফুলৰ মালা আৰু কোনবাই ফটোগ্ৰাফাৰক সংকেত দি অটলজীক লাৰু খুৱাই আছে।

বঙলাৰ আগৰ আমগছডাল আজি বেছিহে ধুনীয়া লাগিছে। এই গছডালৰ ছাত অটলজী কেতিয়াবা বহি আৰাম কৰে, কেতিয়াবা কবিতাও লেখে। আজি এই গছডাল হৰ্ষবিভাৱ কয়নো তেওঁৰ অটলজী আজি প্ৰধানমন্ত্ৰী হৈছে।

কিবা কামত অলপ সময়ৰ বাবে অটলজী বাহিৰত ওলাই গল ঘূৰি আহি বাহিৰত ভিৰ দেখি গাড়ী বখাই দিলে, গাড়ীৰ পৰা নামি ভীৰৰ মাজত সোমাই গ'ল। সুৰক্ষা কৰ্মীয়ে বহুত চেষ্টা কৰিলে তেওঁ ভিৰৰ পৰা ওলাই আহক। কিন্তু তেওঁ সকলোকে লগ ধৰিহে বঙলাত সোমাল, উৎসাহী জনতাই জয়ধ্বনি কৰিলে “জয় শ্ৰী ৰাম”, “ভাৰত মাতা কী জয়”,

দিনৰ ১১ বাজিবলৈ হ'ল। অটলজী ৰাষ্ট্ৰপতি ভৱন আহি পালে। উৎযোগী সকলে শপত গ্ৰহণ সমাৰোহ চোৱাৰ মন কিন্তু সকলোকে প্ৰবেশ পত্ৰ দিয়া নাযায়, কিন্তু সকলোৱেই নিজে নিজে চেষ্টা কৰি আছে। ১১-৩০ মিঃ লৈকে ৰাষ্ট্ৰপতি ভৱনত সোমোৱা আৰম্ভ হ'ল।

ৰাষ্ট্ৰপতি ভৱনত প্ৰতি পদক্ষেপতে অতি সুৰক্ষা ব্যৱস্থা। প্ৰবেশ পত্ৰ চেকিং, মেটেল ডিটেক্টৰৰ চেকিং, প্ৰতি দহ গজতে চেকিং হৈ আছে। হবও লাগে কয়নো আজি ভাৰত গণৰাজ্যৰ প্ৰথম ৰাষ্ট্ৰবাদী চৰকাৰে শপত লব।

অশোক হল সুসজ্জিত মিডিয়াৰ মানুহে নিজৰ নিজৰ কেমেৰা লৈ থিয় হৈ আছে। ঠিক বাৰ বজাৰ লগে লগে মহামহিম ৰাষ্ট্ৰপতি পদাৰ্পণ কৰিলে। সকলোৱে থিয় হৈ তেওঁক স্বাগত জনালে।

শপত গ্ৰহণ সমাৰোহ আৰম্ভ হল। প্ৰধানমন্ত্ৰী অটলজী বাদে শপত লোৱা বাকী মন্ত্ৰীসকল

হ'ল সৰ্ব্বশ্ৰী- সিকন্দৰ বৰুৱা, ড° মুৰলী মনোহৰ যোশী, জসৱন্ত সিং, সুৰজভান, সতৰাজ সিং, কড়িয়া মুণ্ডা, বামজ্যোত্স্নানী, বী. ধনঞ্জয়কুমাৰ, প্ৰমোদ মহাজন, সুৰেশ প্ৰভাকৰ, প্ৰভু আৰু সুষমা স্বৰাজ আদি

উপস্থিত গণ্যমান্য মানুহৰ মাজত-উপ-ৰাষ্ট্ৰপতি, ৰাজমাতা বিজয়া ৰাজে সিদ্ধিয়া প্ৰাক্তন প্ৰধানমন্ত্ৰী নবসিংহ ৰাৱ, আডবাণীজী বাদেও গণ্যমান্য নাগৰিক আৰু বহুত ৰাজনেতা

ভাৰতীয় গণতন্ত্ৰৰ ৰাষ্ট্ৰপতি শ্ৰী শঙ্কৰদয়াল শৰ্মাই ভাৰতৰ একাদশ প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ ৰূপত শ্ৰী অটল বিহাৰী বাজপেয়ীক পদ আৰু গোপনীয়তাৰ শপত দিয়ালে গোটেই হল মানুহৰ হাত চাপৰিত মুখৰিত হ'ল পিছে পিছে ৰাষ্ট্ৰপতিয়ে সকলো মন্ত্ৰীক শপত দিয়ালে

শপত গ্ৰহণ সমাৰোহ সম্পন্ন কৰি বিশেষ সুৰক্ষাৰ মাজতে প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ গাড়ী ৬ নম্বৰ ৰায়সীনা ৰোডস্থ প্ৰধানমন্ত্ৰী বাসভৱনৰ ফালে আগবাঢ়িলে। ভৱনৰ বাহিৰে ভিতৰে মানুহৰ ভিৰ। সুৰক্ষা কৰ্মীয়ে সকলোকে নিয়ন্ত্ৰণ কৰি আছে। তেখেত সকলৰ অবস্থা দেখি প্ৰধানমন্ত্ৰীয়ে কলে -“সকলোৰে মালা পিন্ধাবলৈ দিয়া, গুলদস্তা দিবলৈ দিয়া.... যোৱা কালিলৈকে যিসকলে মালা পিন্ধাইছিল, তেওঁলোকক আজি কিয় বাধা দিয়া হৈছে!”

অটলজীৰ এই দুটা বাক্যই জনতাৰ প্ৰতি তেওঁৰ সঁচা প্ৰেম প্ৰকট হৈ উঠে তেওঁ নিৰ্ভয় আৰু সদায় নিৰ্ভয় হৈ থাকিব বিচাৰে।

প্ৰথমদিনা অটলজী সাউথ ব্লকস্থিত প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ কাৰ্যালয়ত বহিলে যদিও তেখেতে জানে গন্তব্যস্থল এতিয়াও দূৰত আছে, ৩১ মে'ত কঠিন পৰীক্ষা বাকী আছে। সিদিনা বহুমত সিদ্ধ কৰিব নোৱাৰিলে মন্ত্ৰীত্ব পদ ত্যাগ কৰিব লাগিব সকলো পাৰ্টিয়ে উঠি-পৰি লাগি আছে ভাৰুপা চৰকাৰক বৰখাস্ত কৰিবৰ বাবে।

দেশ-বিদেশৰ পৰা অটলজী প্ৰধান মন্ত্ৰীত্ব পোৱাৰ শুভকামনাৰ খবৰবোৰ আহি আছে। আমেৰিকাৰ ৰাষ্ট্ৰপতি বিল ক্লিণ্টনে তেওঁৰ শুভকামনা ব্যক্ত কৰি কলে-“ভাৰত আৰু আমেৰিকাৰ সম্বন্ধ সুদৃঢ় কৰাবলৈ আপোনাৰ গভীৰ প্ৰতিবদ্ধতাৰ লগত মই পৰিচিত আৰু মোৰো চিন্তা এইটোৱে। মই আপোনাৰ লগত সহকাৰ্য কৰিবলৈ উৎসুক।”

ভূটান নৰেশ জিগমে সিগমে ৰাজচুকে ভাৰুপা পাৰ্টিৰ সফলতাৰ বাবে শুভেচ্ছা জনালে।

নেপাল নৰেশ শ্ৰী বীৰেন্দ্ৰই তেওঁৰ শুভেচ্ছাবাণীত কলে-আপোনাৰ অনুভৱ জ্ঞান আৰু পৰিপক্বতাৰ উপযোগ ভাৰতৰ সম্পন্নতাক অভূতপূৰ্ব উঁচাত লৈ যাব পাৰিব মোৰ বিশ্বাস আপোনাৰ বিবেক আমাৰ দুয়োকে লাভান্বিত কৰিব।

শ্ৰীলঙ্কাৰ ৰাষ্ট্ৰপতি চন্দ্ৰিকা কুমাৰ তুঙ্গায় শ্ৰী বাজপেয়ীক শুভেচ্ছা জনালে আৰু বিশ্বাস ব্যক্ত কৰি কলে-দুয়ো দেশৰ মাজত দ্বিপক্ষীয় সম্বন্ধ আৰু মজবুত হ'ব।

উত্তৰ প্ৰদেশৰ ৰাজ্যপাল মহম্মদ শফী কুৰেশীয়ে শ্ৰী বাজপেয়ীক প্ৰধানমন্ত্ৰী হোৱাৰ বাবে শুভেচ্ছা জনালে। তেওঁৰ শুভেচ্ছাবাণীত জনালে শ্ৰী বাজপেয়ীৰ নেতৃত্বত দেশে নতুন

উঁচা ৰূপ পাব।

এনেকুৱা কৈ দেশ-বিদেশৰ অনেক ৰাজনেতা, বুদ্ধিজীৱী, সাহিত্যকাৰ, সংস্কৃতি - কৰ্মী, কবি, কলাকাৰৰ শুভেচ্ছা বাণী অটলজীয়ে পালে।

উলেমা মুসলিম বুদ্ধিজীৱিৰ ৰায় ভাৰতৰ নতুন প্ৰধানমন্ত্ৰী অটল বিহাৰী বাজপেয়ীক “অগ্নি পৰীক্ষাৰ” মুখামুখী কৰিব। তেওঁ কয় নিঃসন্দেহে অটল বিহাৰীৰ চিন্তাধাৰাৰ প্ৰতি কোনে ও সন্দেহ কৰিব নোৱাৰে কিন্তু এইকথাৰ কোনো গেৰেণ্টী নাই “সত্তা শক্তিৰ” উৎসাহত ৬ ডিচেম্বৰ ১৯৯২ চনৰ দৰে আকৌ যেন নহয় অটলজীয়ে ইয়াৰ বাবে যুজিব লাগিব।



ভূটান নৰেশ জিগমে সিগমে ৰাস্চুকক আদৰ্শ জনাইছে

বিশ্বপ্ৰসিদ্ধ দাৰুল উলুম নদবতল উলেমা (নদবা কলেজ)-ৰ প্ৰধানাচাৰ্য মৌলানা ৰাবে হসন নদবীয়ে কয়-“ ভাজপা চৰকাৰ হোৱা মানে মুচলমানৰ ওপৰত পাহাড় ভাঙি পড়িব ইটো ভুল ধাৰণা। চৰকাৰ যি পাৰ্টিৰেই হওক মুচলমানে নিজৰ জান-মাল আৰু ইমানৰ গেৰেণ্টী বিচাৰে দেশৰ সংবিধানত প্ৰত্যেক নাগৰিকক এই তিনিটা বস্তুৰ পৰা ৰক্ষা কৰা প্ৰত্যেক চৰকাৰেই প্ৰধান দায়িত্ব ”

তেওঁ কয় আজি ভাজপা চৰকাৰ হোৱাৰ পাছত অকল মুচলমানৰ প্ৰতিক্ৰিয়া কিয় জানিব বিহুৰা হল, এনেকুৱা বহুত অনা-মুচলিম আছে যিসকলো ভাজপাক পচন্দ নকৰে আৰু বহুত মুচলমান আছে যিসকলে ভাজপাক পচন্দ কৰে

অযোধ্যা বিবাদ, কমন চিভিল কোড আদি বিষয়ত ভাজপা আৰু মুচলিম নেতৃত্বৰ মাজত বিৰোধ দেখা দিয়ে, এনেকুৱা অৱস্থাত কেন্দ্ৰত যেতিয়া ভাজপা চৰকাৰ হব তেতিয়া কি হব? ইয়াৰ উত্তৰত মৌলানাই কয়-“আমি কানুনৰ ওপৰত বিশ্বাস কৰো, ১৯৯২ চনৰ ৬ ডিচেম্বৰত ইমান ডাঙৰ ঘটনা ঘটি যোৱাৰ পাচতো আমি ৰাস্তাত নমা নাই। আজিও আমি তাৰ বিৰুদ্ধে আদালতত যুজি আছে। ভবিষ্যতে ও যদি এনেকুৱা কিবা হয় আদালতৰ বাট আমাৰ বাবে মুকলি থাকিব।”

অটলজীৱীৰ শপত গ্ৰহণ সমাৰোহত অবসৰবাদী তথাকথিত ‘তীসৰা মোৰ্চা’ৰ নেতায় সমাৰোহ বয়কট কৰিলে তদুপৰি মহামহিম ৰাষ্ট্ৰপতিৰ প্ৰতি অভদ্ৰ শব্দাৱলী প্ৰয়োগ কৰিলে

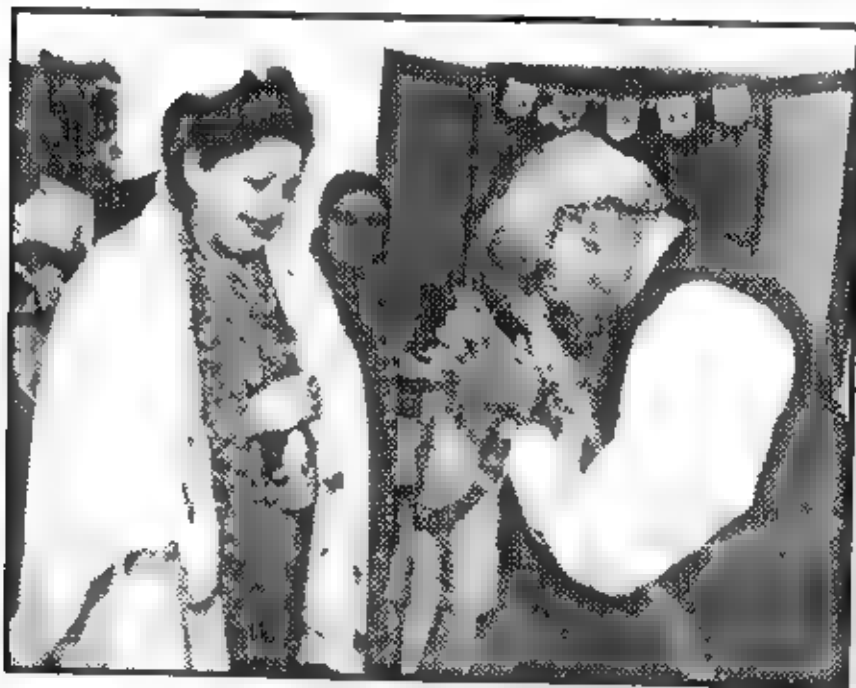
বেচাৰাহতে কি নো কৰিব 'নাই সংস্কাৰ, নাই অধ্যয়ন, নাই চিন্তন। অকল সম্প্ৰদায়বাদ, জাতিবাদ, স্বার্থবাদ আৰু গুণবাদ - এই বিলাকৰ আশ্ৰয় লৈ ৰাজনীতি খেলি আছে। সেই সময়ত দিল্লীত উপস্থিত থকা মাৰ্ক্সবাদী নেতা শ্ৰী জ্যোতি বসুয়ে ইমান হৃদয়হীনতাৰ পৰিচয় দিলে যে, প্ৰধানমন্ত্ৰী অটল বিহাৰী বাজপেয়ীক শুভেচ্ছা জনোৱা অগ্ৰাহ্য কৰাৰ উপৰি অশ্লীল ভাষা প্ৰয়োগ কৰিলে।

এয়ে নেকি ভাৰতীয় সংস্কৃতি? গুৰুদেৱ ৰবীন্দ্ৰনাথ ঠাকুৰ থকা দেশৰ মানুহৰ এনেকুৱা আচৰণ হ'ব পাৰে নেকি? বিশ্বাস নহয়, কিন্তু সত্য বস্তুটো সত্যই

অটলজীৰ প্ৰতি আডাবাণীজীৰ মনত যিটো আদৰ আৰু প্ৰেম সেইটো সকলো মানুহে জানে। আডাবাণী জী বয়সত অটলজীতকৈ সৰু। এটা সাক্ষাৎকাৰত আডাবাণীজীয়ে স্পষ্ট কৈছিল-
-আমাৰ পাৰ্টিয়ে যদি বহুত পায়, তেতিয়া হ'লে অটলজীয়ে প্ৰধানমন্ত্ৰী হ'ব অকল যোগ্যতা আৰু প্ৰতিভা বুলি নহয় দেশৰ জন-গনে যাক সহজে স্বীকৰ কৰে।

১৯ মে'ত অটলজী প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ অসনত অধিষ্ঠিত হোৱাৰ পাছত তেখেতক অভিনন্দন জনোৱা হ'ল। এই অভিনন্দন সমাৰোহত পাৰ্টিৰ অধ্যক্ষ মাননীয় আডাবাণীজীৰ অতিবিস্তৃত বহুত নেতা, কাৰ্যকৰ্তা আৰু গণ্যমান্য নাগৰিক উপস্থিত আছিল। সমাৰোহত অটলজীয়ে সকলোকে সম্বোধন কৰিছিল

তাৰ পিছত তেওঁ গুজৰাটৰ গান্ধীনগৰত আয়োজিত অভিনন্দন সমাৰোহত যোগদান কৰিছিল। অপাৰ জনসমূহ। জনগণৰ গগনভেদ ধ্বনি। তাৰ মাজতে অভিনন্দন কাৰ্যক্ৰম। অটলজীয়ে তেওঁৰ ভাষণত গান্ধীনগৰৰ জনতাৰ প্ৰতি আন্তৰিক ধন্যবাদ বাক্য কৰি কলে -“অমি



সময় পৰিলে এনেকুৱা মানুহৰ আগতো জুৰিব লাগে

দেশক আতঙ্কবাদৰ পৰা মুক্তি কৰিহে উশাহ লম। আমাৰ চৰকাৰে স্বচ্ছ প্ৰশাসন দিব আৰু তাত পাবদৰ্শিতা থাকিব জনতাৰ ভাল হোৱাটো আমাৰ প্ৰমুখ উদ্দেশ্য।

৩১ মে-ত কি হ'ব? সংসদত জিকিলে সত্তাৰ দায়িত্ব ভাজপাৰ হাতত আৰু হাবিলে ভবা হ'ব যেন কোঁৰবে মিলি অভিমন্যক বধ কৰিলে

১৯৯৬ চনৰ ২১ মে, সেইদিনা নিজৰ ক্ষেত্ৰৰ

সাংসদ আৰু ভাৰতৰ প্ৰধানমন্ত্ৰীক স্বাগত জনোৱাৰ বাবে লক্ষ্ণৌৰ জনতাৰ হৃদয় বিভোৰ হৈ আছে সেইকথা শব্দত প্ৰকাশ কৰা কঠিন তেখেতক প্ৰথমবাৰৰ বাবে যেতিয়া নিৰ্বাচনত বিজয়ী কৰা হৈছিল তেতিয়া তেওঁ সৰ্বশ্ৰেষ্ঠ সাংসদৰ সন্মান পাইছিল। দ্বিতীয়বাৰৰ বাবে যেতিয়া প্ৰতিনিধি নিৰ্বাচিত হ'ল তেতিয়া তেওঁ প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ নিচিনা উচ্চ পদত প্ৰতিষ্ঠিত হ'ল। লক্ষ্ণৌত সেইদিনা আনন্দৰ জোৰাৰ উঠিল।

ৰাষ্ট্ৰীয় বনস্পতি উদ্যানৰ মুকলি প্ৰাঙ্গনত তেখেতক স্বাগত জনোৱাৰ আয়োজন কৰা হৈছিল। এই নাগৰিক আভিনন্দনৰ কাৰ্যক্ৰম লক্ষ্ণৌ নগৰ নিগমে কৰিছিল। সাধাৰণ ভাবে আয়োজিত মঞ্চত প্ৰধানমন্ত্ৰী অটলজী, মহামহিম ৰাজ্যপাল কুৰেশী, মহাপৌৰ ড° এস. সী. ৰায়, শ্ৰী কল্যাণ সিং, শ্ৰী কলৰাজ মিশ্ৰ, শ্ৰী লালজী টাণ্ডন আৰু শ্ৰী নানকচন্দজী কাৰ্যক্ৰমত উপস্থিত আছিল। মহাপৌৰ ড° ৰায়ে প্ৰধানমন্ত্ৰীক স্বাগত জনাই সন্মানৰ প্ৰতীক স্বৰূপে এটা চাবি উপহাৰ দিলে। তাৰ আগতে ৰাজ্যপালে তেখেতক স্বাগত জনাইছিল।

মাননীয় প্ৰধানমন্ত্ৰী অটলজীয়ে তেওঁৰ স্বাগত ভাষণত এনেদৰে কৈছিল —“উত্তৰ প্ৰদেশৰ ৰাজ্যপাল শ্ৰী কুৰেশী জী, লক্ষ্ণৌ নগৰ নিগমৰ মহাপৌৰজী, কল্যাণ সিংজী, কলৰাজজী, টাণ্ডনজী, নানকচন্দজী, নগৰ নিগমৰ সদস্য আৰু উপস্থিত দেৱী সজ্জন। নিজৰ ঘৰত কোনেও অতিথি নহয়। নিৰ্বাচনত মই আপনালোকৰ উম্মীদবাৰ। আপোনাসকলে মোক সেৱাৰ বাবে সুযোগ দিছে। আপনালোকৰ প্ৰতি কৃতজ্ঞতা প্ৰকট কৰিবৰ বাবে আজি ইয়াত উপস্থিত হৈছোঁ।

লক্ষ্ণৌৰ লগত মোৰ সম্বন্ধ বহুত পুৰণি। এই নগৰৰ লগত মই ১৯৪৬-৪৭ চনৰ পৰা জড়িত। লক্ষ্ণৌৰ প্ৰতিনিধিৰ ৰূপত মই লোকসভাত যিসকল কাম কৰিছোঁ, সেইসকল আপনালোকৰ আগত। যেতিয়া যি জিম্মেদাৰী আহিব মই ইমানদাৰী সহকাৰে পূৰা কৰিম। অকল লক্ষ্ণৌ নহয়, সমগ্ৰ দেশৰ সেৱা কৰা মোৰ লক্ষ্য। লক্ষ্ণৌৰ প্ৰতি মোৰ জিম্মেদাৰী অলপ বেছি। কিয়নো মই ইয়াৰ জনপ্ৰতিনিধি।

এই সময়ত প্ৰদেশত ৰাষ্ট্ৰপতি শাসন চলি আছে। সেইবাবে কেন্দ্ৰৰ জিম্মেদাৰ বেছি। এই সময়তে ৰাজ্যপাল ৰূপত শ্ৰী কুৰেশী চাহাবক পাইছোঁ। মই তেখেতৰ প্ৰতি অনুৰোধ, তেখেতে লক্ষ্ণৌৰ প্ৰতি ধ্যান যেন বেছি দিয়ে। কিয়নো এইখন চহৰ অকল প্ৰদেশৰ ৰাজধানী নহয়, এক ঐতিহাসিক নগৰো। ইয়াত বিবিধতাত একতা দেখা যায়।

মই সুদীৰ্ঘ চল্লিশ বছৰ ধৰি ৰাজনীতিত আছোঁ। আসনৰ বাবে নহয়, পদৰ বাবে নহয়, পদৰ মহত্বকান্ধাৰ বাবে নহয়; অকল কৰ্তব্যৰ ভাবনাৰে। ৰাষ্ট্ৰৰ প্ৰতি, মাতৃভূমিৰ প্ৰতি, মানুহৰ পৰা ঋণমুক্ত হোৱাৰ বাবে, সেৱাৰ ভাৱনাৰে, সমৰ্পণৰ ভাৱনাৰে, আমি ৰাষ্ট্ৰ সেৱাত লাগি আছোঁ। সকলোকে লগত লৈ চলাব ভাৱনাৰে, বন্ধুত্বৰ ভাৱনা আৰু ৰাষ্ট্ৰ উত্থানৰ ভাৱনাত জড়িত হৈ আছোঁ।

সেইদিনাৰ পৰা আমাৰ শ্বাসত বিদ্যমান

আমাৰ সম্মুখত অনেক সমস্যা, তাক নিৰাৱণ কৰা অতি প্ৰয়োজন। শাসনত সততা,

গ্লোক গোটেই দেশতে বিয়পি পৰিল—“অটল! তুমি হাজাৰ বছৰ ধৰি জীয়াই থাকা ” এই বাক্য কাশ্মীৰৰ পৰা কন্যাকুমাৰীলৈকে আৰু কচ্ছ উপসাগৰৰ পৰা দাৰ্জিলিঙৰ পাহাড়ীলৈকে হাওয়াত গুঞ্জিত হ'ল।

এই বিষয়ত অসমৰ সাংবাদিক লেখক শ্ৰী ৰূপম বৰুৱাৰ ২ জুন ১৯৯৬ চনত প্ৰকাশিত লেখনিখিনি লেখতলবলগীয়া। লেখনিৰ শীৰ্ষক ‘মেন অৱ দা মেচ’। কথাখিনি তেখেতৰ ভাষাৰেই ব্যক্ত কৰা হ'ল —

“নক লৈও হ'ব যোৱা সোম আৰু মঙ্গলবাৰে দুৰদৰ্শনৰ পৰ্দাত সংসদীয় বিতৰ্কৰ যিখন ৰুদ্ধশ্বাস নাটক প্ৰদৰ্শিত হ'ল তাৰ অপ্ৰতিদ্বন্দ্বী নায়কজন আছিল বিদায়ী প্ৰধানমন্ত্ৰী অটলবিহাৰী বাজপেয়ী স্বয়ং। এই কথা বাজপেয়ীৰ পৰম নিদ্দুক বা শত্ৰুৰে ও স্বীকাৰ নকৰি নোৱাৰিব। যদি এই অনুষ্ঠানক বৰ্ডকাপ ফুটবল বা ক্ৰিকেটৰ চৰম উত্তেজনা পূৰ্ণ খেল এখনৰ লগতো তুলনা কৰা যায় তেতিয়াও বাজপেয়ীয়েই হ'ব ‘মেন অৱ দা মেচ’। খেলত জয়-পৰাজয়তকৈয়ো ডাঙৰ কথা যে আদৰ্শ ক্ৰীড়া-নৈপুণ্যৰ প্ৰদৰ্শন, যুদ্ধ পৰাজিত সৈনিকে ও বীৰোচিত্ত অভিব্যক্তিৰ প্ৰদৰ্শনৰ গুণত জনতাৰ অন্তৰত লাভ কৰিব পাৰে বিজয়ীৰ আসন বাজপেয়ীয়ে যেন সেই সত্যকে প্ৰতিপন্ন কৰিলে। আস্থাৰ ভোট গ্ৰহণ সংক্ৰান্তত লোকসভাৰ বিতৰ্ক ৰণত অন্য ৰথী-মহাৰথী আৰু সৈন্য-সামন্তক প্ৰায় আচ্ছন্ন কৰি থ'লে সন্তৰৰ দেওনা পাৰ হোৱা এই অভিজ্ঞ ৰাজনীতিকে।

টেলিভিছ্যনৰ সমুখত লক্ষাধিক শ্ৰোতা-দৰ্শকক যেন অদৃশ্য ইংগিতেৰে তেওঁ কৈ গ'ল ‘এয়া তো মোৰ বিদায়ৰ নহয়, আগমণৰহে ক্ষণ’। বাজপেয়ীয়ে কি এলুৱা দ্বীপত নিৰ্বাসিত পৰাজিত নেপোলিয়নৰ দৰে শত্ৰুৱাহ ভেদি পুনৰ ৰাজমুকুট কাঢ়ি লোৱাৰ ভবিষ্যৎবাণী কৰিলে? সময়েহে এই কথা ক'ব।

১৯৯৬ চনৰ ৫ অক্টোবৰ, অটলজী লক্ষ্ণৌত উপস্থিত থকা কালত এই কথাখিনি ব্যক্ত কৰিছিল —“এইটো দুখৰ কথা, যিখন ৰাষ্ট্ৰ যাৰ হাজাৰ বছৰৰ পুৰণি ইতিহাসৰ লগত জড়িত নৈতিকতা, সাৰ্বজনিক জীৱনত শুচিতা আৰু কাৰ্যত পাবদৰ্শিতা বিদ্যমান; সেইখন দেশ আজি পৃথিৱীৰ স্ৰষ্ট দেশত অষ্টম /নবম স্থান পালে। এইখন দেশ যিখনে নিজৰ ধৰ্মশাস্ত্ৰ আৰু মানৱজীৱনৰ উচ্চতম আদৰ্শৰ বাবে গৰ্ব কৰে, সেইখন দেশৰ মূৰ স্ৰষ্ট মানুহবোৰে নত কৰিলে। যি সকলে দেশক এই শোচনীয় পৰিস্থিতিলৈ লৈ গ'ল তেওঁলোকক উপযুক্ত শাস্তি দিব লাগে। ভাৰতক এই সময়ছোৱাত নৈতিক স্বচ্ছতা সুনিশ্চিত কৰিবলৈ অতি আৱশ্যক হৈ পৰিছে, যাৰ বাবে ৰাষ্ট্ৰৰ ৰাজনেতাই দেশক ঠিক পথেদি পৰিচালিত কৰিব পাৰে।

অটলজী জননেতা, ৰাষ্ট্ৰ নেতাৰ ৰূপত সামান্য-সুৰক্ষা ব্যৱস্থাবে থাকিব বিচাৰে। দেশৰ বিশিষ্ট ব্যক্তিসকলৰ প্ৰয়োজনতকৈ বেছি সুৰক্ষা ব্যৱস্থা সম্বন্ধত তেওঁ কেবিনেট সচিবলৈ এখন চিঠি লিখিছিল - তাত তেওঁ উল্লেখ কৰিছিল, আমাৰ দেশত আধাডজন পূৰ্ব প্ৰধানমন্ত্ৰী আছে, তেওঁলোকৰ বাবে ইমান বেছি সুৰক্ষা ব্যৱস্থা কৰিব নালাগে যিটোৱে নেকি সাধাৰণ ৰাইজক কষ্ট

আৰু অসুবিধা দিয়ে। অটলজী এনেকুৱা এজন ৰাজনেতা যিজনে প্ৰয়োজনতকৈ বেছি দেখুৱা পচন্দ নকৰে বাস্তৱত তেওঁ সাধাৰণ মানুহৰ পৰা ইমান মৰম পাই সেইবাবে সকলোৰে লগত মিলিবলৈ বিচাৰে আৰু মিলিবলৈয়ো দিয়ে। তেওঁ নিবাসৰ অধিকাৰী সকলক কঠিন নিৰ্দেশ দি থৈছে কোনবাই যদি মোক লগ ধৰিবলৈ আহে, তেওঁক ততালিকে আহিব দিব লাগে।

লক্ষ্ণৌ নগৰ নিগমৰ ত্ৰিলোকনাথ সভাগৃহত উত্তৰ প্ৰদেশৰ হিন্দী সাহিত্য সম্মেলনে অটলজীক অভিনন্দন জনোৱাৰ লগতে হিন্দী সেৱাৰ বাবে সন্মানপত্ৰ, অক্ষবস্ত্ৰ আৰু ৰাজৰ্ষি পুৰুষোত্তমদাস টগুন ন্যাস তৰফৰ পৰা চেক এখন প্ৰদান কৰা হ'ল।

সাহিত্যকাৰৰ এই সভাত অটলজীয়ে নিজৰ বিচাৰ ব্যক্ত কৰি কলে—“কোনবা ৰাষ্ট্ৰক ভালকৈ জানিবৰ বাবে তাৰ ভাষাটো জনা প্ৰয়োজন। ভাষাই ৰাষ্ট্ৰৰ সংস্কৃতিক প্ৰস্তুত কৰে। হিন্দীক ৰাষ্ট্ৰভাষা কৰিবলৈ ৰাজৰ্ষি পুৰুষোত্তমদাস টগুনৰ যোগদান অতি অৱশ্যকীয়। তেওঁৰ জীৱন এক আদৰ্শ অক্ষিৰ জীৱন আছিল। সেইবাবে দেশৰ মানুহে, সমাজে তেওঁক ‘ৰাজৰ্ষি’ উপাধিৰে ভূষিত কৰিছিল।

মোৰ জীৱনত সৰু-ডাঙৰ বহুত সন্মান পাইছে, কিন্তু আজি ‘ৰাজৰ্ষি পুৰুষোত্তমদাস টগুন সন্মান’ পাই মোৰ মনত যি আত্মগৌৰৱৰ ভাৱনা জাগিল তাক ভাষাৰে বৰ্ণনা কৰিব নোৱাৰোঁ মই টগুনজীৰ নিচিনা কেতিয়াও হ'ব নোৱাৰোঁ, কিন্তু তেখেতক ওচৰৰ পৰা দেখাৰ সৌভাগ্য মোৰ হৈছিল।

অটলজী দেশৰ কোনবা ভাগত কিবা প্ৰাকৃতিক দুৰ্যোগে দেখা দিলে খুব দুঃখিত হয়। এই ক্ষেত্ৰত মানুহ আগত, ৰাজনেতা আৰু সকলোবিলাক পাছত মানবতাক কেতিয়াও নেদেখাৰ ভাও জুৰি বা নুশুনি থাকিব নোৱাৰে। আন্ধ্ৰপ্ৰদেশৰ পূৰ্ব তথা পশ্চিম গোদাবৰী জিলাত বিনাশকাৰী ধুমুহাত চাৰিশৰো অধিক মানুহ মৰিছিল আৰু প্ৰায় হাজাৰ লোক গৃহহীন হৈছিল। এই পৰিস্থিতিত অটলজীয়ে কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰক প্ৰভাৱিত এলাকালৈ গৈ সোনকালে প্ৰয়োজনীয় সাহায্য আগবঢ়াবলৈ কৈছিল আৰু দূৰ সঞ্চাৰ লাইন তথা ৰাস্তাবিলাক ভাল কৰিবলৈ জোৰ দিছিল। তেখেতে ব্যাপক ৰূপত হোৱা সংহাৰ আৰু বিনাশৰ বাবে আন্তৰিক শোকপ্ৰকাশ কৰিছিল।

ভাৰতীয় ৰাজনীতিৰ বৰিষ্ঠ নেতা বীজু পাটনায়কৰ মৃত্যুত তেওঁ সমবেদনা জনাই এনেদৰে কৈছিল—“যেতিয়াই সুযোগ পাইছিল, বীজু পাটনায়কে ৰাষ্ট্ৰৰ হিতৰ বাবে কাম কৰিছিল। শ্ৰী পাটনায়ক সত্যত থাকক বা বাহিৰতে থাকক, সকলো সময়তে তেখেতে এটা বিশিষ্ট স্থান বনাই থৈছিল। নিৰ্বাচনত পৰাজয়ক স্বচ্ছন্দে স্বীকাৰ কৰোঁতে কেতিয়াও সঙ্কোচ কৰা নাছিল আৰু বিজয়ী হৈয়ো নিজৰ মিত্ৰ আৰু সহযোগীৰ পৰা কেতিয়াও আতৰি যোৱা নাছিল। ৰাজনেতাৰ ওচৰত এই গুণটো খুব কম দেখা যায়। নিশ্চয় তেওঁৰ কোনবা শত্ৰু আছে কিন্তু মিত্ৰ বহুত বেছি, যিয়ে নেকি তেখেতৰ লোকপ্ৰিয়তাক প্ৰমাণ কৰে। তেওঁৰ মৃত্যুত ভাৰতীয় ৰাজনীতিত এটা যুগৰ সমাপ্ত হ'ল। তেওঁৰ আত্মাৰ শাস্তিৰ বাবে ভগৱানৰ ওচৰত প্ৰাৰ্থনা জনালোঁ।

স্বতন্ত্রতা স্বৰ্ণজয়ন্তী অবসৰত অটলজীয়ে দেশৰ হকে এটা সাৰ্থক সমালোচনা আগবঢ়াইছিল। সমালোচনাটো আছিল — ‘বৰ্তমান লোকতন্ত্ৰত ৰাষ্ট্ৰপতি প্ৰণালীৰ সাৰ্থকতা’। পাঁচ দশকৰ পৰা ভাৰতীয় লোকতন্ত্ৰ প্ৰণালীৰ সূচীত ক্ৰমশঃ অবনতি দেখা দিয়ে। সেইবাবে অটলজীৰ ইচ্ছা এই বিষয়ত ৰাষ্ট্ৰীয়স্তৰত সমালোচনা হব লাগে, যত নেকি লোকতন্ত্ৰৰ সূচী পদ্ধতি আৰু ৰাষ্ট্ৰপতি শাসন প্ৰণালীৰ উপৰত গভীৰতাৰে বিচাৰ বিবেচনা কৰা হয়। আজিৰ পৰা পাঁচ দশক আগত ব্ৰিটিশৰ পৰা পোৱা সংসদীয় লোকতন্ত্ৰৰ বৰ্তমান প্ৰণালী দিনক দিনে গভীৰ হৈ গৈ আছে। এতিয়া এই গভীৰ তৰ্ক মোটামুটি বন্ধ হৈ গৈ আছে আৰু এই তৰ্কৰ ঠাইত আখৰাৰ ৰূপ ধাৰণ কৰি আছে, য’ত নেকি হৈ-হাল্লা চিৎকাৰৰ বাহিৰে একো নাই। বৰ্তমান লোকতন্ত্ৰ প্ৰণালীয়ে ভাল বস্তু দিবলৈ অসমৰ্থ। সেইবাবে এতিয়া সময় হৈ গল দেশৰ এই প্ৰণালী বিলাক সোনকালে পৰিবৰ্তন কৰিব লাগে।

১৯৯৭ চনৰ এপ্ৰিল মাহৰ ২৭ তাৰিখ, লক্ষ্ণৌৰ বেগম হুজুৰত মহল পাৰ্ক শ্ৰী আশাৰাম বাপুৰ সংস্কৃত অটলজী এজন সামান্য ভক্তৰ দৰে তিনি ঘণ্টা একেৰাহে বহিলে। সংস্কৃত সমাপ্তিৰ পাছত বাপুজীয়ে অটলজীক কিবা কবলৈ কলে অটলজীয়ে অতি সংক্ষেপে তেওঁৰ বক্তব্য থলে—

সন্ত-মহাত্মাৰ দৰ্শন যেতিয়া শুভমূৰ্ত্ত আহে তেতিয়াহে হয়। পুণ্য যেতিয়া জাগ্ৰত হয় তেতিয়াহে তাৰ সামিধ্য লাভ কৰা যায়। মোৰ পূৰ্বজন্মৰ পুণ্যৰ বাবে আজি বাপুৰ দৰ্শন পালোঁ। তেওঁৰ লগত প্ৰথম দৰ্শন পানীপথত হৈছিল। গোটেই দেশ পৰিভ্ৰমণ কৰি জনগণৰ মনত ভাল সংস্কাৰ জগোৱাটো এনেকুৱা এটা পৰম ৰাষ্ট্ৰীয় কৰ্তব্য যিয়ে নেকি আমাৰ দেশখনক আজিলৈকে জীয়াই থৈছে। তাৰেই ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি আমি উজ্জ্বল ভবিষ্যতৰ সপোন দেখো আৰু তাক বাস্তৱত ৰূপায়িত কৰাৰ বাবে চেষ্টা কৰোঁ।

শ্ৰী বাজপেয়ীয়ে কয় - নতুনকৈ উঠি অহা প্ৰতিজন লৰা-ছোৱালীয়ে আমাৰ সংস্কৃতিৰ বিষয়ে, ধৰ্ম্মৰ বিষয়ে উচিত জ্ঞান লাভ কৰা আবশ্যক। পূজ্য বাপুজীয়ে গোটেই দেশ ভ্ৰমণ কৰি মানুহৰ মনত জাগৰণৰ জোৱাৰ আনিলে। তেওঁ “সৰ্বধৰ্ম্ম সমভাৱ”-ৰ শিক্ষা দিলে, ভাল-বেয়া বুজিবলৈ শিকালে। আমি যি প্ৰাচীন ৰীতি-নীতি সভ্যতাক পাহৰি পাপ কৰিব ওলাইছোঁ সেই ৰীতি-নীতি, সভ্যতা তেখেতে আকৌ আমাৰ চকুৰ আগত দাঙি ধৰিলে। অটলজীয়ে বাপুজীক অনুৰোধ কৰিলে তেখেতে যেন তেওঁৰ ওচৰতেই অটলজীক স্থান দিয়ে শ্ৰী বাপুয়ে কলে - চিন্তা নকৰিবা, সেয়ে হব।

অটলজী নিজৰ পাৰ্টিৰ অনুশাসনত থাকিবলৈ ভাল পায়। তেওঁৰ মতে সংগঠনত গুটীয় ৰাজনীতি হব নালাগে। তেনেহলে অনুশাসনহীনতা বাঢ়িব। যি মানুহে পাৰ্টিৰ মূল বিচাৰধাৰাৰ লগত সাম্যভাৱ নথয়, তেওঁলোকক পাৰ্টিত লগ কৰা ঠিক নহয়। অকল নিৰ্বাচনত জয়লাভ কৰাটোৱে একমাত্ৰ উদ্দেশ্য হব নালাগে। ৰাষ্ট্ৰ নিৰ্মাণৰ কথাটোহে আচল সংকল্প হব লাগে আৰু

সেই হিচাবে অগ্রসৰ হ'ব লাগে।”

অটলজী সম্প্ৰদায়বাদ আৰু জাতিবাদৰ বিৰোধী তেওঁৰ মতে কোনো জাতি বিশেষত জন্মগ্ৰহন কৰাৰ কাৰণে কোনবা অগ্রসৰ আৰু কোনোবা পিচপৰা নহয়। তেওঁ স্পষ্টকৈ কয়-ভাজপা দলিতৰ ন্যায়ৰ বাবে সদায় প্ৰতিজ্ঞাবদ্ধ। আৰু আমাৰ দলত দলিত সাংসদৰ সংখ্যাই সৰহ ১৯৯৭ চনৰ ২২ জানুৱাৰীত এখন সাংবাদিক মেলত তেখেতে স্পষ্ট কৈছিল—“ভাৰতীয় সমাজক সম্প্ৰদায়বাদ আৰু জাতিবাদৰ বিষয়ৰ পৰা আতৰত থ'ব লাগে নহলে ইয়াৰ পৰিণাম ভয়ঙ্কৰ হ'ব ”

১৯৯৭ চনৰ ২৪ ফ্ৰেব্ৰুৱাৰী, অটলজী মিডিয়াৰ ভূমিকা সম্বন্ধত নিজৰ বিচাৰ ব্যক্ত কৰি কয়—“আমাৰ কৰ্ত্তব্য আমি আমাৰ দেশৰ মিডিয়াক সুদৃঢ় কৰিব লাগে, সেইটো প্ৰিণ্ট মিডিয়া হওক আৰু ইলেকট্ৰনিক মিডিয়া (দৃশ্য শ্ৰব্য) হ'ক। বিদেশী মিডিয়া সকলক যিমান পাৰি বন্ধ কৰি দিব লাগে।”

কলিকাতাৰ ঐতিহাসিক বিগ্ৰেড পাৰ্কত ২২ মাৰ্চ ১৯৯৭ চনত এখন ডাঙৰ জন সভাৰ আয়োজন কৰা হ'ল জনসভাত লক্ষাধিক জন-সাধাৰণ মিলিত হৈছিল। চাৰিওফালে গেৰুৱা বঙৰ পতাকা উৰি আছে “ভাৰত মাতা কী জয়”, ‘বন্দে মাতৰম’, ‘সুভাষ চন্দ্ৰ বসু কী জয়’ জয়ধ্বনিৰে আকাশ বতাহ মুখৰিত কৰিলে। এই বিলাক কাৰ্যকলাপ দেখি কমিউনিস্ট নেতাসকলৰ মনত শঙ্কাই দেখা দিলে। ইমান ডাঙৰ ৰেলী হ'ব বুলি তেখেতসকলে আশা কৰা নাছিল। ৰেলীত অটলজীয়ে যেতিয়া সম্বোধিত কৰিব উঠিলে চাৰিও পিনে ‘অটল বিহাৰী জিন্দাবাদ,’ ‘অটল বিহাৰী জিন্দাবাদ’ জয়ধ্বনিৰে মুখৰিত হ'ল। অটলজীয়ে সমূহ ৰাইজক সম্বোধন কৰি কলে- কেন্দ্ৰত মুঠ তেৰটা দলৰ এখন অবসৰবাদী চৰকাৰ, যিসকলে নিৰ্বাচনত এজনে আন এজনক পিছফালৰ পৰা টানে, এজনে কৰে আৰু এজনৰ বিৰোধীতা ইমান ডাঙৰ ৰাষ্ট্ৰক অবসৰবাদী, দুজন-চাৰিজন সাংসদৰ দলে কেনেকৈ চলাব সকলোৰে ভাজপাক ইমান ভয় কৰে যে, যিকোনো প্ৰকাৰে ভাজপাক কেন্দ্ৰত চৰকাৰ গঠন কৰিব দিব নালাগে।

অটলজীয়ে কমিউনিস্টৰ বৰ্তমান কাৰ্যকলাপত ব্যঙ্গ কৰিলে। গঙ্গাজল বাটোৱাৰাৰ সম্বন্ধে কৰা চুক্তিক তেওঁ কটু আলোচনা কৰিলে তেওঁ কলে প্ৰতিবেশী বাঙলাদেশৰ লগত ভাল সম্বন্ধ ৰখা বিষয়টোৰ মই স্বাগত কৰোঁ। কিন্তু ৰাষ্ট্ৰৰ হিতক নেদেখা কৰি কৰা কোনো চুক্তিক মই আৰু জনতাই ও স্বীকাৰ নকৰে। এইখন ৰেলীৰ অধ্যক্ষতা পশ্চিমবঙ্গৰ ভাজপাৰ অধ্যক্ষ প্ৰোফেচাৰ বিষ্ণুকান্ত শাস্ত্ৰীয়ে কৰিছিল।

নেতাজী সুভাষ চন্দ্ৰ বসুৰ শতাব্দীবৰ্ষত শ্ৰদ্ধাঞ্জলি অৰ্পণ কৰি অটলজীয়ে কয়-তেওঁ সেৱা আৰু বলিদানৰ প্ৰতীক। কমিউনিস্টৰ মানুহে মহান ৰাষ্ট্ৰবাদী বসুক শ্ৰদ্ধাঞ্জলি দিবৰ বাবে আহি বহুত কিবা ক'ব, যিসকলে নেকি তেওঁক ফাসিস্ট বুলি উপহাস কৰিছিলে ক'ংগ্ৰেছে ও এই স্তুতিগানত নিজৰ সুৰ মিলাব যি সকলে নেকি তেওঁ স্বতন্ত্ৰ পথত চলিছিল বুলি পাৰ্টিৰ অধ্যক্ষ-



কলিকাতা ঢাকা বাছ পৰিবহণৰ উদ্বোধনী অনুষ্ঠানত
জ্যোতি বসু, শেখ হাসিনা আৰু নীতিশ কুমাৰ

পদৰ পৰা বহিষ্কাৰ কৰোঁতে
অকনো সঙ্কোচ কৰা
নাছিলে

বা তন্ত্ৰৰ ত
সুভাষচন্দ্ৰ বসুয়ে স্বতন্ত্ৰতা
আন্দোলনত সন্মিলিত হৈ
এটা ধাৰ্মিক দৰ্শনৰ বিচাৰ
কৰিছিল। তেখেতে
হিন্দুবাদক ভাৰতীয়তাৰ
অনিবাৰ্য অঙ্গ বুলি
মানিছিল। তেওঁ বাল গঙ্গা-
ধৰ তিলক আৰু ষষি
অৰবিন্দৰ ৰাষ্ট্ৰবন্দী
বিচাৰধাৰাৰ অনুগামী
আছিল।

আহক, এই
শতাব্দী-বৰ্ষত আমি সকলোৰে সুভাষচন্দ্ৰ বসুৰ সেই নবোদিত ৰাষ্ট্ৰৰ সপোন বাস্তৱত ৰূপায়িত
কৰিবৰ বাবে নিজক পুনঃ সমৰ্পিত কৰোঁ। যদি ভাৰতক জীৱিত ৰাখিব লাগে তেতিয়া হলে সেৱা
আৰু বলিদান কিনা সফল হ'ব নোৱাৰে।

১৯৯৭ চনৰ ৪ জুন, গোৱালিয়ৰ পূৰ্বমহাৰাণী শ্ৰী মঠী বিজয়াৰাজে সিদ্ধিয়াই অটলজী
নিৰ্মিত পুস্তকালয় আৰু লগতে পাঠাগাৰ লে'কাৰ্পণ কৰিলে। এই শুভ অবসৰত ৰাজমাতাই
কলে-অটলজীয়ে নিজৰ পিতৃৰ স্মৃতিত ল'ৰা-ছোৱালীৰ বাবে পুস্তকালয় সজায় অনুৰূপীয়
উদাহৰণ এটা দিলে। বিদ্যাদান সৰ্বোত্তম দান, অতঃ নিজৰ পৈতৃক নিবাসক পুস্তকালয়ৰ বাবে
সমৰ্পিত কৰি অটলজীয়ে দানৰ পৰম্পৰাক শক্তি দিলে।

এই অবসৰত অটলজীয়ে ৰাজমাতাক স্বাগত জনাই ক'লে এই ন্যাস অকল
পুস্তকালয়তে সীমিত নাথাকিব, শিক্ষা প্ৰসাৰৰ বাবে বিদ্যালয় আৰু শিক্ষণকেন্দ্ৰ ও স্থাপনা কৰিব।

ফাকখাবাদত ভাৰুপা নেতা ব্ৰহ্মদত্ত ত্ৰিবেদীজীক হত্যা কৰা হ'ল। তেওঁৰ ঘৰৰ ওচৰতেই
এন্ধাৰৰ সুযোগ লৈ ঘটনাটো সংঘটিত কৰা হ'ল। এই ঘটনাত পাৰ্টিৰ সকলোৰ হাঁচ আহিল
অটলজী তথা অন্য ৰাষ্ট্ৰীয় নেতাসকল তেখেতৰ অন্ত্যেষ্টিক্ৰিয়াত গৈ শ্ৰদ্ধা জ্ঞাপন কৰিলে।
দিনজন্তু নেতাক শ্ৰদ্ধাঞ্জলি অৰ্পণ কৰোঁতে তেওঁ ক'লে-“ত্ৰিবেদীজী আমাৰ পাৰ্টিৰ কুন্ত আছিল
তেওঁৰ মহাপ্ৰয়াণত ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিৰ অপূৰণীয় ক্ষতি হ'ল স্বভাৱত বিনম্ৰ, আচৰণত

কথাখিনি মনত ৰাখি টপুজীয়ে খুব কম সময়ৰ ভিতৰতে স্মৃতিস্তম্ভটো বনাই দিলে। ইয়াৰ লোকাৰ্পণৰ দিনা অটলজী বহুত সময় ভাব বিহ্বল হৈ কিছু সময় মৌন হৈ থাকি পূৰণা কথা ৰোমন্থন কৰিছিল। কিয়নো পণ্ডিত দীনদয়ালজীয়ে তেওঁক আঙুলিত ধৰি ৰাজনীতি ক্ষেত্ৰত চলিবলৈ শিকাইছিল।

দেশ স্বতন্ত্ৰ হোৱাৰ পাছত কংগ্ৰেছে অকল পণ্ডিত নেহেৰুৰ নাম উজ্জ্বল হৈ থকাৰ বাবে দেশৰ প্ৰান্ত-প্ৰান্তত তেওঁৰ নামলৈ শিক্ষা সংস্থাৰ নামকৰণ কৰিলে, কিন্তু ক্ৰান্তিবীৰ সুভাষ বসুৰ নাম লওতে অপৰাগ হল। সেইবাবে অটলজীয়ে নিজৰ ক্ষেত্ৰত নেতাজী সুভাষ চন্দ্ৰ বসুৰ নামলৈ কন্যা মহাবিদ্যালয় স্থাপন কৰি ৰাষ্ট্ৰৰ মহান সুপুত্ৰৰ প্ৰতি প্ৰকৃত শ্ৰদ্ধাঞ্জলি জ্ঞাপন কৰিলে।

মাত্ৰ ১০০ দিনৰ সময়ছোৱাত আলীগঞ্জ ক্ষেত্ৰত নিৰ্মিত হোৱা এই কন্যা মহাবিদ্যালয়ত পঢ়াশুনাও আৰম্ভ হৈ গ'ল। লোকাৰ্পণ সমাৰোহত অটলজীয়ে কৈছিল- এই মহাবিদ্যালয়খনে এই ঠাইৰ নাগৰিকৰ চাহিদা পূৰণ কৰিব। এই ঠাইত আগতে কোনো মহাবিদ্যালয় নাছিল। ছাত্ৰীবোৰ পঢ়িবৰ বাবে বহুদূৰলৈ যাব লগা হৈছিল। আভিভাৱকে সেইবাবে বহুতো অসুবিধাৰ সম্মুখীন হৈছিল। মই নিজৰ সীমিত সাধন লৈ এই সৰু প্ৰয়াস কৰিনো।

ইয়াৰ প্ৰায় এক সপ্তাহ পাছত অটলজীয়ে ৰাজাজীপুৰম ক্ষেত্ৰৰ ৰাজকীয় কন্যা মহাবিদ্যালয় ও জনসাধাৰণৰ সেৱাত লোকাৰ্পণ কৰিলে।

ভাৰতপাৰ ৰাষ্ট্ৰীয় যুৱ মৰ্চা ৰাষ্ট্ৰীয় আধিবেশন সামৰণি ভাষণত অটলজীয়ে যুৱক সকলক সম্বোধিত কৰি কৈছিল- “বোফৰ্স মামলাক যেনেকৈ দবাই থোৱা হৈছে, তাতে স্পষ্ট হৈ গুজৰাল চৰকাৰে নিজৰ অস্তিত্বৰ বিনিময়ত কংগ্ৰেছৰ এই ঘোঁটালোক এৰাই চলিছে, নহলে কি কাৰণত বোফৰ্স ঘোঁটালত চি বি আইক তদন্তৰ বাবে অনুমতি দিয়া নাই? তালকটোৰা স্টেডিয়ামত বিশাল জন সমূহৰ মাজত তেওঁ ভাৰতপাৰ যুৱ মৰ্চাৰ কাৰ্যকৰ্ত্তাক আহ্বান কৰি ক'লে - তেওঁলোক সকলোৱে মিলি আপৰাধ আৰু এণ্টাচাৰৰ বিৰুদ্ধে যুজিব লাগিব। ১৩ টা দলৰ চৰকাৰৰ প্ৰতি ৰাইজৰ বিতৃষ্ণা আহি গৈছে দেশৰ জনতাই সেইবিলাক কাৰ্যকলাপ কেতিয়াও সহ্য কৰিব নোৱাৰে।

অটলজীৰ কাব্যকৃতি “মেৰী ইকায়ৰন কবিতায়ে” দুই বছৰৰ ভিতৰতে ছটা সংস্কৰণ ওলায় অপাৰ সাফল্য পোৱাৰ পাছত সংগীত নিৰ্দেশক ড° মধুলতাজীয়ে এটা অডিও কেচেট তৈয়াৰ কৰিলে। কেচেটৰ শীৰ্ষক আছিল “জংগ ন হোনে দেংগে”। এই কেচেট “জয়ভাৰত” নামৰ অডিও কোম্পানীয়ে বনালে, প্ৰসিদ্ধ সংগীতজ্ঞ শ্ৰীমতী সুমতি মুটাটকৰে কেচেটটো বিমোচন কৰিলে, সেই অবসৰত ৰাজধানীৰ অনেক নামকৰা সাহিত্যিক, শিল্পীৰ লগত অটলজীও উপস্থিত আছিল।

স্বতন্ত্ৰতা দিৱসৰ স্বৰ্ণজয়ন্তী সমাৰোহ ১৭ আগষ্ট ১৯৯৭ চনত নতুন দিল্লীত অনুষ্ঠিত হৈছিল। সমাৰোহত সুপ্ৰসিদ্ধ কথক নৃত্যাঙ্গনা উমা শৰ্ম্মাই নৃত্য প্ৰস্তুত কৰিছিলে এই অবসৰত

তেওঁ কৈফী আজমী, শ্রীমতি শীলা গুজৰাল, নীৰজ আৰু অটলজীৰ কাব্য ৰচনাৰ ওপৰত কথক নৃত্য শৈলী প্ৰস্তুত কৰিলে। অটলজীৰ যিখন কাব্য ৰচনাৰ ওপৰত তেওঁ নৃত্য প্ৰস্তুত কৰিছিলে সেইখনৰ শীৰ্ষক আছিল-“মৌত সে ঠন গই” এই কাৰ্যক্ৰমতো বহুত সংখ্যক সংস্কৃতি - প্ৰেমী ৰাইজৰ লগত অটলজী অয়ং উপস্থিত আছিল।

উত্তৰ প্ৰদেশ বিধান সভাৰ নিৰ্বাচনত ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিয়ে সৰ্বাধিক আসন পাইছিল। কিন্তু এটা ৰাজনীতিক পাৰ্টিৰ এজেন্টৰ ৰূপত কাম কৰা ৰাজ্যপাল শ্ৰী ৰমেশ ভাণ্ডাৰীয়ে ভাজপা বিধান মণ্ডল দলৰ নেতাক চৰকাৰ গঠন কৰিবলৈ নিমন্ত্ৰণ নিদিলে। সংবিধানৰ মৰ্যাদা নমুনা ৰাজ্যপালক কেন্দ্ৰৰ তেৰটা পাৰ্টিৰ মিলিত চৰকাৰৰ পৰা সমৰ্থন পাইছিল।

অটলজীয়ে চাণক্যনীতি গভীৰভাৱে অধ্যয়ন কৰে। তেওঁ এনেকুৱা এটা আশ্চৰ্য ফৰ্মুলা উলিয়ালে ভাজপা আৰু বসপা (বহুজন সমাজ পাৰ্টি) মিলি চৰকাৰ বনাবলৈ প্ৰস্তুত হ'ল। ফৰ্মুলা মতে সাব্যস্ত কৰা হ'ল, ভাজপা আৰু বসপা দুয়ো বিধানমণ্ডল দলৰ নেতাই ছ-মাহ ছ-মাহ মুখ্যমন্ত্ৰী পদত থাকিব। এ বছৰৰ পাছত পুনঃ সমীক্ষা কৰি ভবিষ্যতৰ বাবে নিৰ্ণয় কৰা যাব। প্ৰথম ছয়-মাহ বসপাৰ নেত্ৰী সুশ্ৰী মায়াবতী মুখ্যমন্ত্ৰী হ'ব, আৰু পিছৰ ছয়-মাহ শ্ৰী কল্যাণ সিঙে মুখ্যমন্ত্ৰী হ'ব।

এই ফৰ্মুলাটো এনেকুৱাকৈ গোপনে তৈয়াৰ কৰা হ'ল যে কোনেও গম নাপালে। ইঠাতে ভাজপা আৰু বসপাই মিলি ৰাজ্যপালৰ আগত প্ৰস্তাবটো আগবঢ়ালে। ৰাজ্যপালে উপায় নাপায় চৰকাৰ গঠন কৰিবলৈ অনুমতি দিলে। ছয় মাহ সুশ্ৰী মায়াবতী সংযুক্ত মন্ত্ৰী মণ্ডলৰ মুখ্যমন্ত্ৰী হ'ল। ছয় মাহ যোৱাৰ পাছত পুন গণ্ডগোল দেখা দিলে। ৰাজ্যপালে কল্যাণ সিঙক নিজৰ চৰকাৰৰ বহুমত সিদ্ধ কৰিবৰ বাবে কেৱল ৪৮ ঘণ্টাৰ সময় দিলে। ভাৰতীয় গণতন্ত্ৰৰ ইতিহাসত কিজানি কাৰোবাক ইমান কম সময় দিয়া নাছিল।

শেষত সদনত বহুত গণ্ডগোলৰ মাজত মতদান কৰোৱা হ'ল, মুখ্যমন্ত্ৰী কল্যাণ সিঙৰ পক্ষত ২২২ মত আৰু বিৰোধী পক্ষই একোৰে মত নাপালে। এনেকুৱা হোৱা সত্ত্বেও কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰে মহামহিম ৰাষ্ট্ৰপতিৰ ওচৰত উত্তৰ প্ৰদেশৰ চৰকাৰ ভঙ্গ কৰি ৰাষ্ট্ৰপতি শাসন লগাবলৈ কলে। পত্ৰ পত্ৰিকাত খবৰ ওলাল- 'উত্তৰ প্ৰদেশত ৰাষ্ট্ৰপতি শাসন লগাই চৰকাৰ ভঙ্গ কৰা হ'ল'।

ইফালে ৰাষ্ট্ৰপতি মহোদয়ে এতিয়ালৈকে স্বীকৃতি দিয়াই নাই। মিডিয়াই খবৰ খেদাকৈ এনেকুৱা দায়িত্বহীন কাম এটা কৰিলে। কেন্দ্ৰীয় মন্ত্ৰী পৰিষদে ৰাষ্ট্ৰপতি শ্ৰীকে, আৰ. নাৰায়ণনৰ ওচৰত পুনঃ বিচাৰৰ বাবে আবেদন আকৌ পঠালে। কিন্তু বহুত চিন্তাৰ পাছত ৰাষ্ট্ৰপতিয়ে আবেদনখন নাকচ কৰিলে, দেশ-বিদেশৰ সকলোৱে ৰাষ্ট্ৰপতিৰ এই নিৰ্ণয়ক আদৰিলে।

শেষত কেন্দ্ৰীয় মন্ত্ৰীমণ্ডল চুপ থাকিবলৈ বাধ্য হ'ল। কল্যাণ সিঙৰ নেতৃত্বত ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টিয়ে চৰকাৰ বনালে।

এই ঘটনা চলি থকা সময়ত অটলজী হঠাৎ বিদেশত অছিলে তাত ধৰি তেওঁ সুত্ৰধাৰক কাম কৰিছিল। সময় সময়ে ফোন যোগে ৰাষ্ট্ৰপতি আৰু প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ লগত সাক্ষাৎ কৰিছিল। পাৰ্টী অধ্যক্ষ শ্ৰী-লালকৃষ্ণ আডবাণী উপস্থিত অছিলেই। সেইবাবে সকলো কাম ঠিকেই হৈ গ'ল।

(২০)

অটলজীৰ উচ্চতা কমো নহয়, বেছিও নহয়, মজলীয়া, স্বাস্থ্য কঠিনো নহয়, লক্কো নহয় মধ্যমীয়া। মূৰৰ চুলি প্ৰায় বগা। হুতি, কুৰ্তা, জামা কেট, ভৰিত নাগৰা জোতা কেতিয়াবা চেণ্ডেল পিন্ধে। জামা কালো উলৰ কেট আৰু গৰম চান্দৰ বহুতাৰ কৰে। চুট-পেণ্ট, টাই আদি পিন্ধোতে তেখেতক কম মানুহে দেখিছে। বিদেশত গলে বহুগৰাকী কেট লেণ্ট, কেতিয়াবা লফাৰী পিন্ধে। বৰষুণ আগতে বিদেশত গৈ চাহেবী কাৰোত চুট কেট, টাই পিন্ধিছিল। ঘৰতে ধূত কুৰ্তাই ব্যৱহাৰ কৰে।

লাহে লাহে কোঁৱা, খোজতৰা, অঁতাৰ, চৰিত, চাহ খোৱা আদি কোনো কাম হৰ-হৰকৈ কৰি তেওঁ ভাল বাপায়। এনেকি লেখা পৰ্যন্ত লাহে লাহে কৰে। গোটেই দিন কামত থাকে, কিন্তু বাস্তৱত ধৰ্মিক ও বাস্তৱ নেদেখুৱায়। সময় সহজতা আৰু সৰলতা বিদ্যমান।

অটলজী আৰু ভাৰতীয় ৰাজনীতিত সুৰ্গৰ বাবে উজ্জ্বল। দেশৰ জনতাৰ আঁজি প্ৰিয় নেতা। অন্যসকলো ৰাজনেতাই তেওঁৰ শালীনতা, বাক সংযম আৰু কুশল ব্যৱহাৰৰ বাবে ভাল পায়। দেশৰ বাহিৰে বিদেশৰ ৰাজনেতা আৰু বিভিন্ন ব্যক্তিয়ে তেওঁক বহুত সমাদৰ কৰে।

গোৱালিয়ৰ নাৰায়ণ বাবু তেওঁৰ প্ৰতি অটলজীৰ অটুট শ্ৰদ্ধা কিয়নো তেখেতে অটলজীক ৰাষ্ট্ৰীয় স্বয়ং সেৱক সংঘৰ সদস্য কৰাইছিল।

কানপুৰৰ ডী. এ. বী. কলেজৰ প্ৰফেচৰ মদন মোহন পাণ্ডেজী অটলজীৰ এজন আদৰ্শ গুৰু। প্ৰয়োজনীয় কিতাপ আদি দিয়াৰ উপৰি অধ্যয়ন বিৱৰক কিবা কঠিন প্ৰশ্ন হলে তেওঁ সমাধান কৰি দিছিল। তেওঁৰ দূৱাৰ অটলজীৰ বাবে সদায়



দুলভ চাট্ৰ, পাক্কা চাহেবা পাচাকত

খোলা থাকিব।

ড° শ্যামাপ্রসাদ মুখাৰ্জী আৰু পণ্ডিত দীনদয়াল উপাধ্যায়ৰ সান্নিধ্যত অটলজীয়ে বহুত কথা শিকিব পাৰিছিল।

সাহিত্যৰ ক্ষেত্ৰত অটলজীয়ে বাংলাৰ কবি শৰৎচন্দ্ৰ আৰু মুন্সী প্ৰেমচন্দ্ৰৰ ৰচনা পঢ়ি খুব ভাল পায়।

প্ৰতিষ্ঠিত পত্ৰকাৰ শ্ৰী দীননাথ মিশ্ৰই “আৰ-পাৰ” নামক এবিধ প্ৰবন্ধ প্ৰধানমন্ত্ৰী অটলজীৰ চিনে-গীত প্ৰেমৰ ৰম্যক লেখনি ২২ মে, ১৯৯৬ চনত, দৈনিক জাগৰণ পত্ৰিকাত লেখিছিল। তেওঁৰ লিখনিৰ মতে - কোনবা মানুহক জানিবৰ বাবে তেওঁৰ বন্ধু বান্ধব, ওচৰৰ মানুহ, কি ধৰণৰ কিতাপ পঢ়ে আৰু কি ধৰণৰ গান (ফিল্মী, ফিল্মৰ বাহিৰৰ) ভাল পাই, তাৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি মানুহজনৰ প্ৰতি ধাৰণা এটা কৰিব পাৰি। ২১ মে’ত আকাশবাণীৰ এফ এম চেনেলত অটলজীৰ পছন্দ ফিল্ম গান শুনি তেখেতক বুজিবলৈ এটা সুযোগ পোৱা গ’ল। প্ৰতিটো গীত বজোৱাৰ আগতে গানটো ভাল পোৱাৰ কাৰণ আৰু তেখেতৰ দুই এটা টিমনী লোৱা হৈছিল।

প্ৰথম গানটো প্ৰেম-প্ৰসঙ্গৰ হলেও ৰাজনীতি ক্ষেত্ৰতো উপযোগী। গানৰ শীৰ্ষক ‘জো বাদা কিয়া বো নিভানা পঢ়েগা’, ‘তাজমহল’ ফিল্মৰ গীত। পিছৰ গীতটো ফিল্ম ‘সফৰ’ শীৰ্ষক ‘জিন্দগী কা সফৰ, যে কৈসা সফৰ’ সংসদত বিশ্বাসমত পোৱাৰ বাবে মোকাবিলা কৰা ৰাজপেয়ীৰ জীৱন যাত্ৰাৰ বিভিন্নতা এই গানৰ মাজেদি প্ৰতিফলিত হয়। ‘বন্দিনী’ ফিল্মৰ এই গানটো ‘মেৰে সাজন হে উস পাৰ’ আৰু ‘ভাবী’ ফিল্মৰ গান ‘চল উড় জা বে পক্ষী কি অব যে দেশ হুবা বেগানা।’ দুয়োটা গানেই তেওঁৰ আত্মাৰ পীড়ক ব্যক্ত কৰে। পুনঃ শৃংগাৰ মিলন-বিবহত অভিভূত কৰিব পৰা ‘হম দুনো’ ফিল্মৰ গানটো শুনোৱা হয়। গানৰ শীৰ্ষক ‘অভী না জাউ ছুড়কৰ কি দিল অভী ভবা নহী।’ নিজৰ পছন্দৰ আৰু এটা গান ‘তীসবী কসম’ ফিল্মৰ পৰা লোৱা হৈছে। গানৰ শীৰ্ষক ‘সাজন বে সুট মত বলো।’ দেশভক্তিৰ লগত ওতপ্ৰোত গীত ‘মেৰে দেশ কী ধৰতী সোনা উগলে’ ফিল্ম ‘উপকাৰ’ৰ পৰা ১৯৬২ চনত হিন্দুস্থান-চীন যুদ্ধৰ পাছত



প্ৰাতঃ ভ্ৰমণ কৰোঁতে

আনন্দ উপভোগ কৰে।

মুম্বাইৰ পৰা প্ৰকাশিত পত্ৰিকা 'নবনীত'-ৰ দেওয়ালী সংখ্যাৰ এটা সাক্ষাৎকাৰত অটলজীক সোধা হৈছিল- 'আপোনাৰ মনোকামনা কি?' সংক্ষিপ্ত উত্তৰ- 'হাঁহি হাঁহি মৰা আৰু মৰি মৰি হাঁহা, এইটোৱেই মোৰ মনোকামনা।'

লক্ষ্মী-সীতাপুৰ ৰাস্তাত অলপ দূৰ গৈ এটা সৰু বেয়া ৰাস্তাত অটলজীৰ গাড়ী গতিৰেগে কমায় সোমালে। তাতে এজন হৰিজন ভায়ে তেওঁক ভোজনৰ বাবে নিমন্ত্ৰণ কৰিছে। গাওঁ পোওতে পোওতে বেয়াকৈ বৰষুণ পৰিলে। চাৰিও ফালে পানী উপচি পৰিল। বোকাৰ বাবে গাড়ী আৰু আগবাঢ়িব নোৱাৰিলে। পৰিস্থিতি দেখি ধুতি কোচায় অটলজী লাহেকৈ গাড়ীৰ পৰা নামি বন্ধুৰ ঘৰৰ ফালে আগবাঢ়িলে।

নিমন্ত্ৰণ প্ৰত্যাখান নকৰি অটলজী যি পৰিস্থিতিত বন্ধুৰ ঘৰ পালে তেওঁৰ অৱস্থা দেখি বন্ধুৰ চকু পানী ওলাই আহিল। তেওঁ একো কৰ নোৱাৰি অতি ভাবুক হৈ অটলজীৰ ভৰিত সাবটি ধৰিলে। অটলজীয়ে তেওঁক বুকুত সাবটি ললে। তেওঁৰ সৰলতা, নিস্পৃহভাৱ, এনেকুৱা সংবেদনা অতি বিৰল।

বন্ধুয়ে অটলজীৰ বাবে যোগাৰ কৰা বিভিন্ন ধৰণৰ মুখবোচক আহাৰ পৰিবেশন কৰিলে। অটলজীও তৃপ্তি সহকাৰে আহাৰ ভোজন কৰি আতিথ্য ৰক্ষা কৰিলে।

অটলজীৰ জীৱনত স্মৰণীয় ঘটনা বহুতেই, কিন্তু তাৰ মাজত দুটা ঘটনা মনত কৰি আজিও গভীৰ সংবেদনা ব্যক্ত কৰি থাকে।

প্ৰথম ঘটনা নিৰ্বাচন ক্ষেত্ৰ বলৰামপুৰত এজন কাৰ্যকৰ্তাক কোনবাই গুলি কৰিলে। গুলি গৈ বুকুৰ হাড়ৰ মাজত সোমাই পৰিল। অৱস্থা শোচনীয় দেখি অপাৰেশ্যনৰ বাবে নতুন দিল্লীলৈ অনা হ'ল। তেওঁক চোৱাৰ বাবে অটলজী নাৰ্চিং হোমত গ'ল। ইতিমধ্যে অপাৰেশ্যন কৰি মানুহজন অলপ ছট্ অহাৰ পথত। তেওঁক লগ ধৰি আহোতে অটলজীয়ে কলে- "চোৱা, হিম্মত নেহেৰুৱাবা।" মানুহজনে উত্তৰ দিলে- "আপোনাৰ পিছত যি সকলে ঘূৰে তেওঁলোকে কেতিয়াবা হিম্মত হেৰায় নেকি?" এই কথা শুনি অটলজীৰ চকুৰ পানী ওলাল। মৃত্যুৰ কবলত পৰা কাৰ্যকৰ্তায় কিমান দৃঢ়বিশ্বাসৰে কথাখিনি কয় আছে! এনেকুৱা কাৰ্যকৰ্তা থকা দলক কোনবাই পৰাস্ত কৰিব পৰে নেকি!

দ্বিতীয় ঘটনা নিৰ্বাচনৰ সময়তেই অটলজী চিমলালৈ গৈছিল। বহুত ঠাণ্ডা পৰিছিল। সভা চলি থাকোতে বৰষুণ পৰা আৰম্ভ কৰিলে। ঠাণ্ডা বতাহো চলিব ধৰিলে। অটলজী ঠাণ্ডাতে কঁপি আছিল ঠিক তেতিয়াই এজন মানুহ ভিৰ ঠেলি আগলৈ আহি তেওঁৰ মাফলাখন খুলি অটলজীৰ ডিঙিত মেৰুৱাই দিলে। এই বিষয়ে মানুহজনে এটা শব্দও নকৈ আকৌ ভিৰৰ মাজত সোমাই পৰিল। অটলজীয়ে মানুহজনক 'ধন্যবাদ' বুলি কবলৈ সময় নাপালে। যেতিয়াই এই মৰমৰ মাফলাখন তেওঁ পিন্ধে তেতিয়াই তেওঁৰ অনুভৱ হয় কোটি কোটি জনতাই যেন মৰমৰে

তেওঁক সৱটি ধৰি আছে।

জনতাৰ মৰম আৰু কাৰ্যকৰ্তাৰ বিশ্বাস প্ৰকট হোৱা এই দুটা ক্ষণ তেওঁৰ বাবে অবিস্মৰণীয়।

অটলজীৰ ৰাজনীতি ক্ষেত্ৰত নিজৰ সিদ্ধান্ত, বিচাৰ, আদৰ্শ আৰু মান্যতাৰ প্ৰতি অটল তেওঁক কোনো প্ৰলোভনে টলাব নোৱাৰে আৰু ইমান ব্যস্ততা সত্ত্বেও সাহিত্য ক্ষেত্ৰত তেওঁ বিচৰণ কৰি থাকে। দৈনন্দিন ভাষণ দিয়াটো লাগি থাকেই। তেওঁ নিজৰ ভাষণ নিজেই তৈয়াৰ কৰে, বেলেগে লিখা ভাষণ তেওঁ পঢ়ি ভাল নাপায়। সেইবাবে অটল হোৱাৰ মতলব নিজৰ চেষ্টাত লিখা আৰু কোৱা

অটলজীৰ আহল-বহল ডাঙৰ পৰিয়াল গোৱালিয়ৰত আছে। ডাঙৰ ককায়েক পণ্ডিত অবধ বিহাৰী বাজপেয়ী গোৱালিয়ৰৰ ছিন্দে কী ছাওনী ত যিটো ঘৰত আছিল সেইটো দেখিলে অটল হোৱাৰ মতলব গম পোৱা যায়। সাধাৰণ পকি ঘৰ, মজিয়াত সাধাৰণ পকি। তেওঁ পৰিয়ালৰ কাৰণে একো নকৰে আৰু পৰিয়ালেও তেওঁৰ পৰা একো নিবিচাৰে।

ডাঙৰ ককায়েকক ৰাজ্যসভা নহলেও বিধান সভাৰ সদস্য কৰিব পাৰিলেহেঁতেন। কিন্তু এনেকুৱা বিচাৰ কেতিয়াও অটলজীয়ে ভবা নাই আৰু ককায়েকও এনেকুৱা কামৰ পক্ষপাতী নহয়।

গোৱালিয়ৰত তেওঁৰ ভনী থাকে। বাংলাদেশৰ সংঘৰ্ষৰ সময়ছোৱাত তেওঁক দিল্লী জেলত ৰখা হৈছিল। তেওঁৰ নিজৰ ঘৰ অতি সাধাৰণ, দুই চাৰিখন চকি, এখন ডাঙৰ চকি এই মিলাই ড্ৰইংকম। ঘৰত ফোনো নাই। ভাতু অটলৰ ৰাষ্ট্ৰভক্তিৰ প্ৰতি তেওঁ প্ৰভাৱিত। অটল হোৱাৰ এয়ে মতলব।

প্ৰায় নেতাৰ ভাই-ভতিজা কিবা নহয় কিবা এটা হয়। কোনবা সাংসদ, কোনবা বিধায়ক, নহয় নিগমৰ অধ্যক্ষ হয়। তেখেতসকলৰ কেইবাখনো গাড়ী, শীত-তাপ নিয়ন্ত্ৰিত ঘৰ, প্ৰতি কোঠাতে ফোন। এই দুটা পৰিবেশ তুলনা কৰিলে অটল হোৱাৰ মতলব গম পোৱা যায়।

অটলজীৰ নিজৰ বুলিবলৈ ঘৰ এটা ও নাই। গোৱালিয়ৰৰ ঘৰটো তেওঁ পুস্তকালয় আৰু পাঠাগাৰ কৰি দিছে। এতিয়া মূৰ গুজিবলৈ তেওঁৰ ওচৰত কোঠা এটালৈকো নাই। এতিয়া আন নেতা সকললৈ চালে দেখা যায়, তেওঁলোকৰ এটা নহয় কেইবাটাও দালান আছে আৰু সেইবিলাকো কেইবাটাও মহলাৰ লিফ্টযুক্ত। একো নোহোৱাটোৱে অটলজীৰ মতলব নেকি।

আজিও তেখেত খাঁটি স্বয়ং সেৱক। ঘৰত বহুত মানুহ থাকিলেও তেখেতৰ পানী পিয়াহ লাগিলে কাকো নকয় নিজে গৈ গিলাচেৰে পানী লৈ খায়। নিজৰ কাপোৰ-কানি নিজেই ধোৱে আৰু ইস্ত্রী কৰি ভাল পায়। বাহিৰত গলে নিজৰ ব্ৰীফকেস নিজে কঢ়িয়াই নিয়ে। সম্ভৱ দশক পাৰ হোৱা অটলজীৰ এতিয়াৰ কথা অলপ বেলেগ।

অটলজী যিকোনো বিষয়ত সামূহিক নিৰ্ণয়ক প্ৰাথমিকতা দিয়ে। পাৰ্টি-সংগঠন আৰু

অনুশাসনক সকলোৰে ওপৰত বুলি ভাবে পাৰ্টি অধ্যক্ষ যোশীজী বা আডবাণীজীয়ে হ'উক, অটলজী পাৰ্টি অধ্যক্ষৰ নিৰ্দেশ সদায় স্বীকাৰ কৰে। তেখেতে আজিও নিজক স্বয়ং সেৱক আৰু কাৰ্যকৰ্তা বুলি মানে

তেখেতে কেতিয়াও প্ৰেছকনফাৰেন্সত সংবাদদাতাৰ লগত মনোমালিন্যৰ সৃষ্টি নকৰে। প্ৰেছ কনফাৰেন্স আৰু সাক্ষাৎকাৰৰ সময়ত তেখেতে যিমান সহজ হৈ উত্তৰ দিয়ে, কি জানি বেলেগ কোনো নেতাই ইমান সহজ হৈ উত্তৰ দিব নোৱাৰে। দুৰদৰ্শনৰ সাক্ষাৎকাৰত যেতিয়া তেওঁক ওলট - পালট প্ৰশ্ন সোধা হয় তেতিয়া তেওঁৰ সাহিত্যিক পটতাই কথাখিনি অলপ ব্যঙ্গ কৰি আৰু বিনোদপূৰ্ণ চণ্ডত চতুৰতাৰে উত্তৰবোৰ সহজে দি গৈ থাকে। তেখেতে কটু কথাতো মিঠা শব্দ প্ৰয়োগ কৰে। সেইবাবে তেওঁৰ ভাষণ শৈলীও ভাৰতৰ কোটি কোটি জনতাৰ বাবে প্ৰিয়।

সপ্তাহ জোৰা প্ৰদেশত নিৰ্বাচনৰ বাবে বিভিন্ন ধৰণৰ ব্যস্ততা কেতিয়াবা বিমানত-যাত্ৰা, ৰেলযাত্ৰা, কাৰ যাত্ৰা আদি। দিনত ঠায়ে ঠায়ে গৈ ভাষণ দিয়া, ৰাতি দলৰ নেতা সকলৰ লগত বহি আলোচনা কৰা। তাৰ মাজত সময় পালে কিতাপ পত্ৰ আদি পঢ়া। ৰাজনীতিৰ ইমান ব্যস্ততাৰ মাজতো সাহিত্যৰ আলোচনা কৰোতে তেওঁ বিৰক্তি বোধ নকৰে। এই বোৰতো তেওঁ অটল হৈ থাকে।

তেওঁৰ দৰে অটলৰ বাইদেউ ও সৰল জীৱন-যাপন কৰি ভাল পায়। সাময়িক শক্তিৰ অপব্যৱহাৰ কেতিয়াও নকৰে। এবাৰ দেৱালীৰ দিনত ৰন্ধনশালাৰ কামৰ মাজতে গেচ-চিলিঙাৰ শেষ হৈ গ'ল। ইচ্ছা কৰিলে লগে লগে আৰু এটা গেচ অনাব পাৰে। কিন্তু সেইটো নকৰি বজাৰৰ পৰা কেৰোচিন তেল অনাই স্টোভৰে ৰন্ধাৰ কাম শেষ কৰিলে। সাধাৰণতে তেওঁলোকে বাছত আৰু ৰেলৰ সাধাৰণ কোঠাতে যাত্ৰা কৰে।

আনফালে এজন মুখ্যমন্ত্ৰীয়ে পৰিয়ালৰ লগতে কুস্তম্ভান আৰু কানপুৰত গৈ গঙ্গা-স্নান কৰিবৰ বাবে হেলিকাপ্টৰ প্ৰয়োগ কৰিছিল। তাতেই তুলনা কৰিব পাৰি, তেখেত যে সকলোতে অটল।

বিৰোধী পক্ষৰ প্ৰতি তেওঁ কেতিয়াও কটুভাষা প্ৰয়োগ নকৰে। কোনোবাই তেওঁক অপমান কৰিবলৈ বিচাৰিলে কথাটো হাঁহি মাৰি উৰায় দিয়ে। নিৰ্বাচন সভাত বিচাৰ, সিদ্ধান্ত আৰু আদৰ্শৰ প্ৰতি কথা কৈ থাকে, কিন্তু ব্যক্তিগত ৰূপত কাকো একো নকয়। বাস্তৱত অটলজীয়ে পাপক ঘৃণা কৰে, পাপীক নহয়।

লোকসভাৰ শীতকালীন অধিবেশন এদিন পাছতে আৰম্ভ হ'ব। সেইবাবে আগদিনা তাৰে প্ৰস্তুতিৰ বাবে ব্যস্ততাত গুচি গ'ল। তাৰ মাজতে জাপানৰ পূৰ্ব-প্ৰধানমন্ত্ৰী লগ পোৱাৰ বাবে আহিছে, অন্ধ্ৰপ্ৰদেশৰ মুখ্যমন্ত্ৰী কেইজনমান মন্ত্ৰীক লগতলৈ তেওঁক লগ পাবলৈ আহিছে আৰু তাৰ মাজতে সেইদিনা সন্ধ্যাত এক সাংস্কৃতিক কাৰ্যক্ৰমৰ উদঘাটন। সকলো কাম সমাধা

বুলি সম্বোধন কৰে তেওঁ ভাৰতৰ ৰাজনীতি ক্ষেত্ৰত যোৱা চাৰি দশক ধৰি বিৰাজমান। শ্ৰেষ্ঠ চিন্তক আৰু লোকপ্ৰিয় ৰাজনীতিক বাদে ও তেওঁ এজন সাহিত্যকাৰ, সমৰ্পিত কবি।

অটলজী ভাৰতীয় সংস্কৃতিৰ পোষক। ভাৰতীয় সংস্কৃতিৰ বিৰুদ্ধে যোৱা সকলক তেওঁ তৰ্কপূৰ্ণ জবাব দি দিয়ে। কিয়নো তেওঁ অধ্যয়নশীল। ইমান ব্যস্ততাৰ মাজতেই সময় উলিয়াই অধ্যয়ন কৰে নিজৰ ছন্দমুক্ত কবিতা ‘অমৰ আগ হে’ -ত তেওঁ বৰ্তমান সময়ৰ অপসংস্কৃতিৰ প্ৰতি চিহ্নিত হোৱা পৰিলক্ষিত হৈছে। ধৰ্ম্মক প্ৰকৃত অৰ্থত নজনা মানুহক তেওঁ ধৰ্ম্ম আৰু সম্প্ৰদায়ৰ পাৰ্থক্য বুজাবলৈ চেষ্টা কৰিছে।

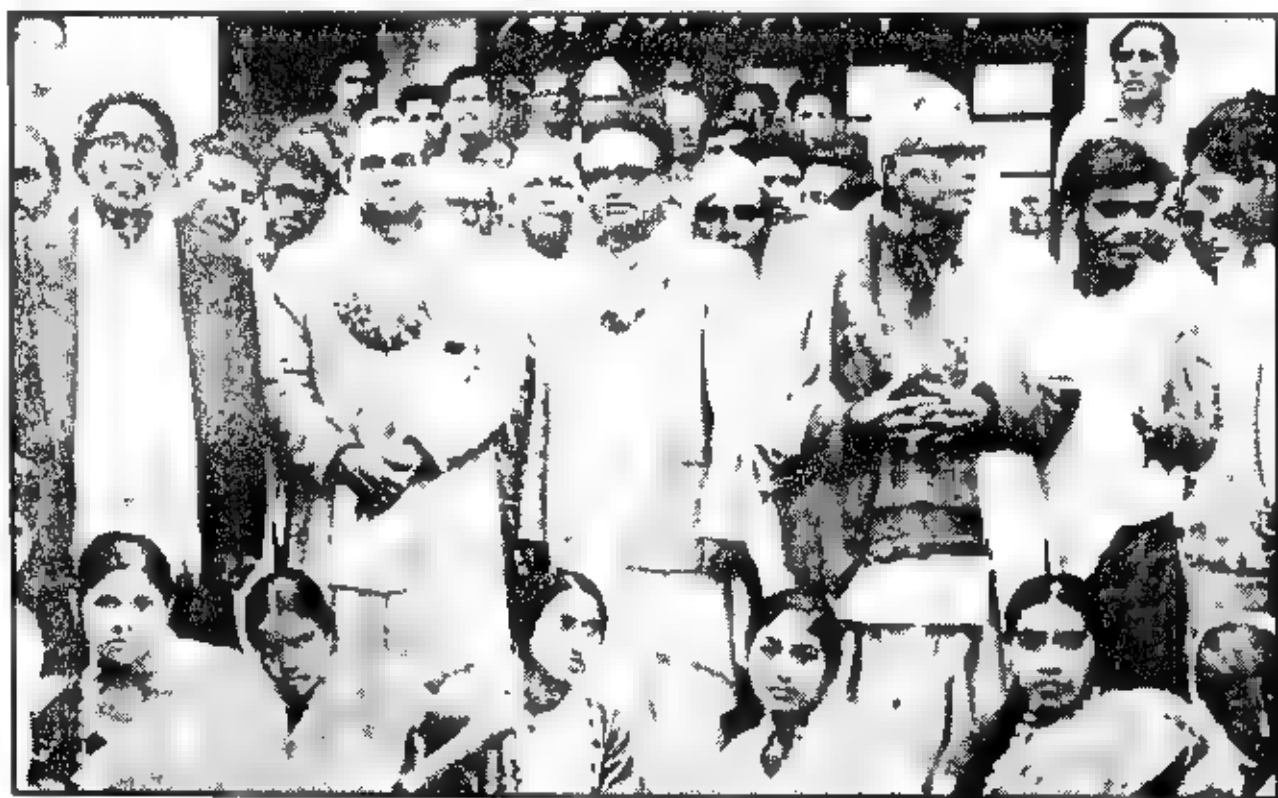
এনেকুৱা সৰ্বগুণ সম্পন্ন কবি ৰাজনৈতিক সশ্ৰদ্ধ প্ৰণাম শেষত তেওঁৰ মনৰ ভাৱ প্ৰকাশ কৰিবলৈ তেওঁৰ কবিতাৰ স্তবক এটা সংযোজন কৰি ইয়াতেই সামৰিলোঁ।

“মেৰে প্ৰভু!

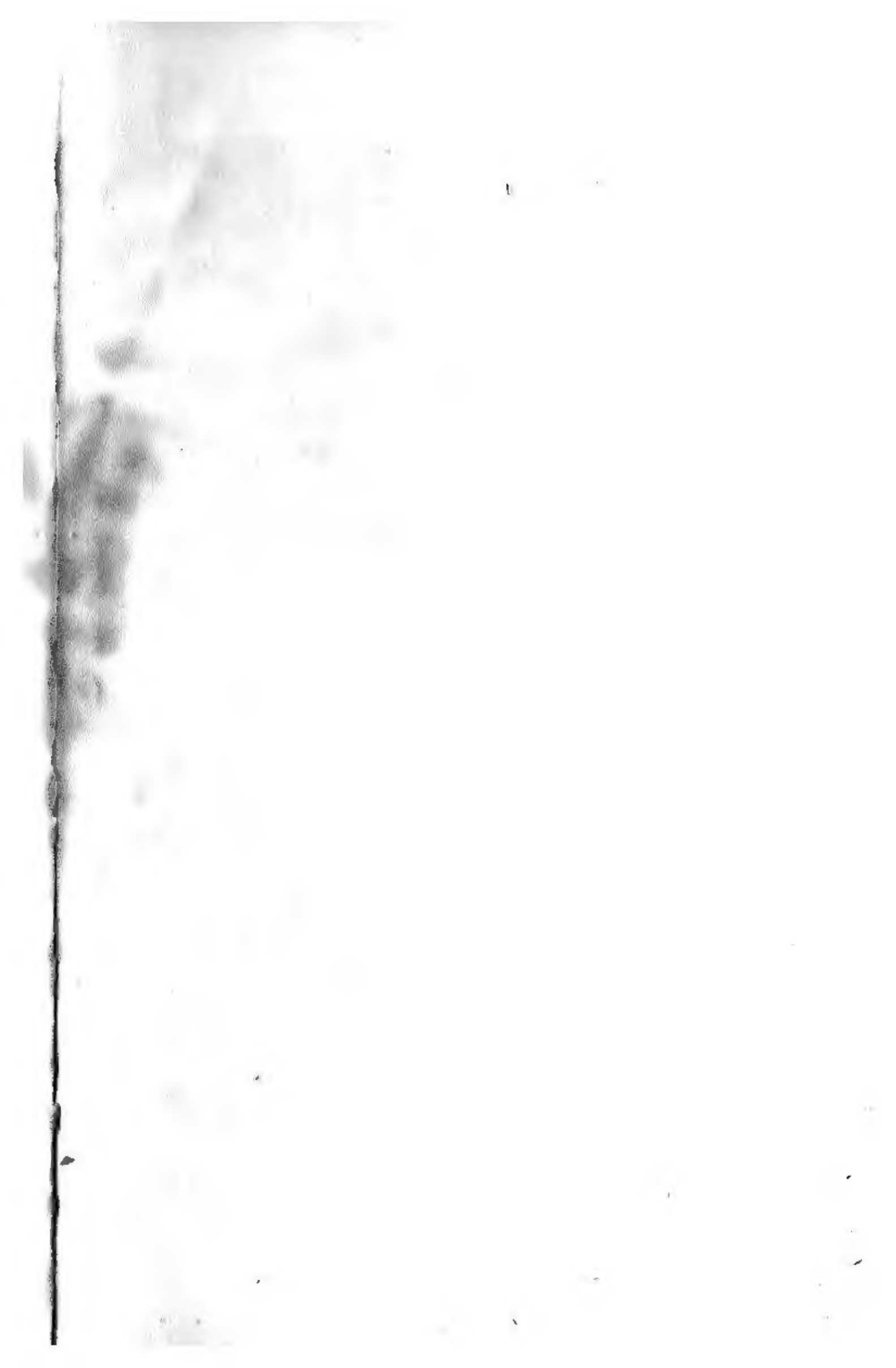
মুখে ইতনী উঁচাই কভী মত দেনা

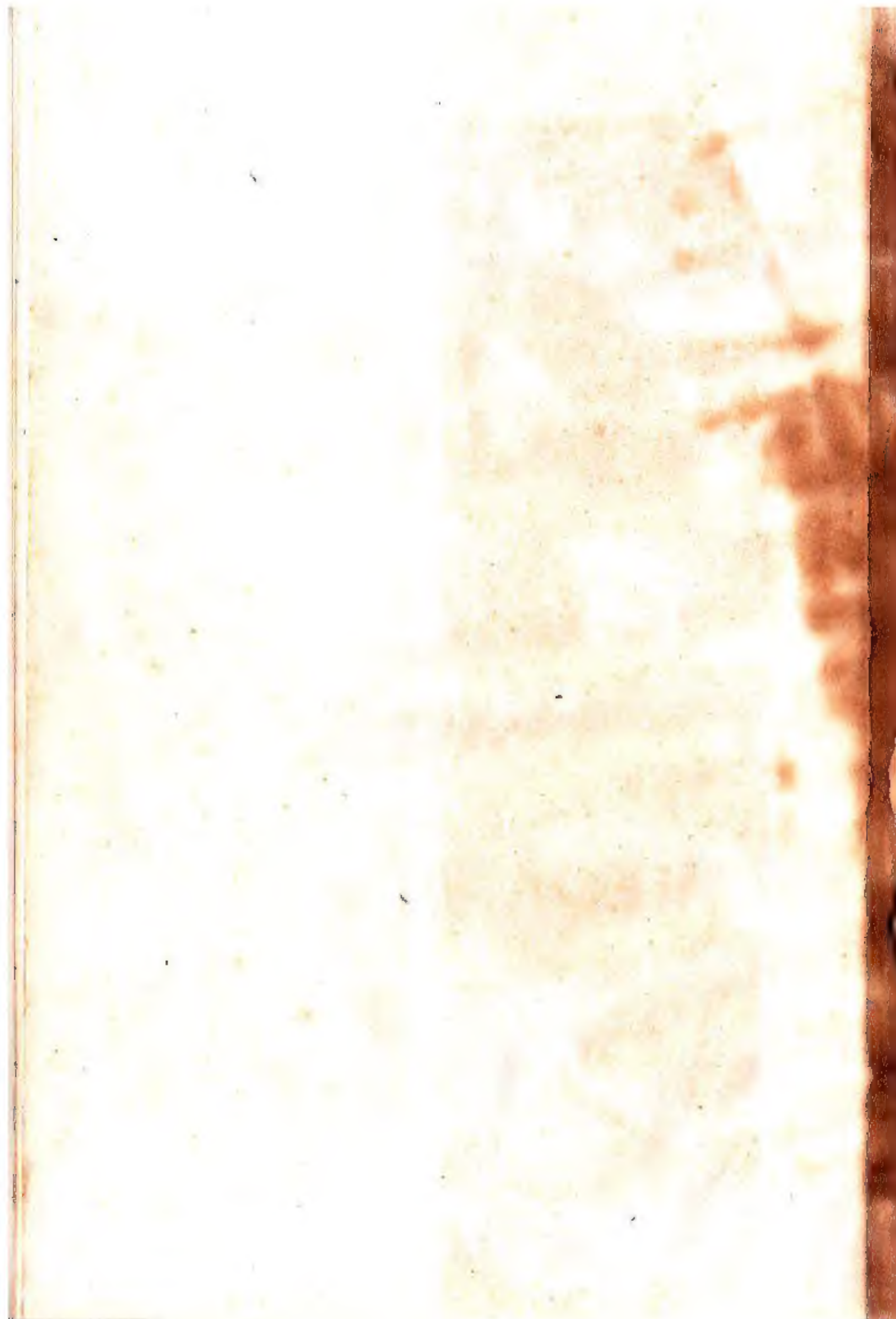
গেইৰো কো গলে ন লগা সৰু

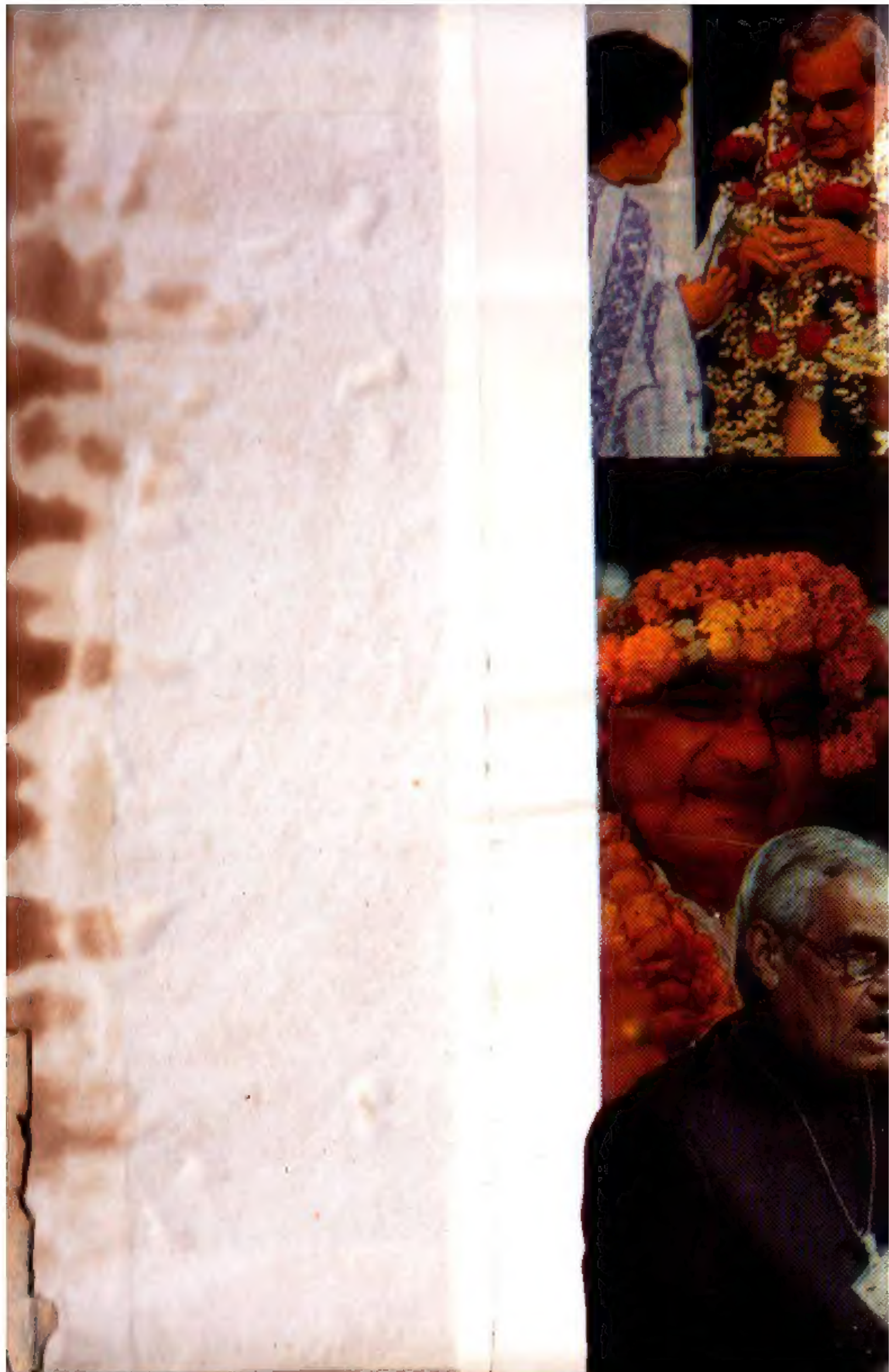
ইতনী কখাই কভী মত দেনা।”

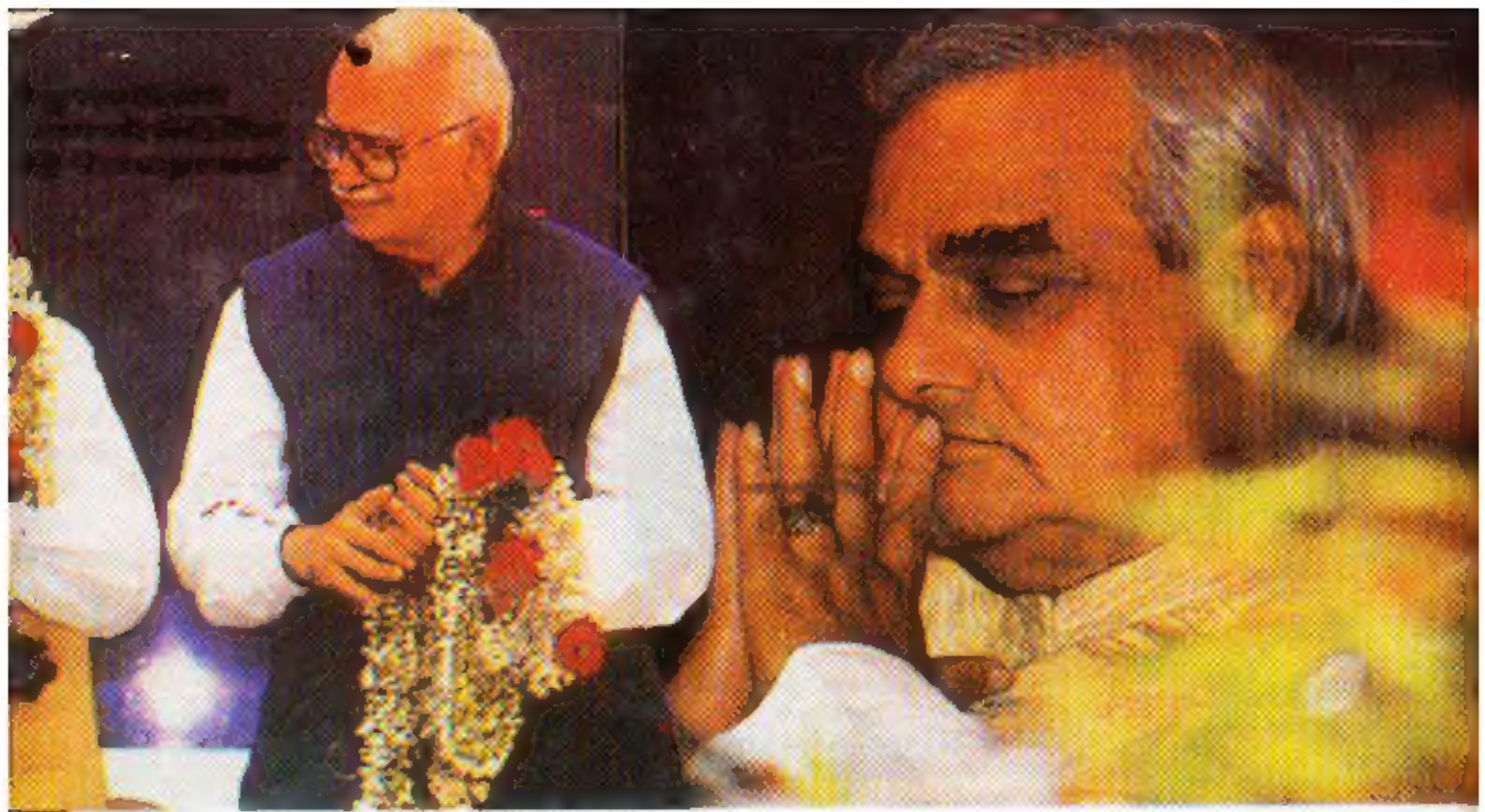


১৯৭৬ চন, শিলচৰৰ জিলা উপায়ুক্তৰ অফিচৰ অগত ৬ ঘাৰ দৰি তে বিষ্ণুপ্ৰিয়া মণিপুৰী সকলে এনখন ধৰ্ম্মঘট কৰিছিল। অটলজীয়ে কৰ্মকৰ্ত্তাৰ মাজত উপস্থিত থাকি এনেকুৱা এটা ক্ষুদ্ৰ কাণ্ডৰ বাবে ও সংবেদনা প্ৰকাশ কৰিছিল









“ভাৰত এখন মাটীৰ টুকুৰা নহয়, সদা জাগ্ৰত এখন শক্তিশালী ৰাষ্ট্ৰ।
ই বন্ধনাৰ ভূমি, অভিনন্দনৰ ভূমি। ইয়াৰ কঙ্কৰ কঙ্কৰত শঙ্কৰ বিৰাজ
মান, ইয়াৰ বিন্দু বিন্দুত পবিত্ৰ গগ্ৰাজল। আমি জীয়াই থাকিম ইয়াৰ
বাবেই, মৰিমো ইয়াটোৰ বাবেই।”

— অটল বিহাৰী বাজটপয়ীৰ বহু চৰ্চিত ভাষণৰ অংশ

